फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 72 संख्याः 287 प्रभात जयपुर, सोमवार 23 मई, 2022 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

I Have My Own Way To Be Remembered

Viewing mummies with their faces exposed: It resolved my uncertainty regarding how my corpse would be disposed off.

Guinness-Alert: World's Largest Scotch Egg

INSIGHTS: Of Premiums, Patience & Persistence

एक समय इन्हें ''एमेज़ॉन्स ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री'' कहा जाता था। ऐसी उग्र महिलाओं का एक गोपनीय ग्रुप सायैम (आज का थाइलैण्ड) के साम्राज्य में बेहद शक्तिशाली था। ये महिलाएं किंग ऑफ सायैम की बॉडी गार्ड्स थीं। सन् 1688 में, किराए के 600 यूरोपीय सैनिकों तथा ईसाई समुराई फौज के स्थान पर इस समूह ने कमान संभाली थी और इस समूह के सदस्यों की जिम्मेवारी थी, राजपरिवार तथा पैलेस ग्राउण्ड्स की सुरक्षा सुनिश्चित करना। द एन्सायक्लोपीडिया ऑफ एमेज़ॉन्स (वीरांगनाएं) की लेखक, जैसिका सामनसन इन्हें, सायैम की ''बैस्ट ट्रेन्ड फोर्स'' कहती हैं। ''क्रोम क्लोन'' नाम के इस समूह में 400 महिलाएं थीं। इन्हें, सौ-सौ गार्ड्स की चार बटालियन में बांटा गया था। बटालियन की कैप्टन भी महिला ही होती थी। कैप्टन बदलने का काम राजा चुलालोंगकोर्न स्वयं देखते थे। तेरह वर्ष की उम्र में, समूह में दाखिल होकर, 25 वर्ष की उम्र तक ये महिलाएं सेना में भर्ती हो जाती थीं। उसके बाद वो रॉयल गार्ड का हिस्सा बन जाती थीं। पैलेस में प्रवेश करने के बाद इन महिलाओं को ''सतीत्व'' का प्रण लेना होता था। इस शर्त से निकलने का कोई रास्ता नहीं था। अब अगर राजा का दिल किसी महिला गार्ड पर आ जाए, तो बात अलग थी। इस ग्रुप की हर सदस्य को खूबसूरत तथा बलवान होना ज़रुरी था। चयन के बाद ये अति उत्कृष्ट यूनिफॉर्म में राजमहल में घूमती नज़र आती थीं। घुटनों तक लंबी ऊँनी पोशाक, जिस पर सुनहरे धागे से कढ़ाई की हुई होती थी तथा सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ शिरस्त्राण इनका पहनावा था। राज्य समारोहों के समय हथियार के रुप में ये बरछा-बल्लम लेती थीं। अन्यथा, हर समय इनके हाथों में बंदूक होती थी, जिसे चलाने के लिए इन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया जाता था और इनके कौशल असाधारण होते थे। सप्ताह में दो बार इन्हें प्रशिक्षण दिया जाता था। राजा और उनका भाई महीने में एक बार व्यक्तिगत रुप से इस प्रशिक्षण सत्र का निरीक्षण करते थे। सायैम का राजा अपनी महिला बॉडीगार्ड्स के बिना कहीं नहीं जाता था। सभी वीरांगनाओं का एक ही लक्ष्य व कर्तव्य था - रक्षा। इसलिए, हर महिला गार्ड के लिए पांच महिलाएं नियुक्त की जाती थीं जो उनके घर का कामकाज संभालती थीं। किसी भी तरह की कोई और ड्यूटी नहीं होने के कारण ये वीरांगनाएं ''गार्ड व रक्षक'' के अपने कर्तव्य पर पूरा फोकस रखती थीं। उन्नीसवीं सदी में भर्ती होने वालों की संख्या कम होती गई इसलिए इस समूह को भंग कर दिया गया।

दक्षिण कोरिया को क्वाड में शामिल करने पर विचार नहीं कर रहा अमेरिका

दूसरी तरफ दक्षिण कोरिया क्वाड में शामिल होने के लिए जोरदार प्रयास में लगा हुआ है

- **यदि कोरिया क्वाड में शामिल होता है तो इससे भारत को नुकसान होने की आशंका जताई जा रही थी।**
- **गौरतलब है कि, 24 मई से क्वाड की मीटिंग शुरु हो रही है और प्रधानमंत्री मोदी इसमें शामिल होने के लिए जापान रवाना हो चुके हैं।**

वाशिंगटन, 22 मई (वार्ता)। अमेरिका, दक्षिण कोरिया को क्वाड सुरक्षा मंच में शामिल करने पर विचार नहीं कर रहा है, जिसे चीन का मुकाबला करने के लिए साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिका के एक वरिष्ठ अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।

अमेरिकी अधिकारी ने राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ सियोल में अपनी तीन दिवसीय यात्रा के दौरान यह टिप्पणी की, जिसके बाद मंगलवार को होने वाले चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) के शिखर सम्मेलन के लिए टोक्यो की यात्रा पर जाएंगे। क्वाड चार सदस्यीय साझेदारी है, जिसमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और भारत शामिल हैं।

जानकारी के अनुसार, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जेई इन ने अपने चुनाव अभियान के दौरान दक्षिण कोरिया और क्वाड के बीच सहयोग का धीरे-धीरे विस्तार करने के लिए क्वाड के विभिन्न कार्य समूहों जैसे जलवायु परिवर्तन और प्रौद्योगिकियों में भाग लेने का वादा किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका, आस्ट्रेलिया, भारत और जापान के चतुष्कोणीय गठजोड़ क्वॉड की बैठक के लिए जापान की यात्रा को मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के हिन्द प्रशांत क्षेत्र पर प्रभाव को लेकर विचार विमर्श का अवसर करार दिया है।

मोदी ने यात्रा के पूर्व अपने वक्तव्य में कहा, मैं जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा के आमंत्रण पर 23-24 मई, 2022 तक जापान की राजधानी टोक्यो का दौरा करूंगा।

उन्होंने कहा कि बीते मार्च में उन्हें 14वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए जापानी प्रधानमंत्री किशिदा की आवभगत का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह टोक्यो की अपनी यात्रा के दौरान, भारत-जापान विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से हमारे संवाद को आगे बढ़ाये जाने के लिए उत्सुक हैं।

मोदी ने कहा,जापान में, मैं सेकेंड इन-पर्सन क्वाड नेता सम्मेलन में भी भाग लूंगा, जो चार क्वाड देशों के नेताओं को क्वाड पहलों की प्रगति की समीक्षा करने का अवसर उपलब्ध कराएगा। हम हिंद-प्रशांत क्षेत्र के घटनाक्रमों तथा परस्पर हित के वैश्विक मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि वह अमेरिका के राष्ट्रपति जोसेफ बिडेन के साथ द्विपक्षीय बैठक करेंगे, जहां हम अमेरिका के साथ अपने विभिन्न पहलुओं वाले द्विपक्षीय संबंधों को और सुदृढ़ बनाने पर चर्चा करेंगे। हम क्षेत्रीय विकास और समसामयिक वैश्विक मुद्दों पर भी अपना संवाद जारी रखेंगे।

उन्होंने कहा, ऑस्ट्रेलिया के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज पहली बार क्वाड लीडर्स सम्मेलन में शामिल होंगे। मैं उनके साथ एक द्विपक्षीय बैठक करने के लिए उत्सुक हूं जिस दौरान व्यापक रणनीतिक साझेदारी के तहत भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बहुआयामी सहयोग तथा क्षेत्रीय और पारस्परिक हितों के वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

उन्होंने कहा कि भारत और जापान के बीच आर्थिक सहयोग हमारी विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा,मार्च शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री किशिदा और मैंने जापान से भारत में अगले पांच वर्षों में सार्वजनिक और निजी निवेश तथा वित्तपोषण में 5000 अरब जापानी येन प्राप्त करने के अपने इरादे की घोषणा की थी। आगामी यात्रा के दौरान, मैं इस लक्ष्य के अनुसरण में हमारे देशों के बीच आर्थिक संबंधों को और सुदृढ़ बनाने के ध्येय के साथ जापान के व्यापार जगत के शीर्ष व्यक्तियों के साथ मुलाकात करूंगा।

मोदी ने कहा कि जापान में भारतीय समुदाय के लगभग 40 हजार सदस्य हैं, जो जापान के साथ हमारे संबंधों में एक महत्वपूर्ण आधार हैं। वह उनके साथ बातचीत करने के लिए उत्सुक हैं।

सऊदी अरब में 25 भारतीय नागरिकों सहित कुल 35 लोगों को बंधक बनाया

राजस्थान निवासी एक भारतीय नागरिक की हालत गंभीर, भोजन पानी के लिए भी तरसे

- **कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा ने राष्ट्रपति सचिवालय में याचिका दायर कर जीवन बचाने की गुहार लगाई।**

बूंदी, 22 मई। सऊदी अरब के यंबू शहर में 25 भारतीय नागरिकों सहित कुल 35 लोगों को बंधक बनाने का मामला सामने आया है। इनमें से राजस्थान के टोंक जिले के निवासी सोहनलाल बैरवा की स्थिति गंभीर बनी हुयी है। सोहनलाल का पासपोर्ट नम्बर 5850453 है। बंधक बनाने के बाद सोहनलाल की तबियत बिगड़ गयी लेकिन निर्दयतापूर्वक कई दिनों तक सोहनलाल का इलाज नहीं करवाया गया। बहुत ज्यादा स्थिति बिगड़ने के बाद अब सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाकर भगवान भरोसे छोड़ दिया गया है। वह गंभीर स्थिति में सउदी अरब के यंबू के सरकारी चिकित्सालय में भर्ती है। जहां पर उसे समुचित इलाज और दवाइयां भी नहीं मिल पा रही है।

विदेश में संकटग्रस्त भारतीयों की सहायता के लिए कार्य करने वाले बूंदी राजस्थान के कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा ने राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के नाम राष्ट्रपति सचिवालय में याचिका दायर कर और विदेश मंत्रालय में विदेश मंत्री एस. जयशंकर के नाम अधिकृत शिकायत दर्ज करवाकर केन्द्र सरकार से सभी भारतीय नागरिकों की तत्काल शीघ्र सकुशल भारत वापसी करवाने और राजस्थान के निवासी बीमार सोहनलाल का जीवन बचाने की मांग की है। शर्मा ने 25 भारतीय नागरिकों के साथ बंधक नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान व श्रीलंका के निवासी 10 अन्य नागरिकों की भी इनके मूल देश से समन्वय करते हुये मानवीय आधार पर सहायता करने की मांग रखी है।

विदेश से सैकड़ों संकटग्रस्त भारतीयों सकुशल वापसी करवा चुके कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा ने रविवार को सर्किट हाउस में पत्रकारों से वार्ता में बताया कि सऊदी अरब की अलजहरानी कंपनी ने इन सभी लोगों के वीजा रिनुअल नहीं करवाया और सभी का सऊदी अरब में रहने का वैध दस्तावेज इकामा समाप्त करवा दिया। कंपनी ने षडयंत्र पूर्वक इस तरह से 25 भारतीयों सहित इन सभी 35 लोगों को सउदी अरब में अवैध नागरिक बना दिया। अवैध नागरिक होने के बाद इन सभी से पिछले दो वर्ष से अधिक समय से बंधुआ मजदूर बनाकर काम करवाया जा रहा था। कुछ दिनों पहले इन्होंने वीजा रिनुअल करवाकर इकामा बनवाने व परिवार के पास स्वदेश भेजने की मांग रखी तो कंपनी ने इन सभी 35 लोगो को जबरन बंधक बना लिया। भारतीय नागरिकों में राजस्थान, बिहार,दिल्ली, उत्तरप्रदेश सहित कई प्रदेशों के रहने वाले शमशेर, रामप्रवेश, श्यामलाल, इमरान आदि शामिल हैं। कंपनी ने अभी भी इन सभी को बाहर कुछ भी बताने पर धमकी दे रखी है। जिससे कई लोग डरे हुये हैं।

बंधक बनाए गये लोगों में से राजस्थान के जयपुर जिले के निवासी एक श्रमिक सरफ़ुद्दीन ने पूर्व में सउदी अरब में बंधक बनाये गये और भारत लौट चुके राजस्थान के भरतपुर के श्रमिक विश्राम जाटव और बूंदी जिले के नैनवा निवासी अब्दुल गफ्फार को अपनी पीड़ा बतायी। जिसके बाद विश्राम जाटव व गफ्फार ने विदेश में संकटग्रस्त भारतीयों की सहायता के लिए कार्य करने वाले बूंदी के कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा को सारे घटनाक्रम से अवगत करवाया।

मुफ्त एनिमल एम्बुलैंस सर्विस

मेरठ, 22 मई (वार्ता)। पशुपालन डेयरी और मत्स्य पालन राज्य मंत्री संजीव कुमार बालियान ने रविवार को कहा कि किसानों के पशुओं को घर दरवाजे पर मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से देश भर में अगले माह से एंबुलेंस सुविधा शुरू की जाएगी।

बालियान ने हरित प्रदेश दुग्ध उत्पादक कंपनी का उद्घाटन करने के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पूरे देश में 4500 एंबुलेंस के माध्यम से यह सेवा शुरु की जाएगी। एंबुलेंस में एक चिकित्सक , एक फार्मासिस्ट और एक चालक होंगे। इस सेवा के माध्यम से पशुओं को किसानों के घर दरवाजे पर उपचार किया जाएगा और उसकी निगरानी भी की जाएगी।

- **केन्द्रीय मंत्री संजीव बलियान ने बताया कि, अगले माह से देश में पशुओं के लिये मुफ्त एंबलेंस सेवा शुरु की जायेगी।**

बालियान ने बताया कि एंबुलेंस सेवा के लिए राज्यो को धन उपलब्ध करा दिया गया है। एक एंबुलेंस के लिए 16 लाख रुपए आवंटित किए गए हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'पैट्रोल-डीजल पर छोटी सी राहत देकर जनता को भ्रमित न करें मुख्यमंत्री'

केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत बोले, ''राजस्थान में अब भी देश में सबसे महंगा तेल''

- **'केंद्र सरकार पर दोषारोपण कर अपने कर्तव्य से मुक्त होना चाहते हैं मुख्यमंत्री'।**

जयपुर/जोधपुर, 22 मई (का.सं.)। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने एक बार फिर पैट्रोल-डीजल की कीमतों को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर निशाना साधा। शेखावत ने कहा कि राजस्थान ऐसा प्रदेश है, जिसमें देश में सबसे महंगा पेट्रोल-डीजल मिलता है, लेकिन राज्य के मुखिया अपने गिरेबां में झांककर देखने के बजाय भारत सरकार पर दोषारोपण करते हुए अपने कर्तव्य से मुक्त होना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि जनता मुख्यमंत्री की तरफ देख रही है। केवल छोटी सी राहत देकर जनता को भ्रमित करने के बजाय कुछ और अधिक बड़ा कर सकें, इस पर विचार करना चाहिए। रविवार को क्रीड़ा भारती जोधपुर प्रांत के कार्यक्रम से इतर मीडिया से बातचीत में शेखावत ने कहा कि बढ़ती महंगाई के प्रति प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में काम करने वाली सरकार संवेदनशील है। पूरा देश यह जानता है। लंबे समय से विश्व स्तर पर पैट्रोल-डीजल के दामों में वृद्धि हो रही थी, जिसका भार जनता के ऊपर बढ़ रहा था। एक बार फिर मोदी सरकार ने संवेदनशीलता का परिचय देते हुए बहुत बड़ी कटौती सेंट्रल टैक्सेज में कर जनता को राहत प्रदान की है। करीब 9.50 रुपए पैट्रोल, 7 रुपए डीजल और गैस में 200 रुपए सब्सिडी का प्रावधान किया है।

उन्होंने कहा कि मुझे ऐसा बताया गया है कि राज्य सरकार ने भी सुबह 2.48 रुपए पैट्रोल और 1.07 रुपए डीजल पर कटौती करने की अपनी तरफ से घोषणा की है। छोटा सा उन्होंने प्रयास किया है, मैं उन्हें जनता की तरफ से धन्यवाद तो देता हूं, लेकिन यह अवश्य कहूंगा कि अभी भी राजस्थान के चारों तरफ जो प्रदेश हैं, उनमें यहां से सस्ती दर पर पैट्रोल-डीजल मिलता है। राजस्थान सरकार को एक बार फिर इस पर विचार करना चाहिए। शेखावत ने कहा कि जनता को राहत देने के लिए मैं प्रधानमंत्री का अभिनंदन करता हूं।

80 लाख रुपए के डोडा-पोस्त से भरा लावारिस ट्रक पकड़ा

नागौर, (निसं)। सदर थाना पुलिस ने एन.एच.-89 पर गोगेलाव सरहद में रविवार को एक होटल पर लावारिस खडे नमक के कट्टों से भरे ट्रक में 80 लाख रुपए का अवैध डोडा पोस्त जब्त किया है। ट्रक में नमक के कट्टों के नीचे 2508 किलो अवैध डोडा-पोस्त छिपाकर भरा हुआ था। पूरी कार्रवाई सदर थानाधिकारी रूपाराम के नेतृत्व में डी.एस.टी. और सदर पुलिस टीम ने मिलकर गुप्त मुखबरी के आधार पर अंजाम दी। फिलहाल पुलिस ट्रक मालिक की तलाश

- **होटल पर खड़े ट्रक में नमक के कट्टों के नीचे छिपा हुआ था डोडा-पोस्त।**

कर रही है। वहीं ट्रक व माल को जब्त कर मामले की जांच भी शुरू कर दी गई है। नागौर सी.ओ. विनोद कुमार सीपा ने बताया कि रविवार देर रात को सदर पुलिस गश्त पर थी। इस दौरान गुप्त जानकारी के आधार पर सदर थानाधिकारी रूपाराम के नेतृत्व में डी.एस.टी. और सदर पुलिस टीम ने गोगेलाव सरहद में होटल वीर तेजा के बाहर लावारिस खड़े एक ट्रक की तलाशी ली। तलाशी में पुलिस टीम को ट्रक में कुल 325 नमक के कट्टे मिले। जब इन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दलित युवक की हत्या कर शव सड़क पर फैंका

बीकानेर, 22 मई (नि.सं.)। जिले के श्रीडूंगरगढ़ में एक दलित युवक की बेरहमी से हत्या का मामला सामने आया है। पुलिस को शक है कि युवक को

- **बीच सड़क पर पड़ी थी लाश, लाश पर चोट के कई निशान भी मिले।**
- **मौके पर पहुंची एफएसएल टीम ने महत्वपूर्ण सुराग जुटाये।**

मारकर सड़क पर फेंक दिया गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस सक्रिय हुई। मौके पर पहुंची एफ.एस.एल. टीम ने भी कई महत्वपूर्ण सुराग जुटाने का प्रयास किया है। लाश पर चोट के कई निशान भी मिले हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लेबर पार्टी के नेता एंथनी अल्बनीज ऑस्ट्रेलिया के नये प्रधानमंत्री होंगे

ऑस्ट्रेलिया में 2007 के बाद से लेबर पार्टी ने पहली चुनावी जीत हासिल की है

मेलबॉर्न, 22 मई। ऑस्ट्रेलिया के चुनावों में लेबर पार्टी के नेता एंथनी अल्बनीज ने जीत हासिल की है और वह अब ऑस्ट्रेलिया के नए पी.एम. होंगे। इस मौके पर पी.एम. मोदी ने उनको बधाई दी है। पी.एम. मोदी ने ट्वीट कर कहा, एंथनी अल्बनीज को ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी की जीत और प्रधानमंत्री के रूप में उनके चुनाव के लिए बधाई। मैं अपनी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा प्राथमिकताओं के लिए आपके साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं।

2007 के बाद से अल्बनीज की पार्टी ने पहली चुनावी जीत हासिल की साल 2007 के बाद से अल्बनीज की पार्टी ने पहली चुनावी जीत हासिल की है। वह जल्द ही पीएम पद की शपथ लेंगे। इस चुनाव में ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन हार गए हैं। चुनाव नतीजों के सामने आने के बाद मॉरिसन ने कहा कि वे अपनी पार्टी की हार की जिम्मेदारी लेते हैं और वह लिबरल पार्टी के नेता के रूप में इस्तीफा देंगे। मॉरिसन ने ये भी कहा कि उन्हें अपनी पार्टी और देश का नेतृत्व करने का मौका मिला, इसके लिए

- **प्रधानमंत्री मोदी ने नये प्रधानमंत्री को जीत की बधाई दी।**
- **स्कॉट मॉरीसन अगले एक या दो दिन में प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देंगे।**

वह सभी को धन्यवाद देते हैं। मैं पार्टी की अगली बैठक में अपना इस्तीफा दे दूंगा।

ऑस्ट्रेलिया में प्रधानमंत्री पद की रेस में 6 लोग उतरे थे। लेकिन मुख्य मुकाबला मॉरिसन और अल्बनीज के बीच ही था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी के नेता एंथनी अल्बनीज को उनकी पार्टी की चुनावी जीत पर बधाई दी।

मोदी ने ट्वीट कर कहा, ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी की जीत और प्रधानमंत्री के रूप में आपके चुनाव जीतने के लिए अल्बनीज बधाई। मैं हमारी समग्र रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा प्राथमिकताओं पर आपके साथ काम करने को लेकर आशान्वित हूं। ऑस्ट्रेलिया के नए प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने कहा कि वह जलवायु नीति में बड़े बदलाव के साथ देश को एक नई दिशा में ले जाएंगे।

उन्होंने कहा कि वह ऑस्ट्रेलिया को अक्षय ऊर्जा महाशक्ति बनाना चाहते हैं। अल्बनीज़ को सोमवार को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेनी है, लेकिन यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि उनकी पार्टी के पास संसद में अपेक्षित बहुमत होगा या नहीं।

पिछले कुछ वर्षों में कई प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए, इस चुनाव में जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख विषय था। मतगणना अभी भी जारी है, और यह स्पष्ट नहीं है कि संसद के 151 सदस्यीय निचले सदन में बहुमत हासिल करने के लिए लेबर पार्टी को 76 सीटें मिल सकती हैं या नहीं। अंतिम परिणाम आने में अभी समय लग सकता है, क्योंकि चुनाव अधिकारियों ने अभी करीब 30 लाख डाक मतों की गिनती शुरू की है।

विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

बदलावों के प्रति स्वस्थ और सकारात्मक नज़रिया अपनाने की ज़रूरत!

कल एक पुरानी फ़िल्म देख रहा था। एक दृश्य था जिसमें नायिका की छोटी बहन उस वक़्त चलन में रहे स्पूल वाले बड़े टेपरिकॉर्डर पर कोई गाना सुन रही थी। जिन्हें नहीं पता उन्हें बताता चलूं कि एक ज़माना था जब टेपरिकॉर्डर लगभग सूटकेस के आकार के हुआ करते थे। महंगे तो होते ही थे। गिने-चुने लोग ही इस विलासिता को अफोर्ड कर सकते थे। इस तरह के टेपरिकॉर्डर्स के भी पहले वे ठाामोफ़ोन चलन में थे जिनमें हेण्डल घुमा कर चाबी भरनी पड़ती थी। दो तरह के होते थे ये ग्रामोफ़ोन। एक तो अटैची की तरह के पोर्टेबल और दूसरे, ज़रा ज़्यादा भव्य लगने वाले, जिन्हें आप एचएमवी के लोगो में आज भी देख सकते हैं: एक कुत्ता एक भौंपू के सामने बैठा है। ये भव्य ग्रामोफ़ोन भोंपू वाले होते थे। हमारे देखते-देखते ये सब अब लुप्त हो गए हैं। नई पीढ़ी तो इनके बारे में जानती भी नहीं है। लेकिन जब मैं उस फ़िल्म में वह स्पूल वाला टेपरिकॉर्डर देख रहा था तो उसकी भव्यता मुझे सम्मोहित भी कर रही थी। भव्यता ग्रामोफ़ोन में थी, रिकॉर्डचेंजर में थी, स्पूल वाले टेपरिकॉर्डर में थी और भी बहुत सारी चीज़ों में थी। लेकिन अब वह सब अतीत है।

तकनीक ने इतनी तेज़ी से सब कुछ बदला है कि हम स्वयं चकित हैं। आज संगीत सुनना, और न केवल सुनना उसका ख़ज़ाना अपने पास रखना जैसे बच्चों का खेल हो गया है। आपके पास अगर ठीक-ठाक-सा मोबाइल हो तो उसमें आप इतना संगीत सहेज सकते हैं कि उसे सुनने के लिए एक उम्र भी कम पड़े। उसे जहां और जब चाहे सुन सकते हैं। अगर सही ग़लत (पाइरेसी!) की फिक्र न करें तो यह सारा संगीत आपको नि:शुल्क सुलभ है। एक-एक गाने के लिए इधर-उधर भटकना जैसे पिछले जन्मों की बात हो गई है। अब तो तकनीक की इस मेहरबानी से आपको सब कुछ, करीब-करीब पलक झपकते ही मिल जाता है।

और ऐसा ही अन्य बहुत सारी कलाओं और साहित्य के मामले में भी हुआ है। मुझ जैसे जिन लोगों को किताबें खरीदने और पढ़ने का जुनून है वे इस बात से दु:खी रहते थे कि जो पढ़ना है उसे प्राप्त कहां से करें, और कर लें तो घर में इतनी जगह कहां से निकालें कि उसे सहेज कर रख सकें। अब जैसे यह समस्या रही ही नहीं है। और अगर आप चाहें तो आपको पढ़ने की भी ज़हमत से निजात मिल सकती है। आप पढ़ने की बजाय सुन कर भी संतुष्ट हो सकते हैं। बहुत सारा साहित्य नि:शुल्क ही आपको सुलभ है और उसे सहेज कर रखना भी बहुत सुगम हो गया है। एक पॉकेट बुक के आकार वाले उपकरण (जैसे किण्डल) में आप हज़ारों किताबें सहेज कर रख सकते हैं। कितना रोमांचक लगता है एक भरा-पूरा पुस्तकालय अपने हाथ में लिये हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में, एक शहर से दूसरे शहर में, एक देश से दूसरे देश में आवागमन कर लेना।

हम हर बदलाव का अपने नज़रिये से आकलन करें, उसे परखें और उसके बाद ही उसे अस्वीकार या स्वीकार करें - यही औचित्य का तकाज़ा है। यह भी समझ लिया जाना चाहिए कि हर बदलाव हरेक के लिए एक समान अर्थ नहीं रखता है। इसलिए बदलाव के प्रति सामूहिक रुख का कोई अर्थ नहीं है।

आप दुनिया भर की फ़िल्में, वे फ़िल्में जिन्हें देखने के लिए आप बरसों बरस इंतज़ार करते थे, फ़िल्म सोसाइटियों के सदस्य बनते थे, अब आपकी पहुंच में हैं। अगर आपकी रुचि चित्रकला में है तो अपने कमरे में बैठे-बैठे दुनिया भर के संठाहालयों का भ्रमण कर सकते हैं और वह भी इस तरह कि आपको महसूस ही न हो कि आप सशरीर वहां मौज़ूद नहीं हैं।

जो बदलाव आस्वाद में आया है वही सृजन में भी आया है। अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाएं। आप पाएंगे, अब लिखना पहले से ज़्यादा आसान हो गया है। यहां तक कि बिना लिखे भी लिख सकते हैं। मेरा आशय बोलकर लिखने की नई प्रविधि से है। आप अपने लिखे को सहेज सकते हैं, उसमें मनचाहा बदलाव कर सकते हैं। कर पहले भी सकते थे, बल्कि करते थे लेकिन यह सुगमता नहीं थी। आप बिना लम्बे-चौड़े तामझाम के फोटोग्राफी कर सकते हैं। मात्र एक उपकरण से आप ऐसा संगीत रच सकते हैं जिसे सुनते हुए एक बड़े ऑर्केस्ट्रा को सुनने का सुख मिले। बिना रंगों और कैनवस के आप तस्वीरें बना सकते हैं। डिजिटल कण्टेण्ट का सर्जक बनने से हम पहले से कई गुना ज़्यादा समर्थ और सक्षम हो गए हैं।

सब कुछ बदल गया और बहुत तेज़ी से बदलता जा रहा है। सुलभता बढ़ती जा रही है, उसकी गुणवत्ता बढ़ती जा रही है। ये बातें स्वागत योग्य हैं। लेकिन जब मैं यह बात कह रहा हूं तो मन के किसी कोने से एक आवाज़ यह भी आ रही है कि प्रयत्न करके चीज़ों को प्राप्त करने पर जो सुख मिलता था वह इस सहज सुलभता ने हमसे छीन लिया है। चीज़ें इतनी आसानी से और इतनी विपुलता में हमारे सामने फैली पड़ी हैं कि वे जैसे हमें बेमानी लगने लगी हैं। जब आप किसी किताब के लिए लाइब्रेरी-दर-लाइब्रेरी भटकते थे और बहुत प्रयत्नों के बाद उसे अपने हाथों में पाते थे, तब जो सुख मिलता था वह सुख किसी किताब को तुरंत डाउनलोड कर लेने पर कहां मिलता है? जो सुख कई जगह तलाश कर लेने के बाद किसी छोटी-सी दुकान पर अपना मनचाहा गाना मिल जाने और फिर उसे अपनी कैसेट में रिकॉर्ड करवा कर सुनने पर मिलता था वह सुख अब जैसे कहीं विलुप्त हो गया है। यही बात अन्य कलाओं के बारे में भी है। हमारे पास है बहुत कुछ लेकिन उसमें वह रस, वह आनंद नहीं है। लेकिन ये सब बातें मेरी पीढ़ी करती है। नई पीढ़ी तो इस तरह नहीं सोचती है। उसका यथार्थ तो यही सब है और वह इससे संतुष्ट है।

लेकिन यह सब मैं क्यों कह रहा हूं? हम जहां तक चले आए हैं, क्या वहां से पीछे लौट जाना सम्भव है? और क्या हमें लौटने के बारे में सोचना भी चाहिए? बहुत सारी पुरानी चीज़ों के प्रति अपने अनुराग के बावज़ूद मैं इस बारे में बहुत स्पष्ट हूं कि हम पीछे नहीं लौट सकते। हमें आगे ही बढ़ना होगा। और जब हम पीछे नहीं लौट सकते तो फिर हमें जो वर्तमान है और जो भविष्य में होने वाला है उसके प्रति एक तार्किक और स्वस्थ नज़रिया भी अपनाना होगा। इसी में हमारा हित है।

तकनीक हमारी ज़िंदगी को बहुत तेज़ी से बदल रही है और हम चाहें या न चाहें ये बदलाव तो आएंगे ही। बहुत मुमकिन है कि हममें से कुछ लोग एक चीज़ को अपनाएं और दूसरी को न अपनाएं। कोई आज भी हाथ से लिखना ही पसंद कर सकता है, कोई आज भी कागज़ पर छपी किताब को पढ़कर ही असली सुख महसूस कर सकता है, कोई आज भी फ़िल्म वाले कैमरे से ही फ़ोटोग्राफी कर सकता है। यह सब हमारे वैयक्तिक चयन की बातें हैं और इन पर कोई बहस या टिप्पणी करना बेमानी है। असल बात तो यह है कि हमें बदलावों के प्रति एक स्वस्थ और सकारात्मक नज़रिया अपनाना होगा। अति सबकी बुरी होती है। स्वीकार की भी और अस्वीकार की भी। एक स्वस्थ दृष्टि यह हो सकती है कि हम नए के प्रति खुला और उदार नज़रिया रखें और उससे हमारा जो हित हो रहा है उसे मुक्त मन से स्वीकार करें, और ऐसा करते हुए उन बातों पर भी ध्यान दें जो उस नए के कारण हो रही हैं और जिन्हें नहीं होना चाहिए था। बहुत बार नए और पुराने के बीच संतुलन और तालमेल से भी बात बन जाती है। आप मुद्रित किताब भी पढ़ सकते हैं और यथावश्यकता उसके डिजिटल संस्करण का भी उपयोग कर सकते हैं। आप किसी रंगशाला या चित्र वीथी में भी जा सकते हैं और छोटे या बड़े पर्दे पर भी उनका आनंद ले सकते हैं। मुझे हमेशा लगता है कि जीवन का असल आनंद संतुलन में ही है। अति से बात बनती नहीं है। हो सकता है किन्हीं खास क्षणों में हम अतिवादी रुख अख़्तियार कर लें, यह भी हो सकता है कि वह रुख हमें तात्कालिक रूप से जीत दिला दे, हमें सर उठाने का मौका दे दे, हमें त्वरित संतोष प्रदान कर दे, हमेशा ऐसा ही हो यह क़तई ज़रूरी नहीं है।

जीवन में जो बदलाव आ रहे हैं, उन सबके प्रति नकार का भाव उतना ही अनुचित है जितना उन सबके प्रति आंख मूंद कर स्वीकार का भाव है। ये दोनों भाव अतिवादी हैं और इनसे बच कर चलने में ही हमारा हित छिपा हुआ है। हम हर बदलाव का अपने नज़रिये से आकलन करें, उसे परखें और उसके बाद ही उसे अस्वीकार या स्वीकार करें - यही औचित्य का तकाज़ा है। यह भी समझ लिया जाना चाहिए कि हर बदलाव हरेक के लिए एक समान अर्थ नहीं रखता है। किसी के लिए वह बहुत अच्छा हो सकता है और किसी अन्य के लिए वैसा नहीं भी हो सकता है। इसलिए बदलाव के प्रति सामूहिक रुख का कोई अर्थ नहीं है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राजस्थान के लोक-चित्र- एक सशक्त और समृद्ध परंपरा

कला जब लोकतान्त्रिक रूप से सभी की हो जाती है तो लोक जीवन की या लोक कलाएं हो जाती है। अन्य लोक कलाओं की तरह लोक चित्र भी मानवीय संवेदनाओं और भावों का प्रदर्शन ही तो होते हैं।

लोक कलाएं ही तो है, चाहे लोक-चित्र ही क्यों न हो, इनमें ही तो संस्कृति और संस्कारों की जड़े फैली होती है और लोक-जीवन को प्राणवायु देती रहती हैं। राजस्थान की चित्रांकन-परम्परा में केवल रंग और कूंची का समागम ही नहीं है, बल्कि इनमें कला की अन्य विधाएं, चाहे गीत व नृत्य हो, कहानियां हो, पर्यावरण हो, पशु पक्षी हो, लोकाचार, लोक-संस्कार, धर्म-अध्यात्म, ग्रह-नक्षत्र और हमारी जीवन शैली हो, वह भी इन लोक चित्रों में शामिल है।

अन्य क्षेत्रों की भांति, राजस्थान के लोक चित्रों में भी धार्मिक अनुष्ठान, संस्कृतिक समन्वय, आर्टिस्टिक इनोसेंस और विशिष्ट शैली या परपोसन का समावेश देखा जा सकता है। लोक चित्रांकन-परम्परा में कोई ज्यादा तामझाम वाले उपकरणों की या टूल्स की जरूरत नहीं पड़ती और यही लोक चित्रों की या लोक कलाओं की खूबसूरती होती है। आमतौर पर किसी क्षेत्र विशेष के लोक चित्र बनाने हेतु आस-पास पाए जाने वाले पेड़-पौधों की टहनियां, नेचुरल फाइबर, मिट्टियां और गोंद काम में आती है। फड चित्रों या पिछवाई में लोकल पिगमेंट्स जैसे हिर्मिच, हिंगलू, पेवडी बहुत काम में आते हैं, तो मांडना के लिए गाय का गोबर, खड़िया मिट्टी, हल्दी आदि का उपयोग होता है तो अभिप्राय यह है कि भाव को प्रकट करने के लिए लोक कलाकार या यूं कहें लोक चित्रकार कभी भी संसाधनों का मोहताज नहीं रहा। राजस्थान के संदर्भ में तो लोक चित्रों के नाना प्रकार होते हैं और किसी भी चित्र के तीन एलिमेंट्स होते है, सपोर्ट - यानि किस सतह पर वह चित्र बना है जैसे कपड़ा, कागज, भित्ति और लकड़ी।

इसी तरह से माध्यम जैसे रंग जिसमे गेरू, खड़िया, नील, हिर्मिच, पेवडी आदि प्रमुख है, वैसे तकनीक तो आमतौर पर एक जैसी ही होती है बस थोडा फीचर और नयन नक्श में बदलाव होता है। यह कलाकार की परंपरा और कभी -कभी व्यक्तिगत शैली पर भी निर्भर करती है, जैसे फड या पिछवई कपडे पर बनाये जाते है, पाने कागज पर और कावड लकड़ी पर।

राजस्थानी लोक चित्रों पर पर लिखना अथाह और असीमित है । उदयपुर के पास में गांव है बस्सी और जिसमें लकड़ी के खिलौने, पोर्टेबल टेम्पल आदि का विषय देवी-देवताओं का जीवन चरित्र व पौराणिक घटनाएं और महापुरुषों की जीवन गाथा हो सकती है और आज के दौर में तो कंटेंपरेरी विषयों पर भी चित्र बनाए जा रहे हैं। कावड बनाने वाले कारीगर, सुथार या जांगिड ब्राह्मण होते है और जो कावड भी बनाते है और चित्र भी। जंगलों में पाए जाने वाली कवेलू के महीन टुकडो को पीसकर गोंद के साथ मिलकर कावड पर लगाया जाता है और इस प्रक्रिया को इन्टाला कहा जाता है फिर लाल पत्थर घिस कर उसको रंगा जाता है। कावड पढने वाले कावड़िया भाट और जो जजमान आमंत्रित करते थे, वे कावड खुलवाने वाले कहलाते थे।

भारतीय लोक चित्र परंपरा में कावड भी एक तरह की विजुअल एड ही है और पुराने दौर में नीतिगत व मानवीय मूल्यों को धर्म व अध्यात्म के माध्यम से समझाने का सार्थक व लोकतांत्रिक तरीका रहा है। जब कावड के सभी पट पूरी तरह से खुल जाते हैं तो बीच में तीन मूर्तियां रहती है जो आमतौर पर रामचंद्र जी की, सीता जी की और लक्ष्मण जी की होती है । अब इन दिनों अलग-अलग विषयों पर कावड बन रही है। स्टोरी टेलिंग में या सूचनाओं के संप्रेषण में कावड सरीखे विजुअल ऐड्स महत्वपूर्ण होते थे और लोगों में नव भाव पैदा कर देते थे। राजस्थान में लकड़ी

अब्दुल लतीफ़ उस्ता

माध्यम पर कावड के अलावा देवल, तोरण, खांडे, बाजोट, चोपड़ा, माणकथंभ, आलिये व गंजीफे आदि बनते थे। कपडे पर भी फड और पिछवाई लोक चित्र बनते हैं। शाहपुरा, भीलवाड़ा का जोशी परिवार फड बनाने की कला में बहुत माहिर रहा है और वास्तव में इनको बनाने का मकसद वही होता है जो कावड का होता है। फड स्क्रॉल की तरह होता है जिस पर अलग-अलग लोक देवताओं के जीवन की घटनाओं पर चित्र बनाए जाते रहे हैं। राजस्थान में फड बनाने की बड़ी सशक्त परंपरा रही है और चित्रित लोक देवताओं का भी बहुत मान और महत्व रहा है।

पाबू, हडबू, रामदेव, मांगलिया मेह। पांचू पीर पधारजो गोगाजी जेह

लोक देवताओं ने सामाजिक मूल्यों के लिए, सामाजिक समरसता के लिए और समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए अपने जीवन को न्योछावर किया, तो उन्हीं की सुकीर्ति है जिसको बताने के लिए फड़े बनती रही हैं। सबसे रोचक बात यह है कि फड बांचना अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसे लयबद्ध व संगीतमय तरीके से बाँचा जाता है ताकि आमजन के लिए रुचिकर व ग्राह्य हो सके। फड बांचने वाले को भोपा और भोपन कहा जाता है। देवनारायण जी, रामदेव जी, पाबूजी की फड़े महत्वपूर्ण है, लेकिन आजकल कंटेंपरेरी मुद्दों जैसे बेटी बचाओ दहेज विरोधी अभियान जैसे मुद्दों पर भी फडे

- **लोक कला का संरक्षण कला के सापेक्ष में व रोजगार के अवसरों को पैदा करने में भी महत्वपूर्ण रहेगा**

बनती व बांचती देखी जा सकती है।

लोक कलाओं की एक खूबी भी यह रहती है कि वह स्वयं को मूल में रखते हुए नए एलिमेंट्स को अपने में मिला लेती है। कपड़े पर अन्य लोक चित्र बनते हैं उनमें पिछवाईयाँ प्रमुख है। पिछवई का सम्बन्ध प्रसिद्ध श्रीनाथजी मंदिर से है। पिछवाई भी कपड़े पर बनती है और फड भी कपड़े पर बनी है तो फिर उनमें अंतर क्या रहा? पिछवाई को नरेट नहीं किया जाता, आम तौर पर इसमें कंपार्टमेंटाइजेशन भी नहीं होता जैसा कि फड में होता है।मांडने दीवारों पर बनाए जाने वाले चित्र है जिसमे दीवार पर मिट्टी और गाय के गोबर से लेप किया जाता है और फिर अलग-अलग पैटर्न में हल्दी, हिंग्लू जैसे रंगों से अलग-अलग अवसरों के लिए मांडने बनाए जाते हैं। जैसे पगल्या - दीपावली के समय लक्ष्मी पूजन से पूर्व देवी के घर में आगमन के रूप में, ताम-विवाह के समय लग्न मंडप में शुभ दाम्पत्य हेतु, चैकडी- होली के अवसर पर, थापा-घर की चौखट पर कुमकुम तथा हल्दी से बनाए गये हाथों के निशान होते हैं। इसी तरह से मोरडी माण्डणा-दक्षिणी तथा पूर्वी राजस्थान में मीणा जनजाति की महिलाओं द्वारा घरों में बनाई गई मोर की आकृति मोरडी माण्डणा कहलाती है। स्वास्तिक /सातिया/सांखिया- उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान में सांखिया, तथा पूर्वी राजस्थान में सातिया कहलाता है।मांगलिक अवसरों पर ब्राहाणों के द्वारा मन्त्रोचार से पूर्व पूजा के स्थान पर स्वास्तिक का अंकन किया जाता है। मांडणा बनाए जाने के दौरान महिलाएं सुंदर आवाज में गीत भी गाती हैं। लोक चित्र को अन्य माध्यमों पर उकेरने के अलावा मानव ने खुद की देह पर भी चित्रांकन किया है, जिनमे मेहंदी और गोदना प्रमुख है। अलग -अलग अवसरों पर मेहंदी लगाना राजस्थान की प्राचीन लोक कला रही है जो समृद्धि और जीवन का प्रतीक है।

रहीमजी ने लिखा भी है

यों रहीम सुख होत है, पर उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग॥

इसी तरह ख्यातनाम साहित्यकार सौभाग्य सिंह शेखावत जी के शब्दों में

रच दे मेहँदी राचनि, नाचन रनमुख नाह।
जीता जंग बधावस्या, कटिया तन संग दाह॥

मेहँदी के अलावा देह सिंगार की गोदना परम्परा आज दुनिया के कोने-कोने में इस कदर पहुंच गई है कि इसका अनुभव करने के लिए कई पर्यटक राजस्थान खींचे चले आते हैं। कुछ लोकप्रिय गोदना डिज़ाइनों में चेहरे पर वृत्त और अर्धचंद्राकार, डॉट पैटर्न, बिच्छू, तोते, फूल और बाँहों पर देवी-देवताओं की छवियां शामिल हैं।बछड़ों पर और महिलाओं की छाती के बीच फूलों की एक विशाल विविधता, शाश्वत जीवन के पेड़ या कल्प वृक्ष और ऊंट, घोड़े, मोर और मगरमच्छ की एक जोड़ी जैसे जानवरों के भी गोदना बनाये जाते है। राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र की महिलाएं अपने प्रेम और भक्ति के प्रतीक के रूप में अपने पति के नाम के गोदना बनवाती हैं। सार रूप में, राजस्थान की लोक चित्रांकन परम्परा अपने आप में निस्संदेह अनूठी है और इस विधा का संरक्षण न केवल कला के सापेक्ष हितकारी है बल्कि रोजगारपरक अवसरों को पैदा करने में भी महत्वपूर्ण रहेगा।

अब्दुल लतीफ़ उस्ता,
कला एवं विरासत अध्येता

मिनी सचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय में फैली गन्दगी

सादुलपुर, (निसं)। मिनीसचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय की साफ-सफाई नहीं होने के कारण जहां मिनीसचिवालय में आने वाले लोग परेशान हैं, वहीं दुसरी ओर प्रलेख लेखक, अधिवक्तागण व स्टाम्प वेंडरों को शौचालय में फैली गन्दगी में ही शौच जाने का मजबूर होना पड़ रहा है। गंभीर बात तो यह है कि इस शौचालय में शराब के खाली पव्वों को ढेर लगा हुआ है ।

इस परिसर में प्रशासनिक अधिकारियों व पुलिस अधिकारी तथा न्यायिक अधिकारियों के निवास करने के बाद भी बिना किसी डर व भय के लोग यहां पर शराब पीकर चले जाते हैं तथा शराब के खाली पव्वे शौचालय में फैंक कर इतिश्री करते हैं। यहां एसडीएम राजगढ, तहसीलदार राजगढ, एडिशनल एसपी एवं न्यायिक अधिकारियों सहित अन्य कार्मिकों के आवासीय भवन भी बने हुए हैं । हांलाकि इस शौचालय की

मिनीसचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय की साफ-सफाई नहीं होने से लगा गन्दगी व शराब के खाली पव्वों को ढेर ।

गंदगी के लिए गहरा होदनुमा गटर बना हुआ था। जिसकी ऊपर से छत गिरने के बाद उपखण्ड अधिकारी राजगढ़ द्वारा जीर्णोद्धार नहीं करवाने के बजाय गटर को मिटटी से भरवा दिया गया । जिससे अब शौचालय में ना तो पेशाब की निकासी हो पाती है और ना ही इस शौचालय की साफ-सफाई की पाती है। आज आमजन, अधिवक्तागण, स्टाम्प वेंडर एवं प्रलेख लेखकों को गन्दगी एवं खाली पव्वों से भरे शौचालय में ही शौच जाने को मजबूर होना पड़ रहा है।

- **यहां एसडीएम राजगढ, तहसीलदार राजगढ, एएसपी एवं न्यायिक अधिकारियों के आवास बने हुए हैं**
- **आमजन, प्रलेख लेखक, अधिवक्तागण व स्टाम्प वेंडरों को गन्दगी में ही शौच जाना पड़ रहा है**

लाखों रुपए की लागत से बना मसूदा का मुख्य बस स्टैंड बदहाल

मसूदा, (निसं)। मसूदा कस्बे में बने नए बस स्टैंड का रख रखाव नहीं होने एवं बसों का ठहराव बंद हो जाने से हाल बेहाल हो गया है। मसूदा कस्बे में यात्रियों की सुविधा एवं बसों के लिए पर्याप्त स्थान को लेकर रामगढ़ चौराहे पर नए बस स्टैंड का निर्माण कराया गया था ।

बस स्टैंड के निर्माण के बाद कुछ समय तक रोडवेज आगार द्वारा बुकिंग भी शुरू की जिससे सभी मार्गों पर आने-जाने का सिलसिला शुरू हो गया था। इससे यात्री भी बस स्टैंड पर जाकर बसों का इंतजार कर लेते थे लेकिन पिछले दो-तीन सालों से नए बस स्टैंड पर रोडवेज आगार की और से बुकिंग बंद कर दिए जाने के बाद बस स्टैंड का हाल बेहाल होना शुरू हो गया। इसके चलते नया बस स्टैंड

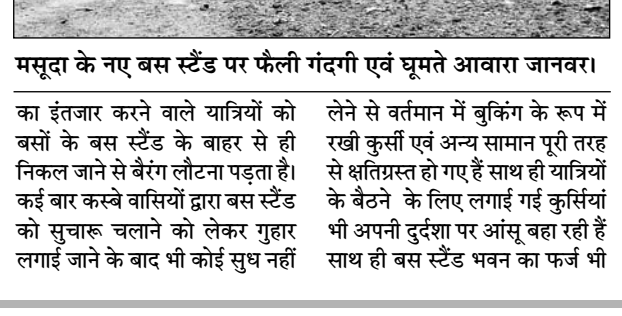

मसूदा के नए बस स्टैंड पर फैली गंदगी एवं घूमते आवारा जानवर।

का इंतजार करने वाले यात्रियों को बसों के बस स्टैंड के बाहर से ही निकल जाने से बैरंग लौटना पड़ता है। कई बार कस्बे वासियों द्वारा बस स्टैंड को सुचारू चलाने को लेकर गुहार लगाई जाने के बाद भी कोई सुध नहीं लेने से वर्तमान में बुकिंग के रूप में रखी कुर्सी एवं अन्य सामान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं साथ ही यात्रियों के बैठने के लिए लगाई गई कुर्सियां भी अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही हैं साथ ही बस स्टैंड भवन का फर्ज भी जगह-जगह से क्षतिग्रस्त हो रहा है। लाखों रुपए की लागत से बना नया बस स्टैंड अब लावारिस मवेशियों की शरणगाह व गंदगी फैलने के लिए कचरा पात्र बनकर रह गया है ।

जिला परिषद सदस्य दिनेश टाक ने जिला प्रमुख सुशील कंवर पलाड़ा को पत्र प्रेषित कर मुख्य बस स्टैंड को दुरुस्त कराने के लिए बजट आवंटन करने की मांग की। उन्होंने पत्र में बताया कि रामगढ़ बांदनवाड़ा रोड पर ग्राम पंचायत मसूदा द्वारा कई वर्ष पूर्व बस स्टैंड भवन का निर्माण कराया गया था लेकिन पिछले कुछ साल से बस स्टैंड का संचालन नहीं होने से बस स्टैंड की इमारत खंडर बन गई एवं परिसर में गंदगी के ढेर लग गए । यात्रियों के लिए बनाए गए सुविधा घर भी खंडित हो गए दीवारें क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

- **बुकिंग, बिजली पानी बंद, दरवाजे, कुर्सियां एवं टूटा फर्नीचर**
- **लावारिस मवेशियों व असमाजिक तत्वों की शरणागाह बना बस स्टैंड**
- **जिला परिषद सदस्य दिनेश टांक ने बस स्टैंड के लिए मांगा बजट**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 23 मई, 2022

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 10:22 तक, वैधृति योग रात्रि 1:05 तक, कौलव करण दिन 11:35 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज त्रिलोकनाथ अष्टमी, वैधृति पूण्य, पंचक है और शुक्र मेष राशि में रात्रि 8:27 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:21 तक, शुभ 9:02 से 10:42 तक, चर 2:04 से 3:45 तक, लाभ-अमृत 3:45 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:07

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह

परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता वातावरण बना रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में आपसी अनबन-वाद-विवाद बढ़ने का भय है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मकर

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वभाव पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

अधिक निष्कर्षण और उत्पादन ने वातावरण में असंतुलन पैदा किया है : मरीना तबस्सुम

जयपुर, (का.सं.)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स-राजस्थान चैप्टर द्वारा आयोजित राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल के तीसरे दिन की शुरूआत हेरिटेज वॉक से की गई। जिसमें 250 से अधिक डेलीगेट्स और मेहमानों ने चरण मंदिर से वॉटर चैनल और बावड़ी से नाहरगढ़ फोर्ट तक वॉक की। फेस्टिवल के तीसरे दिन 'हेरिटेज अंडर थ्रेट' विषय पर देश के जाने-माने आर्किटेक्ट्स ने अपने विचार व्यक्त किए। जिसमें हेरिटेज सिनर्जी इंडिया की कमालिका बोस, आर्किटेक्चरल हेरिटेज एडवाइजरी कमेटी के चेयरमैन, के.टी. रवींद्रन; एआरसीएशिया के प्रेसीडेंट, डॉ अबू सईद एम अहमद; आर्किटेक्ट-अर्बेनिस्ट-कंजर्वेशनिस्ट, कुलभूषण जैन और रविंद्र गुंडू राव एंड एसोसिएट्स के रविंद्र गुंडू राव जैसे आर्किटेक्ट्स एक्सपर्ट्स शामिल हुए।

की-नोट सेशन में बांग्लादेश की मरीना तबस्सुम ने अपने सैशन को संबोधित करते हुये प्राकृतिक इम्बैलेंस पर जोर दिया। उन्होंने दो वास्तविकताएं बताई, एक है बढ़ता तापमान और जलवायु संबंधी मुद्दे। उनके अनुसार जलवायु में परिवर्तन और तापमान में बढ़त जैसे कई मुद्दे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और महामारी जिनका हम पिछले दो वर्षों से सामना कर रहे है। उन्होंने बताया की कई मायनों में अधिक निष्कर्षण और अधिक उत्पादन की हमारी संस्कृति ने अत्याधिक असंतुलन पैदा किया है और मुझे लगता है कि एक वास्तुकार के रूप में हमारे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम इसे ध्यान में रखें और फिर उसी के अनुसार काम करें।

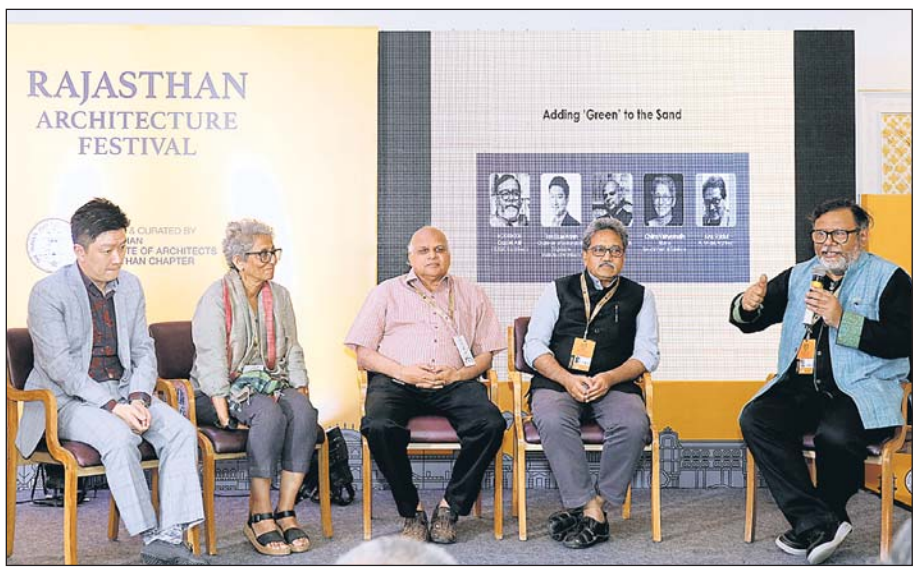

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स-राजस्थान चैप्टर की ओर से आयोजित राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल में रविवार को ''हेरिटेज अंडर थ्रेट'' विषय पर देश के जाने-माने आर्किटेक्ट्स ने अपने विचार व्यक्त किए।

आर्किटेक्ट, अर्बनिस्ट और कंजर्वेशनिस्ट, कुलभूषण जैन ने जयपुर और अहमदाबाद के वॉलसिटी क्षेत्रों का उदाहरण देते हुए अपने संबोधन में कहा कि, इन क्षेत्रों के संरक्षण के लिए सरकार को प्रयास करने चाहिए। जगह-जगह बेतरतीब निर्माण और पुरानी इमारतों पर साइन बोर्ड देखे जा सकते है। जयपुर के वॉलसिटी को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी घोषित होने के बावजूद इसके संरक्षण को लेकर बहुत उदासीनता है, सरकार को चाहिए कि ऐसे हेरिटेज क्षेत्रों को चिन्हित करके उनके रख-रखाव पर काम करना चाहिए। इसमें आम लोगों का सहयोग भी बहुत जरूरी है। क्योंकि लोग जागरूक होंगे तभी वो अपनी विश्व विरासत की देखरेख कर पाएंगे।

हेरिटेज सिनर्जी इंडिया की कमालिका बोस ने कहा कि, हेरिटेज इमारतों का संरक्षण बहुत जरूरी है, कमालिका बोस ने ताजमहल, मुंबई और जयपुर की हेरिटेज इमारतों का उदाहरण देते हुए कहा कि इन्हें बचाए रखने के लिए इनका संरक्षण बहुत जरूरी है, जिसके लिए आसपास बढ़ते रिहायशी क्षेत्र और तेज़ी से होते निर्माण के लिए एक पॉलिसी बनाना जरूरी है ताकि हमारी धरोहर संरक्षित रह सके।

आर्किटेक्चरल हेरिटेज एडवाइजरी कमेटी के चेयरमैन, के.टी. रवींद्रन ने दिल्ली और लक्षद्वीप की जर्जर होती हेरिटेज इमारतों का उदाहरण देते हुए कहा कि, हेरिटेज के दुर्गम क्षेत्रों में होते निर्माण के चलते एक अलग ही कॉरिडोर बनता जा रहा है, ऐसे में सरकार को जनता और हेरिटेज इमारतों के बीच विच्छेद को खत्म करने के प्रयास करते हुए इन्हें संरक्षित करने का काम करना चाहिए।

- देश की धरोहरों के संरक्षण के लिए सरकार को प्रयास करने चाहिएः कुलभूषण जैन
- 'राजस्थान आर्किटेक्चर फेस्टिवल' का समापन

टेक्निकल सेशन 'एडिंग ग्रिन टू द सैंड' विषय में अनु मृदुल ने जोधपुर शहर में विभिन्न जल निकायों के विकास पर चर्चा की। जिनमें कृत्रिम व मानव निर्मित दोनों की ही महत्ता को शहर की उन्नति के लिए बराबर बताया। उन्होंने जोधपुर में विभिन्न जल निकायों की बहाली पर आधारित अपनी केस स्टडीज के ज़रिए बताया की जल निकाय की पुरानी प्रणाली को इस्तेमाल कर उन्होंने आधुनिक समाज को फायदा कैसे पहुँचाया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे सांस्कृतिक दृष्टिकोण से जल निकायों को संरक्षित करने में मदद मिलती है और जल निकायों को बचाये रखने में प्राचीन संस्कृति की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

फेस्टिवल के दौरान 'माई हेरिटेज-माई प्राइड' आर्किटेक्चर एक्जीबिशन लगाई गई थी।

अनुभवों को साझा करने से मिलती है नई दिशा : डॉ. सुबोध अग्रवाल

अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस व आईआईटी दिल्ली एलुमिनी एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सुबोध अग्रवाल ने रविवार को राजपूताना शेरेटान में आयोजित गेट-टुगेदर कार्यक्रम में भाग लिया।

जयपुर, (का.सं.)। समय समय पर मेल-मिलाप से अनुभवों को साझा करने का अवसर मिलता है तो प्रदेश के विकास में भी भागीदारी तय होती है। अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस व आईआईटी दिल्ली एलुमिनी एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सुबोध अग्रवाल ने यह विचार राजपूताना शेरेटान में आयोजित गेट टू गेदर कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आईआइटी दिल्ली के पास आउट आज प्रदेश में उच्च पदों पर कार्य करते हुए नवाचारों को प्रोत्साहित कर रहे हैं वहीं प्रदेश में उद्योग धंधों, स्टार्टअप्स आदि के माध्यम से विकास की गंगा बहा रहे हैं। स्वरोजगार के साथ ही रोजगार के अवसर विकसित कर आर्थिक विकास में सहभागी बन रहे हैं।

डॉ. अग्रवाल ने आईआईटी दिल्ली की तरह ही अन्य एलुमिनी एसोसिएशनों को गतिशील और सक्रिय बनाने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए प्रदेश के समग्र विकास में भागीदार बनने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

एसोसिएशन के वाइस प्रेसिडेंट रजनीश भंडारी, सेकेट्री शुभम जैन और ट्रेजरी आकाश मित्तल ने बताया कि प्रदेश में करीब 400 वे देश दुनिया में 5 हजार से अधिक आईआईटी एलुमिनी निजी व सरकारी क्षेत्र में उच्च पदों पर कार्य करते हुए सेवाएं दे रहे हैं।

गेट टू गेदर में राजस्थान सरकार में स्टेम सेल हेड डा. यावेर हुसैन, मेटाक्यूब के संस्थापक पारिजात अग्रवाल, सहज डेरी के संस्थापक पिज्ञान गदेडिया सहित करीब 70 प्रतिभागियों ने परिवार सहित हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संयोजन सेकेट्री शुभम जैन ने किया।

राज्यपाल कलराज मिश्र रविवार दोपहर को ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए माउंट आबू रवाना हुए। राज्यपाल रविवार दोपहर दो बजे जयपुर जंक्शन से वाराणसी-अहमदाबाद एक्सप्रेस द्वारा आबू रोड जंक्शन रवाना हुए। जयपुर रेलवे मण्डल के एडीआरएम मनोज गर्ग सहित रेलवे के अधिकारियों ने जयपुर जंक्शन पर उनका स्वागत किया।

जोधपुर में हुआ रेप सरकार के माथे पर कलंक : राठौड़

जयपुर। उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने ट्वीट कर कहा कि दुर्भाग्य है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के गृह जिले जोधपुर में युवती के साथ पहले मंडोर थाने के क्वार्टर में एएसआई के रिश्तेदार ने हैवानियत की और फिर टैक्सी चालक ने दरिंदगी की।

राठौड़ ने कहा कि जोधपुर में युवती के साथ हुई रेप की यह वीभत्स घटना सरकार के माथे पर कलंक है और गहलोत शासन के जंगलराज की तस्वीर दिखा रही है। बीते 6 माह में ऐसी कई घटनाएं सामने आ चुकी है।

हमारे पास अधिकतर मरीज कैंसर की लास्ट स्टेज में आते हैं : डॉ. संदीप जैन

जयपुर, (का.सं.)। दुनिया में मौत का दूसरा सबसे बड़ा कारण है एब्डोमिनल कैंसर, इसी लिए 2019 में महसूस हुआ कि 1 दिन होना चाहिए इस कैंसर से जुड़े कारण और बचाव पर जागरूकता फैलाने के लिए। तभी प्रतिवर्ष 19 मई को पूरे विश्व में 'एब्डॉमिनल कैंसर डे' मनाया जाता है।

आज इसी श्रृंखला में एबीसीडी कंसल्टेशन कैंप जेएलएन मार्ग स्थित फोर्टिस हॉस्पिटल में आयोजित किया गया। निदेशक, आईआईईएमआर, मुकेश मिश्रा ने बताया कि इस कार्यक्रम में डॉ संदीप जैन ने करीब 100 मरीजों को कंसल्टेशन देते हुए बताया कि हमारे पास ज्यादातर मरीज कैंसर की लेटे स्टेज में आते हैं। एब्डॉमिनल कैंसर का सही इलाज करने के लिए सिर्फ अर्ली स्टेज में डायग्नोसिस होना जरुरी है जिससे मरीज की उम्र बढ़ सके। लेट स्टेज में डायग्नोसिस का मतलब जान को खतरा, लंबा इलाज, ऑपरेशन के साथ कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी, महंगा इलाज, इलाज संबंधी कॉम्प्लीकेशन्स, वापस होने व फैलने के रिस्क। एब्डोमिन कैंसर सात प्रकार के होते हैं, ऑसोफेगल कैंसर (खाने की नाली), कोलन और रेक्टल कैंसर, अपेंडिक्स कैंसर, गैस्ट्रिक कैंसर, गॉलब्लेडर कैंसर, पैंक्रिअटिक कैंसर और लीवर कैंसर। आज 90 से 95 फीसदी कैंसर पर्यावरण और जीवन शैली कारणों से होते हैं और केवल 5-10 हेरिडिटरी या जेनेटिक्स के कारण। अगर हम अपने जीवन शैली में कुछ सुधार कर लें तो काफ़ी हद तक बचाव हो सकता है। संतुलित शाकाहारी भोजन, नियमित शारीरिक गतिविधि, वजन का सामान्य होना, शराब और धूम्रपान से बचना, समय पर स्क्रीनिंग टैस्ट और शुरुवाती लक्षणों को नजरंदाज ना करना।

- एब्डोमिनल कैंसर से जुड़े कारण और बचाव पर जागरूकता के लिए हुआ एबीसीडी कंसल्टेशन कैंप

आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व का उद्घाटन

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रविवार को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर मुख्यमंत्री निवास से आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व का उद्घाटन और लोकार्पण किया।

गहलोत ने कहा कि आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व वन एवं वन्यजीव संरक्षण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। यह एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर सभी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व पर्यटन स्थल की सौगात प्रदेशवासियों को समर्पित की। उन्होंने कहा कि वन्यजीवों की मानव जीवन में अहम भूमिका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जैव विविधता का संरक्षण हम सभी की अहम जिम्मेदारी है। राज्य सरकार द्वारा वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप कई ऐतिहासिक फैसले लिए गए हैं। राजस्थान अपनी भौगोलिक विषमताओं के बावजूद वन संरक्षण करने में सफल रहा है।

मंजू मेहता ने सितार पर सुनाया राग 'जोग कौंस'

जयपुर, (का.सं.)। जवाहर कला केन्द्र में रविवार को सितार वादन का कार्यक्रम 'सितार स्वर गंगा'' आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जयपुर में जन्मीं और पिछले पचास साल से अहमदाबाद में रहकर संगीत साधना में लगीं विदूषी मंजू नंदन मेहता ने अपनी दिलकश प्रस्तुति से संगीत प्रेमियों का दिल जीत लिया। यह कार्यक्रम जवाहर कला केन्द्र, राजस्थान फोरम और इंटरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में ध्रुवपद गायिका डॉ. मधु भट्ट तैलंग के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम किया गया।

मंजू मेहता ने इस मौके पर राग जोग कौंस के स्वरों से परिवेश में भक्ति और श्रंगार का रस घोल दिया। राग जोग कौंस अपेक्षाकृत नया राग जिसकी रचना पंडित जगन्नाथ बुआ पुरोहित 'गुणीदास' ने की है। यह राग 'जोग' और राग 'चंद्रकौंस' के मिश्रण से बना है। पूर्वांग में राग जोग होने से इसके स्वर भक्ति का अहसास करवाते हैं।

अब राजस्थान सरकार भी कम करे पेट्रोल-डीजल पर वेट : रामलाल शर्मा

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्य प्रवक्ता एवं विधायक रामलाल शर्मा ने कहा कि भारत सरकार हमेशा जनहित में निर्णय लेते हुए जन भावनाओं के अनुरूप शासन का संचालन करने का काम कर रही है। राजस्थान के अंदर कांग्रेस की सरकार है और कांग्रेस के प्रदेश स्तरीय और राष्ट्रीय नेता हमेशा मोदी सरकार पर निशाना इस बात का साधते आये हैं कि पेट्रोल और डीजल के दामों में वृद्धि की वजह से ही महंगाई बढ़ रही है। मोदी ने समय-समय पर टैक्स के अंदर कमी करके जनता को राहत प्रदान करने का काम किया है और अब भी मोदी सरकार ने अपने टैक्सों में कमी करके डीजल-पेट्रोल और गैस के दामों में कमी करके देशवासियों को राहत प्रदान करने का काम किया है और कांग्रेस के नेताओं के पास भाषण देने की बातें अलग और मुद्दे अलग और यथार्थ में उनके हक में जो चीजें हैं वह करने के लिए अलग है। मोदी ने टैक्स में कमी करने के बाद देश की राज्य सरकारों से भी आग्रह किया है कि वह भी वेट के अंदर कमी करें ताकि जनता को राहत मिल सके। लेकिन अभी तक भी राजस्थान की सरकार ने ना तो कोई व्यक्तव्य जारी किया है और ना ही इस मुद्दे पर कोई बात कही है।

'इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार योजना' के क्रियान्वयन के लिए नवीन दिशा-निर्देशों को मंजूरी

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 'इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार योजना' के क्रियान्वयन के लिए नवीन दिशा-निर्देशों को स्वीकृति दी है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (मनरेगा) की तर्ज पर शहरी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह योजना शुरू की गई है।

गहलोत ने वर्ष 2022-23 के बजट में यह घोषणा की थी कि शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले परिवारों को प्रति वर्ष 100 दिन का रोजगार 'इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार योजना' के अन्तर्गत उपलब्ध करवाया जाएगा। इस महत्वाकांक्षी योजना पर राज्य सरकार प्रतिवर्ष 800 करोड़ रूपए व्यय करेगी।

नवीन दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रस्तावित योजना में स्थानीय निकाय क्षेत्र में निवास कर रहे 18 वर्ष से 60 वर्ष की आयु के सदस्य का जन आधार कार्ड के आधार पर पंजीयन किया जाएगा। योजना में अनुमत कार्य करवाने हेतु राज्य/जिला/निकाय स्तर पर कमेटियों के माध्यम से कार्य स्वीकृत एवं निष्पादित करवाया जाएगा। सामान्य प्रकृति के कार्य स्वीकृत एवं निष्पादित कराने की सामग्री लागत व पारिश्रमिक लागत का अनुपात 25:75 तथा विशेष प्रकृति के कार्यों हेतु सामग्री लागत तथा पारिश्रमिक भुगतान का अनुपात 75:25 होगा।

कार्यों का भुगतान मनरेगा के अनुरूप श्रमिकों के बैंक खाते में 15 दिवस में किया जाएगा।

पैरा खेल अकादमी के लिए 14 करोड़ की राशि मंजूर

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जयपुर में दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए पैरा खेल अकादमी के निर्माण हेतु 14 करोड़ रूपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान को मंजूरी दी है। अकादमी में पैरा खिलाड़ियों को उच्च तकनीकी प्रशिक्षण, ट्रेनिंग उपकरण व अभ्यास हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

कर्नल राज्यवर्धन की 'अमृत जन यात्रा' बाईक रैली में उमड़ा जन सैलाब

जयपुर, (का.सं.)। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ की अगुवाई में आज झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में 'अमृत जन यात्रा' बाईक रैली निकाली गई। इस दौरान पूर्व विधायक एवं केबिनेट मंत्री राजपाल सिंह शेखावत भी उनके साथ रहे। हिंगोनिया से प्रारम्भ हुई बाईक रैली लोहरवाड़ा, मुरलीपुरा, भोजपुरा कलां, बबेरवालों की ढ़ाणी, जोबनेर होते हुए ढाणी नागान पहुंची। बडी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं आमजन बाईक रैली में शामिल हुए। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर स्थानीय निवासियों और व्यापारियों ने बाईक रैली का जोरदार स्वागत किया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जिन्दाबाद और कर्नल राज्यवर्धन जिन्दाबाद के नारे लगाए। बाईक रैली के दौरान कर्नल राज्यवर्धन ने सांसद कोष से निर्मित शहीद हुक्माराम जाट पार्क का उद्घाटन भी किया। बाईक रैली को सम्बोधित करते हुए कर्नल राज्यवर्धन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पैट्रोल डीजल के दाम घटाने और गैस सिलेण्डर पर सब्सिड़ी देकर जनता को राहत पहुंचाने के लिए धन्यवाद दिया और कहा गहलोत सरकार को भी पैट्रोल डीजल पर वेट कम कर प्रदेश की जनता को राहत पहुंचानी चाहिए।

- पैट्रोल-डीजल के दाम घटाने एवं गैस सिलेण्डर पर सब्सिडी देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया
- 'पैट्रोल डीजल पर वेट कम कर जनता को राहत दे गहलोत सरकार'

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ की अगुवाई में रविवार को झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में 'अमृत जन यात्रा' बाईक रैली निकाली गई।

कर्नल राज्यवर्धन ने कहा मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने हमेशा देश हित और जनहित में ही कार्य किए है। प्रधानमंत्री मोदी के रूप में देश को शानदार नेतृत्व मिला है। आज देश का हर गांव मजबूत हो रहा है केन्द्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के हर वर्ग को मिल रहा है। जहां पीने का पानी नहीं पहुंचता था वहां पानी पहुंच रहा है जिनके पास घर नहीं था उनके घर बन रहें है। विश्व में भारत का मान लगातार बढ़ रहा है। करोना काल में भारत द्वारा किए गये कार्यों की चर्चा पूरे विश्व में हो रही है।

कर्नल राज्यवर्धन ने प्रदेश की गहलोत सरकार को आडे हाथ लेते हुए कहा जनविरोधी और तुष्टिकरण की नीति के कारण जनता का सरकार पर से विश्वास उठ चुका है। विकास की दृष्टि में राजस्थान देश में काफी पीछे रह गया है। जनता ने जिस कांग्रेस पार्टी पर भरोसा करते हुए साढ़े तीन साल पूर्व सत्ता सौंपी थी वह पार्टी जनता को सुरक्षा और सुविधा देने में पूरी तरह से विफल हुई है। किसान महिला और युवाओं के खिलाफ राज्य सरकार ने काम किया है। राजस्थान शांतिप्रिय प्रदेश के रूप में जाना जाता था लेकिन पिछले साढे तीन सालों में दलित और महिला अत्याचारों में राजस्थान देश में नम्बर वन पर पहुंच गया है और कल्याणकारी योजनाएं खासकर पीने का पानी जनता तक पहुंचाने में आखिरी नम्बर पर पहुंच गया है।

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

नगर निगम ग्रेटर, जयपुर
(पं. दीनदयाल उपाध्याय भवन, लालकोठी, टोंक रोड, जयपुर) (आयोजना प्रकोष्ठ)
क्रमांकः एफ-13 () उपा. आयोजना/जननि./2022/01
सार्वजनिक विज्ञप्ति दि. 20.05.2022
विषयः- राजस्थान नगर पालिका (भू-उपयोग परिवर्तन) नियम 2010 के नियम 4 (1) के अन्तर्गत आपत्तियां/ सुझाव आमंत्रित करने हेतु विज्ञप्ति।
नगर निगम, जयपुर में निम्न वर्णित भूखण्ड धारक ने कॉलम 4 में वर्णित मास्टर विकास योजना 2025 (जयपुर रीजन) में निर्धारित भू-उपयोग का कॉलम 5 में वर्णित भू-उपयोग हेतु आवेदन किया है जिसका ब्यौरा निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	आवेदक का नाम, भूखण्ड संख्या योजना का नाम	लीज डीड अनुसार भूखण्ड का क्षेत्रफल व उपयोग	मास्टर प्लान (2025) अनुसार भू-उपयोग	आवेदक द्वारा चाहा गया भू-उपयोग
1.	2.	3.	4.	5.
1.	श्रीमती इन्द्रा शर्मा भू. सं. 37, सुन्दर नगर, मालवीय नगर, जयपुर	368.75 व.ग. (आवासीय)	मिश्रित आवासीय	मिश्रित

यदि किसी व्यक्ति/ संस्था को उपरोक्त भू-उपयोग परिवर्तन के संबंध में कोई आपत्ति/सुझाव हो तो इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 15 दिन की अवधि तक अपनी आपत्ति/सुझाव कारणों सहित नगर निगम जयपुर के आयोजना शाखा में प्रस्तुत कर सकते है।
महेन्द्र सोनी (IAS) आयुक्त नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

खोया पाया
नगर पालिका चाकसू द्वारा जारी पत्रावली में मेरे प्लाट का आवासीय पट्टा मामोडीया का मोहल्ला, वार्ड नं 19, चाकसू का पट्टा संख्या 571/2001-2002 पट्टा खो गया है । जिस किसी को भी यह पट्टा मिले, मुझे सुपुर्द करे। पट्टा देने वाले को उचित ईनाम दिया जायेगा। निवासी-रामगोपाल कुमावत पुत्र श्री स्व लादूराम कुमावत चाकसू मो. 9351228878

आवश्यकता
फैक्ट्री में कार्य हेतु हेल्परों की आवश्यकता वेतन 11500/- प्रतिमाह पता-एच-174 मालवीय औद्योगिक क्षेत्र जयपुर फोन-0141-2751714-15

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड
(पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड व आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मेलित)
CIN : L65110TN2014PLC097792
पंजीकृत कार्यालय - केआरएम टॉवर्स, 8वीं मंजिल, हैरिंगटन रोड, चेटपेट, चैन्नाई-600031
फोन- +91 44 4564 4000 | फैक्स- +91 44 4564 4022
IDFC FIRST Bank

परिशिष्ट-IV [नियम 8 (1)]
कब्जा नोटिस
(अचल सम्पत्ति का)

चूंकि अधोहस्ताक्षरकर्ता आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड व आई डी एफ सी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मेलित) के प्राधिकृत अधिकारी हैं अतः वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुर्न निर्माण एवं प्रतिभूति ब्याज प्रवर्तन अधिनियम, 2002 तथा उपर्युक्त कथित अधिनियम की धारा 13 (12) के साथ पठित प्रतिभूति ब्याज (प्रवर्तन) अधिनियम 2002 के नियम 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिनांक 25.01.2020 को एक मांग नोटिस कर्जदारों, सह-कर्जदारों एवं जमानतियों 1. मीना देवी, 2. भोलानाथ सिंह, 3. हिमांशु सिंह, को जारी किया गया था, जिसमें दिनांक 24.01.2020 की तिथी को एक मांग नोटिस उल्लेखित राशी रुपये 23,07,972.59/- (रुपये तेईस लाख सात हजार नौ सौ बहत्तर पैसे उनसठ मात्र) का भुगतान उपर्युक्त निर्दिष्ट नोटिस की प्राप्ती से 60 दिन के अन्दर करने को कहा गया था।

चूंकि कर्जदार उक्त राशि को वापस चुकाने में विफल रहे हैं अतः कर्जदारों एवं जनसाधारण को नोटिस के माध्यम से सूचित किया जाता है कि कथित अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (4) के साथ पठित प्रतिभूति ब्याज (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8 जिसका नोटिस में उल्लेख किया गया है के तहत अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उन्होंने यहां निम्न वर्णित संपत्तियों के आज मई 2022 के 18वें दिन भौतिक रूप से अपने कब्जे/अधिकार में ले लिया है।

विशेष रूप से कर्जदारों एवं आम जनता को एतद्द्वारा सावधान किया जाता है कि वे इन सम्पत्तियों का सौदा लेनदेन नहीं करें तथा इस सम्पत्ति का किसी भी प्रकार से खरीद-बिक्री करने पर उसे आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड व आईडीएफसी बैंक के साथ सम्मेलित) की प्रभारित शर्तों के अधीन राशि रुपये 23,07,972.59/- (रुपये तेईस लाख सात हजार नौ सौ बहत्तर पैसे उनसठ मात्र) का भुगतान उस पर प्रभारित ब्याज सहित करना होगा।

कर्जदारों का ध्यान उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है जिसमें प्रतिभूतिकृत सम्पत्तियों को मुक्त करने के बारे में उपलब्ध समयावधि का उल्लेख है।

अचल सम्पत्तियों का विवरण

सम्पत्ति प्लाट नं. 63-बी, (क्षेत्रफल 83.33 वर्गगज) करनी विहार-बी, जयपुर, राजस्थान-302013 का पूरा व प्रत्येक भाग

दिनांक- 18.05.2022
स्थान- जयपुर
ऋण खाता संख्या- 13625235

प्राधिकृत अधिकारी, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड
(पूर्व नाम केपिटल फर्स्ट लिमिटेड व आईडीएफसी बैंक के साथ सम्मेलित)

बीकानेर में पानी के लिए हाहाकार, दस दिन बाद मिलेगा नहर का पानी

टैंकरों के दाम हजार रुपए और कैंपर के 40 रुपए पार पहुंचे

बीकानेर, (निसं)। नहरबंदी का पानी मिलने में अभी दस दिन और लगेंगे। जलदाय विभाग ने तीन दिन के अंतराल से पानी देने की व्यवस्था लागू कर दी है। ऐसे में घर-घर में पानी को लेकर परेशानी खड़ी हो गई है। शहर में सड़कों पर हर तरफ पानी की आपूर्ति करने वाले निजी टैंकर घूमते नजर आए । वहीं जलदाय विभाग की ओर से पानी के नि:शुल्क टैंकर भी पानी की कमी वाले मोहल्लों में भेजे जा रहे हैं। हालांकि इन सबके बीच, जनता में हाहाकार की स्थिति देखने को मिली, जबकि अभी कम से कम 9 दिन बाकी हैं नहर का पानी पहुंचने में। तब तक क्या हालात होंगे, इसे सोचकर भी सिहरन पैदा हो रही है।

पानी के टैंकर को लेकर जिला प्रशासन की ओर से तय किए गए रेटों का भी कोई असर नहीं हो रहा। टैंकर संचालक मनमाने रेट वसूल रहे है और पानी की जरूरत पूरी करने के लिए लोग एक हजार रुपए प्रति टैंकर तक के रेट देने को मजबूर हैं। इसी के साथ फिल्टर पानी के कैम्परों के रेट भी करीब दो गुणा हो गए है। बीस रुपए प्रति कैम्पर की दर मिलने वाला अब तीस से चालीस रुपए में मिल रहा है।

जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता बलवीर सिंह ने बताया कि शनिवार को शहर में 60 टैंकरों से करीब 300 फेरे लगाकर नि:शुल्क पानी की आपूर्ति की गई। ज्यादा पानी की आवश्यकता जिस क्षेत्र से आती है, वहां टैंकर भेजा जा रहा है। अभी मौजूदा टैंकर कम पड़ने लगे हैं। ऐसे में परिवहन विभाग की मदद से कुछ निजी टैंकरों का अधिग्रहण किया गया है। इनकों पानी की आपूर्ति के लिए लगाया जाएगा। इसके बाद हालात कुछ और ठीक हो जाएंगे।

इधर जिला प्रशासन द्वारा निजी टैंकरों को अधिग्रहण व उनके खिलाफ नियमों की अनदेखी पर कार्यवाही से भी पेयजल की किल्लत में भारी बढोतरी देखी गई है। आमदिनों में सड़कों पर सरपट दौडने वाले निजी टैकर एकाएक गायब हो जाने से लोगों के सामने मंहगा पानी भी पीना दुश्वार हो गया है।

पानी की किल्लत से अनेक क्षेत्रो में निर्माण कार्य भी बंद होने के कगार पर हैं। या फिर वे चोरी छिपे रात के समय दुगनी चौगनी दरों पर पानी लेने को मजबूर है।

हैड कांस्टेबल एवं दलाल 5 हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार

आवास एवं अन्य ठिकानों की तलाशी जारी

पाटन, (निसं)। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर सीकर इकाई द्वारा रविवार को कार्यवाही करते हुए कोतवाली थाने के हैड कांस्टेबल अनिल कुमार व उसके दलाल बोदूराम को परिवादी से 5 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार करने का मामला सामने आया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक भगवान लाल सोनी ने बताया कि एसीबी की सीकर इकाई को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि परिवादी द्वारा दर्ज कराये गये मुकदमे तथा उसके विरूद्ध दर्ज मुकदमे में मदद करने की एवज में नीमकाथाना कोतवाली थाने के हैड कांस्टेबल अनिल कुमार द्वारा उसके दलाल बोदूराम के माध्यम से 10 हजार रुपये रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा है। जिस पर एसीबी सीकर इकाई के उप अधीक्षक पुलिस जाकिर अख्तर के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया जाकर रविवार को पुलिस निरीक्षक सुरेश चंद एवं उनकी टीम द्वारा ट्रेप कार्यवाही करते हुये दलाल बोदूराम को परिवादी से 5 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है।

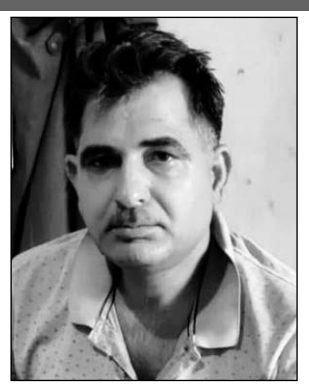

हेड कांस्टेबल अनिल यादव

दलाल बोदूराम

- एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर सीकर इकाई ने की कार्रवाई

आरोपी हैड कांस्टेबल अनिल कुमार को भी प्रकरण में गिरफ्तार किया गया है। उल्लेखनीय है कि आरोपी द्वारा शिकायत के सत्यापन के दौरान ही परिवादी से 5 हजार रुपये रिश्वत के रूप में वसूल कर लिये थे। एसीबी के अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस दिनेश एम. एन. के निर्देशन में आरोपियों से पूछताछ जारी है।

निवाई के गांवों में तेज अंधड़ से उड़े टीनशेड़, कई पेड़ हुए धराशाही

निवाई, (निसं)। शनिवार की रात करीब 9 बजे अचानक आए तेज अंधड़ से कई घरों व बाड़ों में लगे टीनशेड उड़ गए एवं सैकडों पेड़ धराशाही हो गए। ग्राम पंचायत ललवाडी के गांव अगरपुरा, संग्रामपुरा व ललवाडी में कच्चे घर और पक्के घरों की दीवारें गिर गई एवं टीनशेड व छप्पर उड़ गए। सरपंच देवालाल गुर्जर ने बताया कि गांव में आए तेज अंधड़ से नीम व बबूल सहित करीब 200 पेड़ गिर गए। कई पशुओं को भी चोटें आई हैं। रविवार को सरपंच मास्टर देवालाल गुर्जर व डीआर नरेश नायक ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों से जानकारी ली व घर-घर सर्वे किया। उन्होंने बताया कि जिन लोगों के नुकसान हुआ उनकी सूची तैयार की गई है। क्षेत्र में नुकसान की सूचनाप्रशासन को दे दी है।

सरपंच ने बताया कि अंधड से गांव ललवाडी में किशनलाल सैन, कानाराम, भूरालाल माली, किशनसिंह सैन, बन्ने सिंह, गांव संग्रामपुरा में रामकरण बैरवा, हजारी बैरवा, बद्रीलाल बैरवा, सज्जन कंवर, हनुमान सिंह, राजा देवी, मोरेलाल, रामप्यारी देवी, शिवनारायण बैरवा, बुद्धि प्रकाश, नाथूलाल, रामजीलाल, गांव अगरपुरा में हीरा देवी, कंवरपाल रैगर, रामअवतार, छोटूलाल रैगर, गोपीचंद, रामजीलाल, रूपनारायण रैगर, मुकेश रैगर, राजेश, रतनलाल रैगर, प्रभुलाल, रेखा पिंकी रैगर, मोहनलाल, सुगना, रामविलास, शंकरलाल, दामोदर, नारायण, खेमराज, राजेश, धन्नालाल, केदार सैन व चंदालाल के अंधड से नुकसान हुआ है।

तेज अंधड़ से गिरा छप्पर व फैला मलबा।

साईकिल चलाकर जयपुर से मालपुरा पहुंचे बोर्ड सचिव केसी मीणा

मालपुरा, (निसं)। अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर केन्द्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में रविवार को आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में बतौर अतिथि के रूप में जैव विविधता बोर्ड के सचिव केसी मीणा 100 किमी. साईकिलिंग कर अविकानगर पहुंचे।

राज्य स्तरीय कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण को लेकर नाटक, डांस, कटपूतली नृत्य सहित अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दे आमजन को जागरूक किया। तो संगठन के प्रदेश सचिव केसी मीणा ने टोंक जिले से पहुंचे जैव विविधत्ता समितियों के कार्यकर्ताओं से सीधा-संवाद कर पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया। अविकानगर निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर, जिला उपवन संरक्षक एसके रेड्डी ने अतिथियों का स्वागत कर कार्यक्रम का प्रतिवेदन रखा।

- जैव विविधत्ता दिवस पर अविकानगर में आयोजित हुआ प्रदेश स्तरीय समारोह

अविकानगर के विभिन्न सेक्टरो ने भेड़ बकरी व खरगोश पर किये जा रहै नवीन शोध कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ ही पर्यावरण संरक्षण एवं स्वस्थ जीवन स्वस्थ मस्तिष्क के लिए साईकिलिंग को दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने पर जोर दिया।

रविवार शाम बूंदाबांदी से बदला मौसम

चूरू, (कासं)। चूरू में दिनभर की गर्मी के बाद शाम को मात्र दस मिनट की बूंदाबांदी ने मौसम बदला। मौसम विभाग से मिली जानकारी के अनुसार रविवार को यहां का अधिकतम 43.3 व न्यूनतम 25.0 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। यहां पर आज सुबह दिन निकलने से लेकर दस बजे तक आसमान में हल्के बादलों की आवाजाही बनी हुयी रहने से धूप का असर कुछ कम दिखाई दिया। इसके बाद शाम को चार बजे से दोबारा आसमान में बादलों की आवाजाही शुरु हो गई। इसके बाद शाम को करीब छ: बजकर दस मिनट पर अचानक तेज बूंदाबांदी शुरु हो गयी जो कि करीब दस मिनट तक चली। गत शाम आयी तेज आंधी के बाद से यहां के मौसम में बदलाव आने से तापमान में कुछ गिरावट आने से भीषण गर्मी से कुछ निजात मिल पायी है। रात के समय में भी हवा में हल्की ठंडक रहने से रात को गर्मी से कुछ राहत मिली रही।

कार चट्टान से टकराई, एक की मौत, छह घायल

पिंडवाड़ा, (नि.सं.)। पिंडवाड़ा पुलिस थाना क्षेत्र के उदयपुर फोरलेन हाईवे मार्ग पर कांटल गांव के पास मारुति कार का आगे का टायर फट जाने से कार असंतुलित होकर पास के चट्टान से टकराकर सड़क पलटी खाने से कार में सवार एक मासूम बच्ची की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं 6 जने गंभीर घायलहो गये।

- उदयपुर फोरलेन हाइवे पर कार का टायर फट जाने से हुआ हादसा

प्राप्त जानकारी के अनुसार गुजरात डीसा शहर मेंचंद्रलोक सोसाइटी में रहने वाले दोमोदी परिवार रवि भाई पुत्र विजय भाई पत्नी सैफाली व पुत्री इयांसी व अपने मित्र अर्पित भाई पुत्र नीलेश भाई उसकी पत्नीभाग्य श्री व पुत्रीअंशी व पुत्र पर्व सहित सात जने स्विफ्ट कार में गुजरात डीसा से उदयपुर यात्रा के लिए निकले थे वही यात्रा पूरी करके वापस उदयपुर से हाईवे फोरलेन मार्ग से अपने घर की ओर जा रहे थे रविवार 5:30 बजे करीब कांटल गांव के पास पहुंचे थे कि अचानक स्विफ्ट कार का आगे का टायर फट गया और असंतुलित होकर पास के चट्टान से टकरा गई जिसके बाद सड़क पर आकर पलटी खा जाए इस दुर्घटना के दौरान कार में से रवि और उसकी पुत्री इयांशी सड़क पर गिर गए बाकी कार में रह गए इस दुर्घटना में गंभीर सभी घायल हो गए वही पास से गुजर रहे लोगों ने अपने वाहन को रोककर घायलों को कार से बाहर निकालने के प्रयास किए। पुलिस जाब्ता घटनास्थल पर पहुंच कर लोगों की मदद से सभी घायलों को बाहर निकाल निकाला इस दुर्घटना में 3 वर्षीय बच्ची की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई।

नाबालिग को कमरे पर बुलाकर रेप किया

हनुमानगढ़, (निसं)। जिले के एक थाना क्षेत्र में नाबालिग के साथ रेप करने का मामला सामने आया है। आरोपी युवक ने किशोरी को फोन करके अपने कमरे पर बुलाया और फिर उसके साथ रेप किया। पीड़िता के परिजनों ने गोलुवाला थाने में युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पोक्सो एक्ट सहित रेप की धाराओं में मामला दर्ज कर उसे राउंडअप किया है और उससे पूछताछ में जुटी है। थानाधिकारी भजनलाल ने बताया कि पीड़िता के परिजनों से थाने में रिपोर्ट देकर बताया कि बृजेश पुत्र राजेश ने उनकी नाबालिग बेटी को 20 मई को फोन करके कमरे पर बुलाया। जब उसकी बेटी कमरे पर गई तो आरोपी ने उसके साथ रेप किया। तबीयत बिगड़ने पर उसने अपनी मां को आप बीती बताई तो परिजन उसने इलाज के लिए श्रीगंगानगर अस्पताल ले गए। पुलिस ने पर्चा बयान लेने के बाद केस दर्ज कर आरोपी को राउंडअप कर लिया। पुलिस ने बताया कि नाबालिग का परिवार यूपी से मजदूरी करने यहां आया हुआ है।

विरमगुडा से वाया देवगढ़ - नीमझर सड़क को मिली स्वीकृति

राजसमंद, (निसं)। मौजूदा वित्तीय वर्ष के राजस्थान सरकार के आम बजट में इस बार फलोदी से माण्डल मार्ग के अधूरे सड़क के सुदृढ़ीकरण व चौडाई कार्य जो की लगभग 25 किलोमीटर का क्षेत्र है। जिसमें वीरम गुढा से वाया कामलीघाट- देवगढ़ -निमझर की घोषणा हुई थी। जिसकी अनुमानित लागत 25 करोड़ रुपये है, इसके पश्चात बजट के द्वितीय फेज में मादडी-आमेट-देवगढ़ -लसानी-40 मिल चौराया जिसकी 25 किलोमीटर की लम्बाई व अनुमानित लागत 23 करोड रुपये है उसकी प्रशाशनिक व वित्तीय स्वीकृति भी मिल गई है।

विधायक सुदर्शन सिंह रावत ने बताया कि यह मार्ग जो कि मेवाड-मारवाड को जोड़ने का मुख्य मार्ग है एवं स्टेट हाइवे 61 के नाम है, पिछले कई वर्षों से अधूरा पडा था। इसके साथ ही मादडी चौराया से देवगढ़ होते हुए लसानी मार्ग से 40 मिल चौराया सडक जो प्रस्तावित थी जिसकी सुध पूर्व की सरकार ने नहीं ली। लेकिन जनप्रतिनिधी होने के नाते मेने स्वंय आमजन को इन मार्गो से गुजरने पर होने वाली

- पाली व भीलवाड़ा जिले की बॉर्डर की होगी कनेक्टिविटी

समस्याओं को देखते एवं इस मार्ग की दुर्दशा को देख लोगों की मांग पर इस कार्य को बजट सत्र में सदन के पटल पर रख इस कार्य को जल्द पूर्ण करवाने की मांग की। जिस पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इसे जायज मानते हुए तुरन्त ही स्वीकृत किया। साथ ही हमें इस बात की खुशी है कि इसकी प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृति भी हाल ही में जारी कर दी गयी है जिससे अब इस मार्ग के अधूरे पडे कार्य को पूरा होने में ज्यादा समय नही लगेगा।

इस मार्ग से गुजरने वाले राहगीरों को निश्चित तौर पर यात्रा करने में सुगमता के साथ व्यवसायिक गतिविधियों में भी इस मार्ग के कार्य पुर्ण होने पर इजाफा होगा। इस वीरम गुढा से निमझर सडक के निर्माण से पाली जिले की सरहद से राजसमन्द होते हुए भीलवाड़ा जिले को जोडा जा सकेगा। इसके साथ साथ यह घोषणा एक ऐतिहासिक पल है जब किसी मुख्यमंत्री द्वारा एक ही बजट में 1 विधानसभा क्षेत्र को 2 लम्बी सडकें बजट में दी गयी है। विधायक सुदर्शन सिंह रावत के प्रयासों से सडकों के जाल बिछाने में कोई कसर नही रखी, गोमती से ब्यावर के राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच 8 के पिछले 7 साल से अधूरे पड़े फोरलेन को भी पूरा करवाने के लिए पिछले साल विधायक रावत ने अधूरे मार्ग की पदयात्रा निकाली। जिसके फलस्वरूप केन्द्र सरकार ने इसकों स्वीकृत करते हुए कार्य भी शुरू कर दिया गया। हाल ही में डीएमएफटी द्वारा भी क्षेत्र में तकरीबन 100 से अधिक सड़कों को बनाने के प्रस्ताव ले उनकी स्वीकृतियां जारी हुई है और जो पेचेबल या रिपेयरेबल सडके है उनको भी पूरा किया जाना है।

इस मामले में विधायक सुदर्शनसिंह रावत का कहना है कि पिछले सात दशकों में जो सड़क मार्ग को लेकर कार्य नही हो पाए वह सभी कार्य मौजूदा कार्यकाल में हो रहे है। इस क्षेत्र के लिए यह अपनेआप में एक स्वर्णिम दौर है। क्षेत्र की जनता को इस आवागमन की समस्या से जल्द निजात मिल पाएगी।

हरिद्वार इंटरसिटी कल से भुच्चो में रुकेगी

श्रीगंगानगर, (निसं)। पंजाब के भुचो स्टेशन पर गाड़ियों के ठहराव की मांग के चलते रेल प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा के लिए श्रीगंगानगर-हरिद्वार इण्टरसिटी और अम्बाला-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस को छह माह की अवधि के लिए प्रायोगिक आधार पर ठहराव देने का निर्णय लिया है।

- अंबाला-श्रीगंगानगर को भी मिला ठहराव

उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी दीपक कुमार ने बताता कि गाड़ी संख्या 14711 हरिद्वार-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस भूचू स्टेशन पर 24 मई से 09.24 बजे पहुंचेगी, जबकि 14712 श्रीगंगानगर-हरिद्वार एक्सप्रेस 24 मई से दोनों दिशाओं में एक मिनट के ठहराव के लिए 06.48 बजे वहां पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 14736 अम्बाला-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस 24 मई से सुबह 10.21 बजे भुचो स्टेशन पर एक मिनट के ठहराव के लिए पहुंचेगी।

बहरोड़ में पार्षद का परिवार कर रहा विद्युत चोरी

महिला पार्षद का मकान जहां लाइन से डायरेक्ट कनेक्शन ले रखा है।

बहरोड़/ नीमराना, (निसं)। बहरोड़ विधायक बलजीत यादव द्वारा चलाए जा रहे अभियान जिसमें भ्रष्टाचार पकड़ने पर 51 हजार रुपए के दो इनाम दिए जा चुके हैं।

इस अभियान के खिलाफ एक मामला सामने आया है जिसमें पार्षद परिवार द्वारा इस मुहिम के विपरीत विद्युत चोरी कहें या भ्रष्टाचार की घटना सामने आई है। जिसमें एक महिला पार्षद का परिवार विद्युत निगम के लाइन से डायरेक्ट कनेक्शन तार जोड़कर लंबे समय से विद्युत चोरी कर रहा है।

विद्युत वितरण निगम जयपुर, राजस्थान को 20 मई 2022 को सुबह 5:30 बजे की घटना के बारे में मय सबूत फोटो व वीडियो से अवगत कराने के बाद शिकायत दर्ज नम्बर जारी किया जा चुका है। यह बिजली चोरी का लगा हुआ तार बहरोड़ के गर्ल्स स्कूल के पास प्रधान प्लाजा के सामने कविता सैनी नगर पालिका पार्षद वार्ड नंबर 7 के मकान पर है। जिसकी सूचना विधायक बलजीत यादव द्वारा चलाए जा रहे भ्रष्टाचार सूचना व्हाट्सएप नंबर भी कल भेजी जा चुकी है।

मात्र 17 मिनट में बने जीवन के हम सफर

निवाई गंगा गार्डन में आयोजित शादी में मौजूद दुल्हा-दुल्हन।

निवाई, (निसं)। स्थानीय गंगा गार्डन में रविवार को एक शादी बिना दहेज के केवल 17 मिनट में सम्पन्न हो गई। दूनी के एक युवक ने अनोखी शादी रचाई है। संत रामपाल महाराज के अनुयायी हितेश पुत्र महावीर निवासी दूनी ने कृष्णा पुत्री श्यामलाल नायक निवासी अलीगढ़ से अनोखी शादी की है।

शादी में किसी भी प्रकार का दिखावा नहीं किया गया और ना ही किसी भी प्रकार का दहेज लिया गया है। यह शादी मात्र 17 मिनट में रमैनी पद्धति से सम्पन्न हुई। संत रामपाल महाराज के अनुयायी हितेश नायक ने बताया कि संत

- दोनों के परिजन व संत के अनुयायी रहे मौजूद

रामपाल से प्रेरित होकर उन्होंने यह शादी की है। उन्होंने बताया कि संत रामपाल महाराज का न्यू मिशन है कि भारत देश को दहेज मुक्त बनाना है। इसी को ध्यान में रखकर दोनों परिवारों की रजामंदी से बिना किसी दहेज और दिखावे के शादी सम्पन्न की गई है। इस अवसर पर बिना बारात के दोनों परिवारों के परिजन व संत रामपाल के अनुयायीं उपस्थित थे। इस शादी की चारों और चर्चा है।

नागौर जिले के बोरावड से भक्त दण्डवत करते पहुंचा रींगस भैंरोजी धाम

रींगस, (निसं)। नागौर जिले के मकराना से सटे बोरावड से एक भक्त अपने साथियों के साथ दण्डवत करते हुए शनिवार रात को भैरोजी धाम पहुंचे। बोरावड से रींगस की दूरी लगभग 140 किमी मीटर है जिसे दण्डवत करने में करीब दो माह का समय लगा । आज मंगला आरती में भैरोजी महाराज की पूजा अर्चना कर घर को रवाना हो गये।

- लगभग 140 किमी दूरी दो माह में दण्डवत कर पूरी की

भैरोजी के अटूट भक्त दुर्गा प्रसाद मेघवाल पुत्र ओमप्रकाश मेघवाल ने बताया कि वे बचपन से ही भैरोजी महाराज की भक्ति करते हैं। उनके मन में आया की सबसे बडे धाम रींगस में दण्डवत करते हुए पहुंचे। यह बात उसने अपने नौ अन्य साथियों को बताई। इसके बाद वे दो दरी लेकर दण्डवत करते हुए बोरावड से 23 मार्च को रवाना हो गये। दुर्गा प्रसाद मेघवाल अपने साथियो के साथ करीब आठ बजे शनिवार को रींगस पहुचे।

अलवर पुलिस ने 10 करोड़ का आईपीएल सट्टा पकड़ा

लग्जरी कारों में चलने वाले 4 सटोरिए दिल्ली से, एक अलवर से गिरफ्तार

अलवर, (निसं)। आईपीएल के सीजन में करोड़ों रुपए सट्टे से कमाने वाले 5 बड़े सटोरियों को अलवर पुलिस ने गिरफ्तार किया है, जिसमें 4 सटोरियों को दिल्ली से पकड़ा है। एक बिचौलिया अलवर के एनईबी का निवासी हैं। जिनके पास 3 लाख 10 हजार रुपए नकद , 30 मोबाइल व 3 लग्जरी कारें मिली हैं। बाकी लैपटॉप, चार्जर,राउटर सहित अन्य सामान जब्त किया है। खास बात ये है कि 5 में से 4 सटोरिए अलवर के हैं। जो दिल्ली में सट्टा चलाने के लिए वहां किराए पर रहते थे।

डीएसपी आदित्य पूनिया ने बताया कि परिवादी ने 21 मई को रिपोर्ट दी थी कि अलवर का हितेश नाम का व्यक्ति आईपीएल में सट्टा लगवाता है। उसने मुझसे 10 हजार रुपए लिए। दो मोबाइल नंबर 7701816973 व 6376612510 दिए। यह कहा था कि शाम के समय दिए गए मोबाइल नंबर पर कॉल कर सट्टे लगा लेना। लेकिन, शाम को कॉल किया तो इन नंबर पर बात नहीं हो सकी। इसके बाद परिवादी ने पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने पहले अलवर के एनईबी निवासी हितेश अग्रवाल को गिरफ्तार किया। उससे पूछताछ के आधार पर पुलिस दिल्ली के द्वारका तक पहुंच गई। इसके बाद पुलिस ने द्वारका से चार बडे सटोरियों को गिरफ्तार किया। जो दिल्ली में बैठकर सट्टा लगवाते हैं। पुलिस को मिली जानकारी के अनुसार ये सटोरिए एक सीजन में करीब 5 करोड़ रुपए सट्टे से कमाई करते हैं। इन पांच में एक दिल्ली का रहने वाला है। बाकी चार अलवर के हैं जो दिल्ली में रहकर सट्टा लगाते थे।

अलवर पुलिस ने डीएसपी पूनियां के निर्देशन में कार्रवाई कर आरोपियों को पकड़ा।

- 5 में से 4 सटोरिए अलवर के हैं जो दिल्ली में किराए पर रहते थे
- सटोरिए एक सीजन में करीब 5 करोड़ रुपए सट्टे से कमाई करते हैं
- पुलिस को 12 रजिस्टर मिले हैं उनमें करीब 10 करोड़ रुपए का हिसाब है

पुलिस को इन आरोपियों से 12 रजिस्टर मिले हैं। उनमें करीब 10 करोड रुपए का हिसाब मिला है। यह हिसाब आईपीएल के क्रिकेट मैच पर लगने वाले सट्टे का हिसाब है। इसके अलावा 3 लग्जरी कार मिली हैं।

देवेश भारद्वाज पुत्र रामचरण भारद्वाज निवासी मकान नंबर 43 भारत टाकीज के पीछे हाल फ्लैट नंबर 76 सेक्टर 10 द्वारका नई दिल्ली, चक्षु गर्ग पुत्र प्रदीप कुमार गर्ग मकान नंबर 49, रामनगर कॉलोनी 200 फीट रोड अलवर हाल फ्लैट नंबर 302 बजगेडा द्वारका दिल्ली, विक्रांत खंडेलवाल पुत्र जितेंद्र मोहन गुप्ता निवासी हाकीमजी की गली अलवर हाल मकान नंबर सी 28 राधेपुरी जगतपुरी दिल्ली, रोहित यादव पुत्र संजीव यादव निवासी मकान नंबर 180 वजीरपुर अशोक विहार दिल्ली हाल फ्लैट नंबर 303 न्यू पालम विहार सेक्टर 25, हितेश अग्रवाल पुत्र अशोक अग्रवाल एनईबी हाउसिंग बोर्ड को गिरफ्तार किया है।

'लिटरेरी डिवाइस एक कविता को अधिक निखार सकती हैं'

जयपुर। सिम्बल्स, मेटाफर्स, इमेजिस, ऑलिट्रेशंस, अल्यूज़ंस आदि जैसे लिटरेरी डिवाइस एक कविता में निखार लाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन डिवाइस के उपयोग से एक कविता को प्रभावी ढंग से विकसित किया जा सकता है।

यह बात जयपुर के कवि जगदीप सिंह ने जयपुर में आयोजित पिक अ बुक सेशन में अपने काव्य संकलन माई एपिटाफ पर चर्चा के दौरान कही। वे शिक्षाविद् प्रियंका जैन से बातचीत कर रहे थे। दोनों ने सिंह के संकलन की कुछ कविताओं पर चर्चा की।

कन्फेशनल कवि सिल्विया प्लैथ पर चर्चा करते हुए सिंह ने कहा कि कन्फेशनल कवियों के लिए विषयों पर कोई पाबंदी नहीं थी। उन्होंने अपने अंदर छिपी भावनाओं पर स्पष्ट रूप से लिखा। मानसिक बीमारी, आत्महत्या करने की इच्छा, मृत्यु, प्रेम-घृणा संबंध जैसे कुछ गंभीर विषय थे जिन पर उन्होंने कविताएं लिखी थी।

सिंह ने यह भी बताया कि कैसे वर्षों के साथ उनकी कविताओं में विकास हुआ। उन्होंने बाद में क्लब मेम्बर्स के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने यह भी बताया कि उनका नये कविता संग्रह में महामारी पर भी कई कविताएं हैं, जो कि जल्द ही प्रकाशित होंगी। गौरतलब है कि पिक अ बुक जयपुर के सिटी प्रेसिडेंट अक्षय गोयल हैं। इससे पहले रीजनल हेड, ऑपरेशंस, अंशु हर्ष की उपस्थिति में, पिक अ बुक क्लब के सेक्रेटरी वरुण भंसाली और कोषाध्यक्ष ऋतु शर्मा ने अपने संस्थान के उद्देश्यों के बारे में बताया।

कपड़ा चोर गिरोह के सरगना सहित चार बदमाश गिरफ्तार

जयपुर की मुहाना थाना पुलिस ने रविवार को कपड़ा फैक्ट्री में चोरी करने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार कर 1 हजार मीटर कपडे के 10 थान बरामद किये।

जयपुर,(कासं)। राजधानी की मुहाना थाना पुलिस ने रविवार को कपड़ा चोर गिरोह के सरगना सहित चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लाखों रुपए का कपड़ा और वारदात में काम ली गई कार बरामद की है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ करने में जुटी है, जिनसे कई खुलासे होने की संभावना है।

डीसीपी साउथ मृदुल कच्छावा ने बताया कि कपड़ा चोर गिरोह के सरगना धनराज मीणा (23) व बलराम मीणा (30) निवासी श्यारला सुखपुरा नगर टोंक और धर्मराज मीणा (22) निवासी टोकरावास दूनी टोंक व कैलाश मीणा (44) निवासी सपावड़ा नगर टोंक को गिरफ्तार किया है। अग्रवाल फार्म मानसरोवर निवासी डालचन्द ने 20 मई को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसकी कुमावतान की ढाणी में कपड़ा फैक्ट्री है। 19 मई की रात को फैक्ट्री का ताला तोड़कर चोर लाखों रुपए का कपड़ा चोरी कर ले गए। आरोपियों को पकड़ने के लिए थानाधिकारी लखन सिंह खटाणा के नेतृत्व में एएसआई प्रेमचन्द्र, हेड कांस्टेबल सत्यनारायण, कांस्टेबल हरदयाल, कानसिंह, रामलाल, रामावातर, नवीन और ओमप्रकाश की टीम बनाई गई। पुलिस टीम ने कपड़ा फैक्ट्री के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेजों को खंगाला। फुटेज में एक कार संदिग्ध दिखाई दी। रूट को चैक कर पुलिस टीम ने दबिश देकर आरोपी सरगना सहित चारों बदमाशों को दबोच लिया। उनके कब्जे से फैक्ट्री से चुराया 1 हजार मीटर कपड़े के 10 थान बरामद किए। पुलिस ने आरोपियों से वारदात में प्रयुक्त कार को भी जब्त किया है।

- **आरोपी दिन में काम मांगने के बहाने कपड़ा फैक्ट्रियों की रेकी करते थे**

पूछताछ में सामने आया कि आरोपी दिन के समय कपड़ा फैक्ट्री में काम मांगने जाते। इस दौरान फैक्ट्री में लगे सुरक्षा उपकरणों और आने-जाने वाले रास्तों की रेकी करते थे।

रात के समय कार से आकर चोरी की वारदात को अंजाम देते। फैक्ट्री से चुराया कपड़ा स्थानीय बाजार में कपड़ा व्यापार करने वाले दुकानदारों को सस्ते दामों में बेच देते थे।

अमृत महोत्सव पर क्रीड़ा भारती ने राष्ट्र वंदना यात्रा निकाली

जयपुर। क्रीड़ा भारती द्वारा स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में रविवार को अखिल भारतीय स्तर पर मोटरसाइकिल से "प्रदक्षिणा से राष्ट्रवंदना" यात्रा द्वारा माँ भारती की अर्चना की।

जयपुर प्रान्त में प्रदक्षिणा यात्रा सीकर से रेवाड़ी वाया जयपुर के बीच छह स्थानों सीकर, रींगस, चौमू, जयपुर, शाहपुरा, कोटपूतली से प्रात: 8:56 बजे एक साथ रवाना होकर लगभग 310 किमी की दूरी तय कर राष्ट्रवंदना की गयी।

उद्घाटन कार्यक्रम में भारत माता पूजन एवं राष्ट्रगान के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल सैनी, केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष चैतन्य कुमार कश्यप, राष्ट्रीय महामंत्री राज चौधरी का सन्देश सुनाया गया। जयपुर से गोपाल सैनी के साथ अर्जुन अवार्डी दीनाराम ने यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया।

नौकरी का झांसा देकर 70 हजार रुपये हड़पे

जयपुर। मालवीय नगर थाना इलाके में एक युवक से सरकारी नौकरी का झांसा देकर 70 हजार रुपये हडपने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस ने बताया कि गोनेर रोड निवासी मनराज ने इस्तगासे के जरिए मामला दर्ज करवाया है कि उसके परिचित रामस्वरूप एवं उसके दोस्तों ने नगर निगम में नौकरी का झांसा देकर जगतपुरा फाटक के पास 70 हजार रुपए लिए थे। पीडित का आरोप है रामस्वरूप ने ना तो रुपए लौटाए और ना ही नौकरी लगवाई।

दो शातिर मोबाइल चोर गिरफ्तार

जयपुर, (कासं)। राजधानी की मुहाना थाना पुलिस ने रविवार को मोबाइल चोर गिरोह का खुलासा करते हुए दो शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है।

- **चोरी के 7 मोबाइल बरामद**
- **पुलिस ने फुटेज के आधार पर दबिश देकर आरोपियों को दबोचा**

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी के सात मोबाइल बरामद किए गए है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

डीसीपी साउथ मृदुल कच्छावा ने बताया कि मोबाइल चोरी में आरोपी अजय खटीक (22) निवासी राजीव आवासीय योजना कीरों की ढाणी मुहाना और विनय मौर्य (22) निवासी गोविन्द नगर रामपुरा रोड मुहाना को गिरफ्तार किया है। आरोपी अजय खटीक के खिलाफ 3 और विनय के खिलाफ 2 प्रकरण मुहाना थाने में दर्ज है। उनके कब्जे से चोरी के 7 मोबाइल बरामद किए गए है। 27 अप्रेल को मुहाना मंडी में दुकान मोबाइल में चोरी हुई थी। मोबाइल चोरों को पकड़ने के लिए थानाधिकारी लखन सिंह नेतृत्व में एक पुलिस टीम का गठन किया गया। पुलिस टीम ने सीसीटीवी फुटेजों के आधार पर चालानशुदा दोनों अपराधियों को चिन्हित किया। शनिवार रात दबिश देकर दोनों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी नशा करने के आदी है। नशे के शौक को पूरा करने के लिए मोबाइल चोरी की वारदात करते थे। उन्होंने मोबाइल दुकान के साथ ही मुहाना मंडी में ट्रकों में सोते ड्राइवरों के भी मोबाइल चोरी किए है। चोरी किए मोबाइल को सस्ते दामों में बेच देते थे। पुलिस पूछताछ में कई अन्य खुलासे होने की संभावना है।

अपहरण व मारपीट के दो आरोपी गिरफ्तार

जयपुर,(कासं)। राजधानी की जवाहर सर्किल थाना पुलिस ने युवक के अपहरण और मारपीट के मामले में दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया गिरफ्तार आरोपी फूलचंद यादव उर्फ आदि यादव (25) निवासी गांव घिनोई, कालाडेरा और चेतन गुर्जर (28) निवासी गणेश विहार, मालवीय नगर है। पुलिस मामले में फरार दो आरोपी सिद्धार्थ और सुरेंद्र भाटी की तलाश में जुटी है। पुलिस ने बताया कि आपसी रंजिश के चलते आरोपी चेतन, सिद्धार्थ, आदि यादव और सुरेंद्र भाटी 3 मई की रात मालवीय नगर निवासी संजय सिंह उर्फ पिंटू का कार में अपहरण कर ले गए थे। बाद में गोल्डसुख मॉल के पास मारपीट कर छोड़ गए थे।

परशुराम कुंड तक रेल सेवा शुरू होगी

जयपुर। विप्र फाउंडेशन ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की ओर से परशुराम कुंड तक रेल सेवा विस्तार की घोषणा का स्वागत करते हुए आभार प्रकट किया है। शाह ने ये घोषणा पूर्वोत्तर राज्यो के दौरे के दूसरे दिन नामसाई में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए की।

होटल में किशोरी से दुष्कर्म

जयपुर,(कासं)। राजधानी के करधनी इलाके में स्थित एक होटल में किशोरी से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया इलाके निवासी महिला ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि 22 मई को बिजु सैनी उसकी 16 वर्षीया बेटी को एक होटल में ले गया। जहां उसे जबरन शराब पिला दी और उससे दुष्कर्म किया। पुलिस जांच में कर रही है। वहीं दूसरी ओर मानसरोवर थाने में 28 वर्षीया युवती ने मामला दर्ज कराया है कि फेसबुक पर उदित चौधरी से जान पहचान हुई थी। जून 2016 में उदित ने स्वर्ण पथ पर किराए से रूम ले लिया। युवती ने अपने पति से तलाक के केस चलने की बात उसे बता दी थी। पीड़िता का आरोप है कि उदित उसे एक बार होटल में ले गया, जहां कोल्डड्रिंक में शराब पिला दी और नशे की हालात में उससे दुष्कर्म किया। इसके बाद से वह लगातार उसका देहशोषण कर रहा है। आरोपी अब शादी से इंकार कर दिया। मुरलीपुरा थाने में भी शादी का झांसा देकर देहशोषण का मामला सामने आया है। 22 वर्षीया युवती ने रिपोर्ट दी है कि विजय कुमावत चार साल से लगातार शादी का झांसा देकर देहशोषण करता आ रहा है।

ऑनलाइन पेंमेट का लिंक भेजकर ठगी

जयपुर। मालवीय नगर थाना इलाके में एक महिला को ओएलएक्स पर फर्नीचर बेचने का विज्ञापन डालना उस समय महंगा पडा गया, जहां एक ठग ने सौदा तय कर ऑनलाइन पेमेंट भेजने की कहकर लिंक भेजा। बताया जा रहा है कि जैसे ही पीडिता ने लिंक को स्कैन किया तो खाते से एक लाख 29 हजार रुपये की नकदी निकल गई। मोबाइल पर आए मैसेज के बाद पीडिता थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने बताया कि मॉडल टाउन निवासी भावना ने मामला दर्ज करवाया है कि उसने ओएलएक्स पर फर्नीचर बेचने के लिए एक विज्ञापन डाला था। जहां एक ठग ने चार हजार रुपए में सौदा तय कर ऑनलाइन पेमेंट भेजने की कहकर लिंक भेजा, जिसे स्कैन करने के बाद पीडिता के बैंक खाते से 1 लाख 29 हजार रुपए निकल गए। पुलिस मोबाइल नम्बरों के आधार पर ठग की तलाश में जुटी है।

सार-समाचार

निःशुल्क चिकित्सा व परामर्श शिविर

जयपुर, (का.सं.)। प्राकृतिक चिकित्सा एवम सुजोक थैरेपी अपनाने हेतु लोगों को जागरूक करने के लिए हेल्थ एजुकेशन एवं लव फ़ॉर पीपल सोसायटी,व संग अर्श सामाजिक सेवा समिति द्वारा समाज निःशुल्क चिकित्सा एवं परामर्श कैम्प लगाया गया। डॉ. दीपाली वार्ष्णेय अग्रवाल ने बताया कि करोना महामारी के वक़्त प्राकृतिक चिकित्सा बहुत ही कारगर रही। बढ़ते प्रदूषण के कारण बार बार ऐसी स्तिथि ना आये इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा को अपनाएं, प्रकर्ति के करीब आएं,। डॉ दीपाली ने साथ ही लोगों को सुजोक थेरेपी भी दी,काफी ज्यादा संख्या में लोगों ने कैम्प में आकर लाभ प्राप्त किया। हेल्प्स के अध्यक्ष प्रशांत चतुर्वेदी व,संग अर्श के अध्यक्ष दीपक सिंघल ने बताया कि उन्होंने एक जागरूकता अभियान शुरू किया है। इसके तहत वो पूरे जयपुर मे हर वार्ड में ऐसी कैम्प लगाएंगे और लोगों को प्राकतिक चिकित्सा अपनाने के लिए जागरूक करेंगे। इस मिशन में इनकी पूरी टीम प्रशांत गुप्ता,नेहा, निशिकांत गुप्ता,रेणु श्रीवास्तव,आयुष शर्मा,आशीष सोनी,दिव्यम अग्रवाल,तनिष्क अग्रवाल ,डॉ. कुलदीप ,पंकज सैनी,सहयोग कर रहे हैं। कैम्प्स की इस कड़ी मे ये दूसरा कैम्प है जो गुरुद्वारा गुरुसिंह सभा ,गोविंद मार्ग ,राजापार्क में रखा गया। साथ ही प्रकृति के करीब कैसे रहें व दिनचर्या कैसी होनी चाहिए इसके बारे में जानकारी दी।

लालरपुरा में सड़के बनेंगी

जयपुर । झोटवाड़ा क्षेत्र के वार्ड 56 में गांधी पथ पश्चिम लालपुरा 200 फीट रोड से वैशाली स्टेट एवं मान पैलेस तक स्वीकृत सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ रविवार को वैशाली नगर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अशोक शर्मा, कांग्रेस प्रत्याशी सीता रघु, संगठन महामंत्री रतन चोपडा, कर्नल सुधीर गुप्ता, कर्नल अजय मुद्गुल और राजेश अलवानी ने किया। ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अशोक शर्मा ने कहा कि कृषि मंत्री लालचंद कटारिया की अनुशंसा पर यह सड़क बनकर तैयार हुई है, इससे आमजन को आवाजाही में काफी मदद मिलेगी। इस अवसर पर जेठाराम रिणवा रिटायर्ड आईएएस, रामजीलाल जालब विशाल गर्ग, जेएल बक्शी, विद्याधर जंग , अंकित कपूर, झुंथाराम यादव,ओम चौधरी, महेश शर्मा, सुमित गुप्ता, राहुल जैन,उत्तम यादव, पहलाद रघु, आनंद सिंह खेड़ी, राजेश कटारा,सुनिल घौसल्या, राकेश जाजोरिया, अर्जुन उज्जैनिया, मोहित जैन, सुरेश ब्रह्मभट्ट, कृष्ण यादव, अमरचंद मंडावरा, दीपक चौधरी, कानाराम भाकर, गुलाराम चोपड़ा, जगदीश चोपड़ा, विनीत चौधरी, रणजीत सोनी, छोटूराम खोजा, रामनिवास शर्मा, रामेश्वर नेटवाल, प्रेम शर्मा, देवीलाल कासोटिया, श्रवण कड़वासरा जगदीश सामोता उपस्थित रहे।

धार्मिक जैन शिक्षण शिविर का आयोजन

जयपुर । दिगंबर जैन महासमिति महिला अंचल के सानिध्य में त्रिशला संभाग दुर्गापुरा के द्वारा श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर में ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविर का 15 मई से 25 मई तक आयोजन किया जा रहा है। अध्यक्ष चन्दा सेठी एवं सचिव रेणु पांड्या एवं कोषाध्यक्ष रानी सौगाणी ने संयुक्त रूप से बताया कि वर्षा अजमेरा, रेखा पाटनी, छवि जैन एवं शान्ता मणि द्वारा शिविर का संयोजन किया जा रहा है श्रमण संस्कृति संस्थान के प्रकाण्ड शिक्षक पंडित सतीश शास्त्री एवं दीपक शास्त्री एवं समाज की महिला शिक्षिकाएं मुन्ना छाबड़ा, रिन्कु सेठी, सविता सौगाणी एवं सीमा सेठी शिक्षण में अपना सहयोग प्रदान कर रहे है । कक्षाएं मौखिक, प्रथम भाग, द्वितीय भाग, छह ढाला एवं तत्वार्थ सूत्र की चल रही है, जिसमें समाज के 125 बच्चे, युवा एवं बुजुर्ग धर्म के मर्म को जानने का प्रयास कर रहे है। प्रतिदिन समाजश्रेष्ठी गण बच्चों को पारितोषिक प्रदान कर पुण्य अर्जित कर रहे हैं। 22 मई के पुण्यार्जक कर्ता परिवार रूक्मणी देवी, जैन बैंकर्स के भागचंद जैन, मनोरमा, आशीष, आशिका एवं अधीश जैन है।

योग शिविर का आयोजन

जयपुर । उत्तर पश्चिम रेलवे राज्य भारत स्काउट एवं गाईड द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में अरावली क्लब, गणपति नगर रेलवे कॉलोनी, जयपुर के फ्रंट लॉन में आर्ट ऑफ लिविंग की ओर से योग एवं ध्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। मीडिया कोऑर्डिनेटर आभा पाराशर ने बताया कि कार्यक्रम में आर्ट ऑफ लिविंग के वरिष्ठ योग प्रशिक्षक अभिषेक सोती ने मौजूद को योग, प्राणायाम एवं ध्यान कराया। योग सिखाते हुए योग के नियमित अभ्यास होने वाले लाभ के बारे में अवगत किया। कार्यक्रम में उत्तर पश्चिम रेलवे राज्य के वरिष्ठ अधिकारी डॉ.प्रशांत कुमार समंतराय, दिनेश कॉल, विनोद शेखावत और आर.के. शर्मा ने भी योग की बारीकियां सीखी और आर्ट ऑफ लिविंग के शिविर को सराहा। गौरतलब है की स्वस्थ भारत का सपना लेकर संस्था के स्वयंसेवक योग के प्रचार प्रसार में कार्यरत है। आर्ट ऑफ लिविंग की ओर से अभिषेक सोतीजी के साथ राशिश पाराशर, ममता शर्मा एवम ऋतु कॉल भी उपस्थित रही।

व्यापारी पर हमला कर बाइक सवार बदमाशों ने पांच लाख रुपए लूटे

जयपुर, (कासं)। राजधानी के जवाहर नगर इलाके में शुक्रवार को बाइक सवार बदमाश एक व्यापारी पर लोहे की रॉड से हवार कर पांच लाख रुपए से भरा लूट फरार हो गए। पीड़ित ने इस संबंध में रविवार को थाने में मामला दर्ज कराया है। पुलिस आरोपियों को पकड़ने के लिए इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

थानाधिकारी पन्ना लाल मीणा ने बताया कि जवाहर नगर निवासी हरीश बठीजा (65) की जौहरी बाजार में हरी एंटरप्राइजेज के नाम से दुकान है। वह मनी एक्सचेंज का काम करता है। 20 मई की रात वह दुकान बंद कर स्कूटी से घर के लिए निकला था।

उसने करीब पांच लाख रूपए से भरा कलर का बैग स्कूटी की डिग्गी में रख लिया था। रास्ते में रात करीब पौने दस बजे जैन मंदिर के सामने वाली गली में मुंह पर कपड़ा बांधे हुए बाइक सवार तीन लोग आए। उन्होंने पीड़ित को उसकी स्कूटी के आगे बाइक लगाकर रोक लिया। इस दौरान आरोपियों ने उसके सिर पर लोहे की रॉड से बार कर दिया और स्कूटी की डिग्गी में रखा नकदी से भरा बैग लेकर फरार हो गए।

- **जवाहर नगर इलाके में जैन मंदिर के पास की घटना**

पुलिस ने बताया कि वारदात में शामिल लोग पीड़ित के परिचित हो सकते हैं। आरोपियों ने पूरी रैकी के बाद वारदात को अंजाम दिया गया था।

जिस जगह पर लूट की वारदात की गई वहां सीसीटीवी कैमरे नहीं लगे हुए थे। पुलिस आसपास के इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालकर आरोपियों का पता लगाने में जुटी है।

रघुनाथ विहार-ए के लोगों को मिलेगा शुद्ध पेयजल

जयपुर। शहर के सिरसी रोड पर स्थित आवासीय कॉलोनी रघुनाथ विहार-ए के लोगों को भी अब शुद्ध पेयजल मिल सकेगा। प्रचंड गर्मी को देखते हुए वार्ड 48 की पार्षद कुमकुम शक्तावत ने इस कॉलोनी में बोरिंग करवाया हैं।

भाजपा नेता शक्ति सिंह मानपुरा ने बताया कि पार्षद कुमकुम शक्तावत ने इससे पहले भी अमृत नगर, अशोक विहार, अमर नगर, राम विहार, कैलाश विहार, पश्चिम विहार, वैशाली सिटी और रघुनाथ विहार-डी कॉलोनी में भी बोरिंग कराया हैं। लोगों को पेयजल मुहैया करवाने की इस मुहिम में पूर्व यूडीएच मंत्री राजपाल सिंह शेखावत का सहयोग मिला हैं। बोरिंग के उद्घाटन के अवसर पर दीपा ग्रोवाल, सरोज कंवर, लाड कंवर, पूजा कंवर, प्रियंका शेखावत, विमला कंवर, रणवीर सिंह, ओम, राजाराम सिंह, कर्ण सिंह, विक्रम सिंह व समस्त कॉलोनी वासी मौजूद रहे।

मौसम विभाग ने दिया चार जिलों में ओले गिरने का अलर्ट

जयपुर, (का.सं.)। भीषण गर्मी के बाद प्रदेश में एक्टिव हुए नए वेदर सिस्टम (वेस्टर्न डिस्टरबेंस) की वजह से आंधी के साथ बारिश हो रही है। नया वेदर सिस्टम प्रदेश में अगले 48 घंटे तक एक्टिव रहेगा। इससे जयपुर समेत राजस्थान के कई जिलों में आंधी के साथ बारिश की संभावना है। अगले 24 घंटे में 4 जिलों में ओले गिरने की भी चेतावनी है।

जयपुर मौसम केंद्र के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि पाकिस्तान से एक्टिव हुए नए वेस्टर्न डिस्टरबेंस का असर राजस्थान में शुरू हो गया है। इससे जयपुर, उदयपुर, कोटा, भरतपुर और अजमेर संभाग में अगले 48 घंटों तक आंधी के साथ बारिश होगी। शर्मा ने बताया कि नए वेस्टर्न डिस्टरबेंस का सबसे ज्यादा असर प्रदेश के जयपुर, अलवर, भरतपुर, बूंदी, बारा, धौलपुर, दौसा,करौली, सवाई माधोपुर, टोंक, कोटा, चूरू, नागौर, श्रीगंगानगर, पाली, बीकानेर और जोधपुर में नजर आएगा। यहां अगले 24 घंटों में ही 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से तेज हवा चल सकती है। इस दौरान अलवर, भरतपुर, धौलपुर और दौसा में ओलावृष्टि की भी संभावना है।

- **50 से 60 किमी की रफ्तार से चलेंगी हवाएं**

शर्मा ने बताया कि प्रदेश के तापमान में 3 से 5 डिग्री तक तापमान में गिरावट हो सकती है। यह दौर मंगलवार तक जारी रहेगा। 24 मई के बाद प्रदेश में एक बार फिर मौसम शुष्क रहेगा। ऐसे में 25 मई से नौतपा शुरू होने के साथ ही प्रदेश में तापमान एक बार फिर 45 डिग्री को पार कर सकता है।

स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक का स्थापना दिवस मनाया

जयपुर के मिलाप नगर स्थित स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक का 28 वां स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

जयपुर। राजस्थान प्रदेश में स्वैच्छिक एवं सुरक्षित रक्तदान 100 प्रतिशत हो जिससे जरूरत के वक्त एवज में रक्तदान ना करना पडे। वे रविवार को मिलाप नगर स्थित स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक के 28 वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे।

ब्लड बैंक के मैनेजिंग ट्रस्टी और राजस्थान अस्पताल के चेयरमैन डॉ. एस. एस.अग्रवाल ने बताया कि प्रत्येक पुरुष एवं स्त्री स्वयं एक बैंक है जिसमें जमा नहीं करवाना पड़ता परंतु देने के लिए हमेशा उपलब्ध रहता है। उन्होंने कहा है कि स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक की 27 वर्ष की यात्रा में स्वैच्छिक रक्तदाताओं का अपार स्नेह वह सहयोग रहा है जिसके लिए मैं सदैव उनका आभारी रहूंगा।

उन्होंने बताया कि मेरे पिताजी ने 1980 में अपने माता पिता की स्मृति में पूरणमल फूला देवी मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना जिस उद्देश्य के साथ की थी, मुझे संतोष है, हमने उस उद्देश्य को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। राजस्थान के निजी क्षेत्र के प्रथम ब्लड बैंकने आरंभ से ही सभी जरूरतमंदों को बिना एवज के रक्त उपलब्ध कराया है।

समारोह के अतिथि जयपुर के सांसद रामचरण बोहरा एवं जयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त रवि जैन ने लोकार्पण किया।

जयपुर के सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि रक्त हर जरूरतमंद के लिए संजीवनी है। इसलिए रक्तदान के क्षेत्र में काम करने वाला हर व्यक्ति देव रूप से कम नहीं है जो रक्त की आपूर्ति से उसे नया जीवन प्रदान करता है। रामचरण बोहरा ने पिछले 27 वर्षों में 10 लाख लोगों को रक्तदान करवाने के लिए आभार व्यक्त किया।

उन्होंने बताया कि डॉ. अग्रवाल गुणवत्ता से कभी कोई समझौता नहीं करते। उन्होंने कहा कि मैं आशा करता हूं कि रक्त संठाहण केंद्र रक्त की गुणवत्ता में मील का पत्थर साबित होगा।

पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी को सूचना भेजने वाला सेना का जवान रिमांड पर

जयपुर। राजस्थान इंटेलिजेंस की राज्य विशेष शाखा ने पाकिस्तानी हैंडलिंग एजेंसी को भारतीय सेना से सम्बधित गोपनीय सूचना भेजने के मामले में गिरफ्तार सेना के जवान को कोर्ट में पेश कर पूछताछ के लिए दो दिन के रिमांड पर लिया है।

सेना के जवान प्रदीप कुमार(24) निवासी रुडकी उत्तराखंड को को जोधपुर से शासकीय गुप्त बात अधिनियम 1923 के तहत मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया था। उसे जयपुर में महानगर मजिस्ट्रेट प्रथम के न्यायालय में पेश किया गया। जहां इस मामले से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी के बारे मे पूछताछ के लिए आरोपी को दो दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक इन्टैलीजेन्स उमेश मिश्रा ने बताया कि आरोपित सेना के जवान प्रदीप कुमार द्वारा पाक हैण्डलिंग अफसर को भेजी गई सूचनाओं के संबंध में समस्त आसूचना एजेंसियों द्वारा जानकारी हासिल की जा रही है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि आरोपित प्रदीप के अलावा इस पाकिस्तानी एजेंट ने कई और आर्मी अफसरों को फंसाया है, क्योंकि उसने प्रदीप की मदद लेकर कई भारतीय फोन नंबर्स का एक्सेस लिया है।

- **पुलिस ने आरोपी को जयपुर में महानगर मजिस्ट्रेट प्रथम के न्यायालय में पेश किया।**

इंटेलिजेंस को आशंका है कि पाकिस्तानी एजेंट होने के नाते वह इन नंबरों का उपयोग अन्य आर्मी अफसरों को फंसाने में करती होगी। मिलिट्री इंटेलिजेंस और राजस्थान इंटेलिजेंस सहित कई एजेंसियों द्वारा आरोपित प्रदीप से पूछताछ में लगी है। सम्भवत पूछताछ में कई अन्य चौकाने वाले खुलासा हो सकते है। गौरतलब है कि राजस्थान इंटेलिजेंस की राज्य विशेष शाखा ने शनिवार को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी की महिला एजेंट के हनीट्रैप में फंस कर सोशल मीडिया के माध्यम से निरंतर संपर्क में रहकर सामरिक महत्व की सूचनाएं साझा करने के आरोप में भारतीय सेना की अति संवेदनशील रेजीमेंट जोधपुर में कार्यरत सैन्य कर्मी प्रदीप कुमार (24)निवासी रुडकी उत्तराखंड को गिरफ्तार किया था।

पुष्पेंद्र शर्मा पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

जयपुर। अजमेर रोड स्थित पेट्रोल पंप वाले बालाजी सेवा समिति के हुए चुनावों में समिति ने सर्व सम्मति से निर्णय लेते हुए पुष्पेंद्र शर्मा को पुन: 2022-2024 तक के लिए निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया है। निर्वाचन के लिए हुई बैठक में पवन सोनी, दिलीप डाबी, दीपक सैनी, सुभाष मोरवाल, लालचंद डाबी, पं मुकेश शास्त्री, राकेश जोशी, सतीश डाबी, अजय सिंह सोलंकी, मनोज शर्मा, मोहित शर्मा, दीपक बागडा, हितेष शर्मा, विष्णु प्रकाश शर्मा उपस्थित थे।

गीता कॉन्टेंस्ट में प्रतियोगियों ने दिखाया उत्साह

हरे कृष्णा मूवमेंट की ओर से रविवार को जयपुर में गीता कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया।

जयपुर। गीता कॉन्टेंस्ट प्रतियोगिता का आयोजन रविवार को पूरे देश भर में हुआ जिसमें हजारों विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। हरे कृष्ण मूवमेंट राजस्थान के अध्यक्ष अमितासन दास ने बताया कि प्रतियोगिता में ऑनलाइन प्रतिभागी देश के प्रमुख शहरों से अपना परीक्षा घर बैठे ऑनलाइन दिया जबकि ऑफलाइन प्रतियोगिता का चयन करने वाले प्रतिभागियों के लिए जयपुर, उदयपुर एवं भगवान कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा में रविवार सुबह परिक्षा आयोजित की गई जिसमें सैकड़ो विद्यार्थी शामिल हुए। जून के प्रथम सप्ताह में परिणाम घोषित किये जायेंगे एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरण 26 जून को श्रेणी के आधार पर नकद पुरस्कार दिए जायंगे। सिद्ध स्वरूप दास ने बताया कि गीता कॉन्टेस्ट सीनियर कैटेगरी प्रथम पुरस्कार गीता रत्न विजेता को 25 हजार द्वितीय पुरस्कार गीता भूषण को 11000 हजार का तृतीय पुरस्कार गीता को 11000 हजार दिया जायेगा। साथ ही विशेष आकर्षक ट्रॉफी एंड सर्टिफिकेट दिए जायेंगे। कॉन्टेस्ट में टॉप 10 रैंक में आने वाले प्रतियोगियों को 1100 रुपए सांत्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। देश की प्रतिष्ठित सॉफ्टवेयर कंपनी में सीनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर राजवीर सिंह ने बताया की गीता में सीखने के लिए बहुत कुछ है परीक्षा देना भी हमारे लिए एक बेहतर अवसर है। जीवन के हर एक पहले तो आने वाली समस्या का समाधान गीता में दिया है। जयपुर की कोमल शर्मा ने गीता कॉन्टेंस्ट ऑनलाइन भाग लिया, उन्होंने बताया। कि गीता को पढ़ने के बाद कई कंसेप्ट क्लीयर होते हैं। गीता कांटेक्ट के शुभारंभ में अक्षेन्द्र वेलफेयर सोसायटी के सचिव नरेंद्र रावत एवं प्रतियोगिता के संयोजक सिद्ध स्वरूप दास उपस्थित रहे। नरेंद्र रावत ने कहा गीता जीवन का व्यावहारिक पक्ष है बगैर गीता ज्ञान के जीवन अधूरा है आज गीता विद्यार्थी के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इस कार्य में हरे कृष्ण मूवमेंट का सहयोग भारतीय सभ्यता संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में बड़ा माध्यम है।

ARBiT
it happens here...

World Turtle Day

We hear about them in parables of being slow and plodding, steady and methodical. We are, of course, talking about Turtles! Turtles are a type of reptile that exists in many environments throughout the world and have found their way into literature, poetry, and parable down the timeline. World Turtle Day celebrates these noble reptiles and encourages people to take action to help protect both the common pet turtle and the ever endangered sea turtle.

राष्ट्रदूत
MONDAY
23 May 2022
A-B

Most people want to have a say in how their body will be treated after they pass away. The author too had an important realization about his end when he visited the mummy of Ramesses II, who despite being a powerful king in his time ended up in a museum with thousands of people gaping at his mummy every-day.

I Have My Own Way To Be Remembered

Mummy kept in Jaipur museum.

Shravan Murlidhar
Presented by Shailaza Singh

Some years back, Jaipur's Albert Hall Museum was flooded in mid-August, requiring the evacuation of an Egyptian mummy that is among its prize exhibits. Important documents and artefacts were damaged but luckily, the 2,300 year-old mummy, one of six in India, was lifted out of its display box in time and moved to higher ground. The mummy was first brought to India in 1883 for an exhibition in Jaipur as a gift by Brughsch Bey, the then curator at the Museum of Cairo, to Sawai Ishwar Singh, the ruler of Jaipur at the time. The Egyptian mummy named Tutu was from a family of priests who were devotees of Kehm in Egypt's Penopolis. Tutu was a teenaged girl belonging to the Ptolemaic dynasty, the last dynasty of ancient Egypt that lasted from early 300 BCE to 30 BCE. It is one of the six mummies in India. The others are in Kolkata, Lucknow, Mumbai and Hyderabad.

Rain Rain Go Away!

The monsoon is conservation's scourge. Describing India's weather in his memoirs, the Mughal emperor Babur wrote: "During the rainy season, the weather is unusually good when the rain ceases.... The one drawback is that the air is too humid.... Bows cannot be used to shoot or they are ruined. Armour, books, bedding and textiles are also affected. Buildings do not last long either."

#MY WAY

Mummies all Around

Mummification generally demands aridity, though tissue can be protected by the acidic water of bogs and by chilly permafrost. Bodies preserved for millennia are found mainly in the world's driest regions, places like the Sahara, Atacama and Taklamakan deserts. They are found above all in Egypt, where the practice of mummification reached a peak of sophistication. The Egyptians mummified not just kings and high-ranking officials but millions of cats, dogs, ibises, cobras and crocodiles. Mummies were so commonly found in Egypt by 19th and 20th century archaeologists that their distribution to museums around the world caused no great loss to the parent culture.

Although I had seen a number of such artefacts before my first (and thus far only) visit to Egypt, viewing mummies with their faces exposed in a Cairo gallery catalysed an important personal decision: It resolved my uncertainty regarding how my corpse would be disposed off when the time arrived. In this year of the pandemic, with the shadow of disease and death hanging constantly over us, news of the Albert Hall mummy brought that moment of decision back to me.

Afterlife Thought

I do not believe in an afterlife and therefore the funeral rituals are designed to help us grab congenial spots in the hereafter. Since the dead can have no interests, perhaps it should not matter at all how my cadaver is dealt with. An opposing viewpoint, which I can share, is that life has a justifiable stake in its treatment following death, arising from a legitimate concern about how one will be remembered.

I was tempted for many years to sign on for organ donation. What held me back was a lack of trust in our system to conduct a dignified procedure that would save family members' additional trauma. The obvious second option was cremation. There is an electric crematorium at a walking distance from my home, where I have witnessed the final rites of a number of family members and friends. Sadly, it is a dispiriting place, lacking all solemnity and grace.

Those are words I associate with funerals I have attended in churches, where architecture, ritual and speech combine to endow the occasions with poignancy. I have also found grace and solemnity in the Shia Kabristan, where many of my family members are buried. Entering the aptly named Arambagh graveyard from a typically busy street in central Mumbai, one is transported into a tranquil, tree-filled space which feels far away from the bustle just left behind. Each year, on a day called Shab-e-barat, members of the community visit the final resting places of loved ones, water their graves and say prayers at the graveside. It is a wonderful way to keep alive memories of the departed.

The churchyard and kabristan are, however, unavailable to resolute unbelievers like me. And so it was that, approaching my 30th year, still confused about the issue, I walked into the royal mummy rooms of the Egyptian Museum in Cairo's Tahrir Square, having paid extra for the privilege of seeing men and women who had died thousands of years ago, laid out on slabs for examination by visitors.

Among them was Ramesses II or Ramesses the Great, one of the history's most prolific builders; perhaps the world's most powerful man in 13th century BCE. A monarch identified by many Jews, Christians and Muslims as the villainous Pharaoh who opposed Moses, and the ruler who inspired Percy Bysshe Shelley's famous sonnet, Ozymandias. The poem tells of a colossal statue lying shattered in the middle of the desert, mocking the pretensions of the king who commissioned it. Many damaged statues of Ramesses the Great had been found in Egypt by the time Shelley published Ozymandias in 1818, but a greater mockery of the emperor was yet to come.

The riches of the Theban necropolis that held the pharaohs' tombs always attracted thieves, and the burial chamber of Ramesses II was pillaged not long after his death. His mummy, along with dozens of others, was restored and shifted to the tomb of a high priest, with an account of the restoration inscribed in the mummy's linen wrapping. Three thousand years later in 1881 authorities following the trail of unusual antiquities that had appeared in the market arrested a grave robber named Abd el Rassul, who led them to the high priest's tomb and its cache of mummies. Many of these now lie beside Ramesses the Great in the Egyptian Museum.

Contrasting Circumstances

Those individuals might have feared having their graves desecrated but surely they could not have imagined being plucked from their resting places to be placed in a room where travellers who had arrived in flying machines from all parts of the world would gawk at their uncannily lifelike faces. The indignity of their present circumstance contrasts sharply with what they wished for themselves but since nobody any longer shares their belief system, no activists demand their reburial.

While most of my mind connected present with past during the walk through the mummy room, a part linked present with future. We can no more predict the value systems and technological capacities of humans who will be alive 300 years from now like the Egyptians who lived 3,000 years ago who could predict ours. We have no idea what they will be capable of doing with our physical remains, and it is possible they will manipulate and use them in ways we shudder to contemplate.

The more I pondered over this fact, the clearer it became to me that I want no part of those future experiments. Where the Egyptians sought to preserve the body forever, I choose to obliterate it. Since the surest route to oblivion is through incineration, I have settled on the default option I had long resisted. It is the furnace for me, though I hope not for a while yet.

writetoarbit@rashtradoot.com

I was tempted for many years to sign on for organ donation. What held me back was a lack of trust in our system to conduct a dignified procedure that would save family members' additional trauma. The obvious second option was cremation. There is an electric crematorium at a walking distance from my home, where I have witnessed the final rites of a number of family members and friends. Sadly, it is a dispiriting place, lacking all solemnity and grace.

Those individuals might have feared having their graves desecrated but surely they could not have imagined being plucked from their resting places to be placed in a room where travellers who had arrived in flying machines from all parts of the world would gawk at their uncannily lifelike faces. The indignity of their present circumstance contrasts sharply with what they wished for themselves but since nobody any longer shares their belief system, no activists demand their reburial.

#GUINNESS-ALERT

World's Largest Scotch Egg

Notably, the dish saw Leigh use the largest egg from their collection, a 1.7 kg ostrich egg, along with vegetarian outer ingredients like peas, cheddar cheese, sage and onion, breadcrumbs as well as various seasonings.

A UK chef has registered a Guinness World Record for creating the world's largest Scotch egg with a vegetarian outer layer. Can you guess the size? According to the records site, it weighs a whopping 8.341 kg (18 lb 5 oz).

For the unversed, the Scotch egg is known to be a British snack which consists of a hard-boiled egg enclosed in sausage meat, rolled in breadcrumbs, and fried.

The chef Leigh Evans who works for the egg supplier Clarence Court based in Lacock, Wiltshire, took it upon himself to 'demonstrate the versatility of their eggs, creating his own recipe of a pea, mint and cheddar Scotch egg'.

Notably, the dish saw Leigh use the largest egg from their collection, a 1.7 kg ostrich egg, along with vegetarian outer ingredients like peas, cheddar cheese, sage, onion, breadcrumbs as well as various seasonings. The ingredients were all premixed and made into a paste using a food processor.

It was then wrapped around the ostrich egg. Then the whole piece was wrapped in cling film and placed in a blast-chiller, to assist in making it robust enough to be safely handled without falling apart, the website reported.

After 30 minutes, it was rolled in semolina and liquid egg, and rolled in panko breadcrumbs.

It was then placed in a tray of pre-heated sunflower oil, basted and placed into the oven for 26 minutes. Next, it was weighed by an independent qualified surveyor. To check that the thickness of the vegetarian outer layer did not exceed the width of the egg as per the Guinness guidelines, the egg was cut in half.

"This was a first for me, having not created anything so large in my cooking career! I always enjoy a challenge, and this was one that I really did enjoy doing. I am delighted to have broken a Guinness World Record (title) and have had enormous fun creating this much-loved picnic staple but glad I got lot of practice in it before the judging day!" Chef Leigh told the records site.

After measurement and the certificate presentation, the Scotch egg was taken to the onsite staff restaurant where it was consumed by Clarence Court employees.

#INSIGHTS

Of Premiums, Patience & Persistence

LIC has been charting the business headlines owing to its latest IPO. Take a little breather from the wearisome numbers, as Arbit brings to you insights straight from the unsung heroes of LIC.

Tusharika Singh
Freelancer writer and city blogger

Be your own boss, work for as many hours as you want and make as much money as you can dream of! Doesn't it sound too utopian? Well, it is not that hard to achieve if you are an LIC Agent. Even though this profession might seem 'so yesterday' to some but for those who have been in this trade for over a period of time swear by it as the best line of work there can ever be. As of 31 March 2021, LIC had a whopping 1.35 million individuals in its agent network compared with 1.1 million individuals for the entire private life insurance industry. However, there is no denying that the number of LIC Agents is now significantly going down. Arbit spoke to some LIC Agents from the city to find out what led them to be in this field, the challenges they face the impact of sale of insurance policies online, the reasons for high attrition in the industry and their tips for new entrants.

"After being an agent for two decardes, now I am also training my daughter to become one": Hukam Singh

"Patience, networking and relationship building are extremely essential when it comes to becoming a successful LIC Agent," advises Hukam Singh (55), who has been in this field for two decades and is now also training his 25-year-old daughter to become an agent. Attending international meets and seminars is also something that one should invest in as it acquaints the agents with innovative ways of expanding their business, he adds.

Sharing his views on how LIC can work on retaining its agents, he says: "Trainings and seminars at regular intervals might help. The private insurance companies also give perks to the agents who help in keeping them motivated."

"LIC carved my path to an audi from a bicycle": Vimal Saxena

"I have 7 other siblings and unlike them I was not good in studies. My family was always concerned about what I would do in life. My objective was to create an identity for myself and carve a career path that would let me buy whatever I wanted. Being a LIC agent has not only given me financial freedom but it also earned me immense respect," says Vimal Saxena (66), an LIC agent who primarily deals with NRIs and bureaucrats. When Saxena started this profession back in 1986 he used to commute on a bicycle. Today he has a chauffeur driven Audi and has travelled across the globe to attend LIC meetings and has no qualms in sharing this success story with people around him.

Ask him what made him choose this profession and he says: "There is absolutely no investment and the customer is available everywhere – right from a paan shop to a corporate office. Even during Covid-19 pandemic when people were facing huge losses in their business, my work was only expanding."

A target-led career plan, honesty in work and refraining from over-promising when making new clients are the ideals which Saxena suggests for new entrants in this field. "If the LIC agents are given the same regard and honour as is meted out in the private sector, it would be hugely motivating," he adds.

"After 20 years of being an accoutant, I decided to become an LIC agent": Ranjeet Jha

A senior accountant by profession who has an experience of working with clients with annual businesses of over INR 500 crores, Ranjeet Jha decided to become an LIC agent at the age of 43. "In addition to earning some extra bucks, being an LIC agent enables me to help people around me to choose the right policy for them and secure their future. Even though at times people do not treat us appropriately and try to avoid us but the merits of this profession far outweigh the disadvantages," says Jha.

Commenting on the high attrition rate of LIC agents, Jha adds: "The reason for the high attrition is that in the first year, the commission earned by the agents is high. At that time the profession appears to be lucrative but with time one needs to keep expanding their customer base to grow in this sector. This is a difficult task which requires strong communication skills and good understanding of the product and at this point, instead of being patient, people often leave."

"LIC is synonymous with insurance": Parminder Singh Chadha

"LIC has been around for a long time now and today it has become such a force to reckon with that it is almost synonymous with an insurance policy.

The trust that people have in LIC agents is remarkable. Even though people may use the internet to cross check information about a desired policy, they still go for agents as their after-sale services can never be replaced by online services," opines Parminder Singh Chadha (55), who's been in this profession for over three decades now.

While freedom to work whenever one wants and direct interaction with customers are some advantages of this profession, being available for clients 24x7 is a downside, according to Chadha.

"Growth in this profession relies on referrals and word of mouth publicity. The new entrants in this field should focus on always helping their customers and thereby expanding their network," he adds while sharing a word of advice for newcomers in this field.

"People have the perception that LIC agents are Chipkoo" : Gaurav Garg

"My father is an LIC Agent and once in his office I witnessed an incident where a bereaved family member expressed his immense gratitude to my father for helping them with the right policy and its claim. That's when I realized being an LIC agent is not just about commissions but it also serves a huge purpose in the society," shares Gaurav Garg (34). However, he believes that the biggest shortcoming of this profession is the negative perception people have in their minds about LIC agents being 'chipkoo'.

Throwing light on the growing trend of LIC agents moving towards other professions, he says: "Once a customer is made, it is imperative to provide them good service after sale. For instance, if an address change in policy is needed, the client should not have to go to the LIC office. But the present generation refrains from putting in hard work and personalized service, which helps in expanding the work."

"LIC agents are treated like gods in rural areas": Gaurav Khandelwal

"People do not take up the profession of LIC agents only for money, but also because it is considered a noble profession. In rural areas, they are not treated less than Gods," shares Gaurav Khandelwal, Development Officer in LIC Jaipur. Highlighting the training module of LIC Agents, Khandelwal informed that they are first and foremost given information about the product, followed by joint calls to teach how to convince clients, giving them good and honest advice and also checking whether the party is insurable or not.

THE WALL

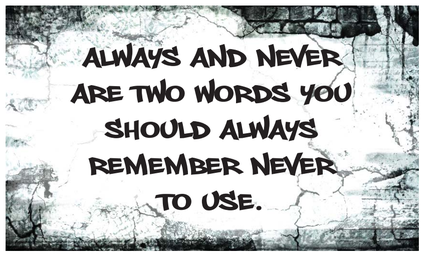

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

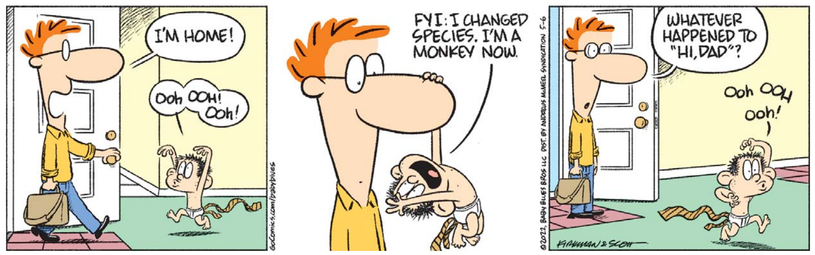

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

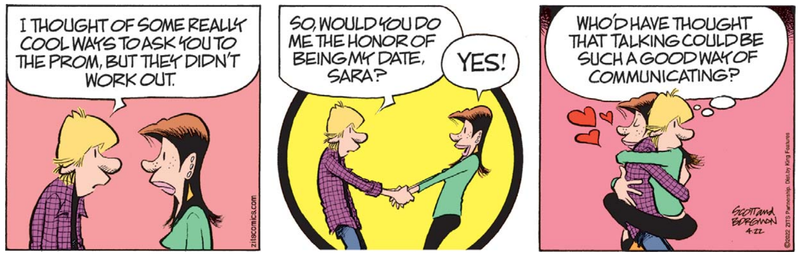

Bet you didn't know.....

- A shrimp's heart is in its head.
- It is physically impossible for pigs to look up into the sky.
- The 'sixth sick sheik's sixth sheep's sick' is believed to be the toughest tongue twister in the English language.
- If you sneeze too hard, you could fracture a rib.
- Rubber bands last longer when refrigerated.
- A shark is the only known fish that can blink with both eyes.
- The longest one-syllable words in the English language are 'scrunched' and 'strengthened'.
- 'Dreamt' is the only English word that ends in the letters 'mt'.
- Almonds are the member of the peach family.

कांस्टेबल परीक्षा: एएसपी ने चिड़ावा थाने में डाला डेरा, जांच जारी

अब तक पूछताछ के बाद सात आरोपी सलाखों के पीछे जा चुके हैं

चिड़ावा, (निसं)। पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा के पेपर लीक के मामले में लगातार पुलिस की जांच जारी है। मामले में सात आरोपी अब तक पूछताछ के बाद साक्ष्यों के आधार पर सलाखों के पीछे जा चुके हैं।

मामले की तफ्तीश मे जुटे एएसपी डॉ.तेजपाल सिंह लगातार पूछताछ के लिए चिड़ावा थाने में डेरा डाले हुए हैं। उन्होंने लगातार चौथे दिन भी थाने में आरोपियों और संदिग्धों से पूछताछ की। पुलिस के अधिकारी पेपर लीक प्रकरण की कड़ी से कड़ी जोड़ रहे हैं। जिसमें पेपर मिलने के बाद कितने लोगों को दिया गया। जिसकी एवज में कितनी रकम ली गई। हालांकि अधिकारी मामले को लेकर कुछ भी बताने से बच रहे हैं।

अधिकारियों को कहना कि प्रकरण की जांच चल रही है।

तीन आरोपियों को भेजा जेल, चार रिमांड पर:- मामले में तीन आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया। जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। वहीं चार अन्य आरोपियों को चार दिन के रिमांड पर लिया गया। इधर, तीन दिन के पुलिस रिमांड पर चल रहे आरोपी महीपाल, नरेंद्र और प्रमोद पूनियां की रिमांड अवधि पूर्ण होने पर कोर्ट में पेश किया गया। जहां से तीनों को जेल भेज दिया गया।

वहीं शुक्रवार को गिरफ्तार आरोपी ढाणी लालपुर (लुहारू) निवासी संदीप कुमार, नौरंगदेसर (हनुमानगढ़) के मेहरचंद, कुल्हरियों की ढाणी (मंड़ेला) के सत्येंद्र और गोदारा का बास (चिड़ावा) निवासी सचिन गोदारा को कोर्ट में पेश किया गया। जहां से चारों आरोपियों को चार दिन के रिमांड पर भेज दिया गया।

रिश्ता करवाने के नाम पर 30 हजार की ठगी

अब रिश्ता कराने से इंकार, महिला समेत 3 लोगों पर मामला दर्ज

हनुमानगढ़, (निसं)।युवक का रिश्ता करवाने के नाम पर 30 हजार रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है। जंक्शन पुलिस थाने में इस संबंध में एक महिला ने 3 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया गया है। जांच अधिकारी एएसआई जसकरण सिंह ने बताया कि थाने में द्रोपती (50) पत्नी जयराम सोनी निवासी वार्ड 6, हाउसिंग बोर्ड, जंक्शन ने मुकदमा दर्ज करवाया है। रिपोर्ट में बताया कि उसकी जान-पहचान वीरपाल कौर पुत्री दर्शन सिंह मजहबी निवासी 2 केएनजे आबादी के साथ है। वीरपाल कौर 31 मार्च को उसके घर आई। उसके साथ 2 केएनजे निवासी कृष्ण कुमार उर्फ एमपी और गुलाब सिंह भी आए। उन्होंने कहा कि तुम्हारे पुत्र महेन्द्रपाल का रिश्ता करवा सकते हैं। उनकी जान-पहचान में एक लड़की है। इस रिश्ते को करवाने के लिए वीरपाल कौर, कृष्णलाल उर्फ एमपी और गुलाब सिंह ने उससे सोने की एक अंगूठी और 30 हजार रुपए की मांग की।

पीडिता ने बताया कि उसने बेटे महेंद्रपाल के रिश्ते के लिए 30 हजार रुपए दे दिए। 3-4 दिन बाद जब उसने वीरपाल कौर से सम्पर्क किया तो वह टालमटोल करने लगी। 19 मई को वह अपने साथ पड़ोसी लखन व सरोज को लेकर वीरपाल कौर के घर गई। वहां पर कृष्ण कुमार उर्फ एमपी व गुलाब सिंह को भी बुलाया गया। उसने कहा कि वह उसकी बेटे की न तो शादी करवा रहे हैं और न ही कोई संतोषजनक जवाब दे रहे हैं। इस पर वीरपाल कौर, कृष्ण कुमार उर्फ एमपी व गुलाबसिंह कहने लगे कि उन्होंने तो मिलीभगत कर उसे झांसे में रखकर ठगी करनी थी जो कर ली। उनके पास कोई रुपए नहीं हैं। न ही कोई रिश्ता उसके बेटे के लिए उनके पास है। पुलिस ने धोखाधड़ी के आरोप में मामला दर्ज कर जांच एएसआई जसकरण सिंह को सौंपी है।

महिला का अपहरण, पांच लाख की फिरौती मांगी

भरतपुर, (निसं) । भरतपुर जिले में एक विवाहिता का उत्तर प्रदेश निवासी तीन बदमाशों ने अपहरण कर लिया। महिला को उत्तर प्रदेश के खुर्जा में एक जंगल में बदमाशों बंधक बनाकर रखा व महिला के पति से पांच लाख रूपये की फिरौती की मांग की। जब फिरौती नहीं मिली तो बदमाशों ने महिला के साथ लगातार सामूहिक दुष्कर्म किया। जब महिला को मौका मिला तो वह उनके कब्जे से फरार होकर अपने घर पहुंची और पूरी घटना पति को बताई।

मामला शहर में चिकसाना थाना इलाके का है जहाँ चिकसाना थाना इलाके की रहने वाली एक विवाहित महिला अपनी साथी महिला के साथ 3 मई को बाजार में खरीदारी करने आई थी। तभी उत्तर प्रदेश नंबर की एक गाड़ी आई और पीड़िता का अपहरण कर ले गए। जब पीड़िता 6 मई को बदमाशों के कब्जे से फरार होकर घर पहुंची तो पुलिस से संपर्क किया मगर उसकी शिकायत दर्ज नहीं की गयी। बाद में महिला ने कोर्ट के जरिये मथुरा गेट थाने में तीनों बदमाश युसूफ,रविंद्र शर्मा और शैलेन्द्र जाटव के खिलाफ अपहरण, फिरौती की मांग और सामूहिक दुष्कर्म की धारा के अंतर्गत शिकायत दर्ज कराई है। पीड़ित महिला ने बताया की मैं बाजार आई थी और तभी तीन बदमाश एक गाड़ी में मेरा अपहरण कर ले गए। मुझे बंधक बनाकर रखा और मेरे पति को फ़ोन कर 5 लाख रूपये की फिरौती की मांग की। उनको फिरौती नहीं मिली तो उन्होंने मेरे साथ सामूहिक दुष्कर्म किया।

मोटर व केबल चोरी के तीन आरोपी गिरफ्तार

केलवाड़ा थाना पुलिस ने पानी की मोटर व केबल चुराने वालों को गिरफ्तार किया।

राजसमंद, (निसं)। जिले के केलवाडा थाना क्षेत्र के कणूजा के थडी की बावडी कुंए पर लगी पानी की मोटर व केबल चोरी करने के आरोप में केलवाडा थाना पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी की केबल व मोटर बरामद की। केलवाडा थानाधिकारी प्रवीण टांक ने बताया कि मामले में पुलिस ने पृथ्वीराज (22) पुत्र चम्पालाल लौहार, हीरालाल (28) पुत्र चुन्नीलाल लौहार निवासी केसर केलवाडा, खेमराज (28) पुत्र तुलसीराम लौहार निवासी बडगांव केलवाडा को गिरफ्तार कर आरोपियों से चोरी की केबल व मोटर बरामद की गई है।

थानाधिकारी ने बताया कि 18 मई को केलवाडा थाना पर कणूजा निवासी प्रार्थी विरमसिंह पुत्र केसरसिंह राजपूत ने थडी की बावडी कुंए पर लगी पानी की मोटर (समरसेबल) एवं 48 फीट लम्बी केबल को अज्ञात बदमाशों द्वारा चुरा ले जाने की रिपोर्ट दर्ज करवाई। पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए सख्ती से पूछताछ की गई। जिसमें आरोपियों ने कुंए से पानी की मोटर व केबल चोरी करना स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपियों से चोरी की केबल व मोटर बरामबद करते हुए तीनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर रिमाण्ड पर लिया गया है। पुलिस द्वारा आरोपियों से पूछताछ जारी है।

मकान में लगी आग, घरेलू सामान जल कर नष्ट

उदयपुर, (कासं)। शहर के हिरणमगरी क्षैत्र में स्थित मकान के कमरें में आग लग गई। हादसे में कमरे में रखा सामान जल कर नष्ट हो गया कोई जन हानी नहीं हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार को हिरणमगरी सेक्टर 3 टेगोर नगर निवासी कौशल शर्मा के मकान में प्रथम तल पर बने एक कमरें में अचानक आग लग गई। इसका पता चलने पर विद्युत समिति अध्यक्ष एवं क्षैत्रिय पार्षद हेमंत बोहरा ने मौके पर पहुंच कर फायर ब्रिगेड को सूचना दी।इस पर अग्निशमन अधिकारी राकेश व्यास मौके पर पहुंचे तथा दमकल की दो गाड़ियों ने आग पर काबू किया। आग से कमरें में रखा बिस्तर, फर्नीचर सहित सभी सामान जल कर नष्ट हो गया। आग से किसी प्रकार की कोई जन हानी नही हुई। प्रारंभिक अनुसंधान में शार्ट सर्किट से आग लगने की जानकारी सामने आई है।

पेट्रोल-डीजल के दाम घटने के बाद भी डीलर्स को नहीं मिला फायदा

श्रीगंगानगर, (निसं)। केंद्र सरकार के पेट्रोल पर आठ और डीजल पर छह रुपए एक्साइज ड्यूटी घटाने का शहर के आम लोगों को तो फायदा मिला है लेकिन पेट्रोलियम डीलर अब भी मायूस हैं। उन्हें अब भी रेट में आई इस कमी से कोई बड़ा फायदा नहीं मिलने वाला। एक्साइज ड्यूटी सेंट्रल गवर्नमेंट की ओर से घटाए जाने से पंजाब और राजस्थान के पेट्रोल-डीजल के दामों में मामूली अंतर आया है। यह पहले भी करीब 18 रुपए था और अब भी करीब 17 रुपए बना हुआ है। ऐसे में पेट्रोलियम डीलर्स का कहना है कि उन्हें दामों में कमी का कोई फायदा नहीं हुआ है। आम आदमी को जरूर कुछ लाभ हुआ है।

एक्साइस ड्यूटी घटाए जाने से श्रीगंगानगर में पेट्रोल में 9.70 रुपए और डीजल में 7.16 रुपए की कमी आई है। इसके बाद जहां शनिवार रात बारह बजे से पहले तक पेट्रोल 123.16 पैसे और डीजल 113.60 रुपए था वहीं शनिवार रात बारह बजे के बाद पेट्रोल के दाम 105.55 रुपए और डीजल 98.35 रुपए प्रति लीटर हो गया। सेंट्रल गवर्नमेंट के एक्साइज ड्यूटी घटाने के बाद भी राजस्थान के मुकाबले पंजाब में दामों में 16.62 रुपए प्रति लीटर का अंतर है।

श्रीगंगानगर पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष आशुतोष गुप्ता ने बताया कि एक्साइज ड्यूटी घटाने का डीलर्स को कोई लाभ नहीं है अब भी पंजाब के मुकाबले राजस्थान में पेट्रोल का दाम करीब सत्रह रुपए ज्यादा है। एक्साइज ड्यूटी पंजाब पर भी समान रूप से कम हुई है।

वहीं श्रीगंगानगर के पेट्रोल डीलर सुमित शर्मा का कहना है कि उनके यहां अब भी कस्टमर्स की कमी बनी हुई है। बड़े वाहन तो राजस्थान के पेट्रोल पंप पर रुकते ही नहीं हैं। वे पंजाब से राजस्थान एंट्री के समय पेट्रोल भरवाते हैं और राजस्थान से बाहर निकलकर ही पेट्रोल फिर से भरवाते हैं। राजस्थान सरकार कुछ टैक्स कम करे तो कस्टमर्स और डीलर्स दोनों को फायदा होगा।

पेट्रोल-डीजल के मामले में देश में सबसे ज्यादा दाम श्रीगंगानगर में हैं। यहां से पंजाब महज सात किलोमीटर दूर है। ऐसे में बस ट्रक जैसे बड़े वाहन तो लोकल डीलर्स से पेट्रोल लेते ही नहीं हैं। बल्कि छोटे वाहन भी पूरे माह की जरूरत के लिए पंजाब से पेट्रोल ले आते हैं।

राशन डीलर को समय पर नहीं मिल रहा गेहूं

- उपभोक्ता राशन की दुकान पर बार बार चक्कर लगाकर खासा परेशान

अजमेर, (कासं)। रसद विभाग और खाद्य निगम द्वारा राशन डीलरों को सप्लाई किए जाने वाला गेंहू समय पर सप्लाई नहीं होने से राशन डीलरों सहित उपभोक्ताओं को परेशानी उठानी पड़ रही है। नाराज उपभोक्ताओं द्वारा राशन डीलर गेंहू की मांग करते आए दिन तकरार होती रहती है। ऐसा ही एक मामला रविवार को सामने आया है।

राशन डीलर सतीश चंद आसोपिया का प्रशासन पर आरोप है कि उनकी राशन की दुकान नगर निगम के वार्ड नंबर 38 विज्ञान नगर में पोस मशीन 21820 पर संचालित है। आसोपिया ने बताया कि उन्हें मई माह में वितरण करने वाला 90 क्विंटल राशन का गेहूं अप्रैल माह में ही मिल जाना चाहिए था लेकिन उन्हें मात्र 32 क्विंटल गेंहू ही प्राप्त हुआ है, जबकि शेष (पीएमजी वाला) 58 क्विंटल गेंहू आज दिनांक तक प्राप्त नहीं हुआ है।

इसके चलते उपभोक्ता राशन की दुकान पर बार बार चक्कर लगाकर खासे परेशान हो रहे है। जिससे राशन डीलर और उपभोक्ताओं में कभी भी विवाद हो सकता है। आसोपिया ने बताया कि शेष गेंहू की सप्लाई के लिए रसद विभाग और खाद्य निगम अजमेर को भी सूचना दी गई है लेकिन अभी तक उन्हें कोटे के अनुरूप गेंहू की सप्लाई नहीं दी गई है।

इससे राशन डीलर उपभोक्ताओं को क्या जबवा दे, उन्हें राशन का गेहूं कब तक उपलब्ध हो पाएगा, विभाग कोई संतोष पूर्ण जवाब नहीं दे रहा है। उन्होंने बताया कि गेंहू सप्लायर ठेकेदार फर्म भास्कर इंड्रस्टीज अपनी निविदा शर्तों का स्पष्ट उल्लंघन कर रही है, जिससे उपभोक्ताओं और राशन डीलरों में भारी रोष है।

एजेंट के खिलाफ मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। शहर के भुपालपुरा थाना पुलिस ने टीवीएस क्रेडिट सर्वीसेज के ऐजेंट के खिलाफ ग्राहकों से वसूल की गई नकदी हड़पने का मामला दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित टीवीएस क्रेडिट सर्विसज शाखा मावली वाला प्लाजा सुखाड़िया समाधी लेकसिटी मॉल दुर्गानर्सरी रोड़ के अधिकृत अधिकारी सुमित माथुर ने दो अलग अलग मामलों में आरोपी पवनपुरी गोस्वामी एवं पटेलवाड़ा सलूम्बर निवासी अंकुर पटेल पुत्र हिरालाल पटेल के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। कि आरोपियोंको कंपनीमें ग्राहाकों को दिए ऋण की वसूली के लिए एजेंट के तौर पर नौकरी पर रखा था। गत दिनों आरोपी पवनपुरी ने चार पांच ग्राहाकों से ऋण की किश्तें वसूल कर करीब 25 हजार रूपयें कंपनी के खाते में जमा नहीं कराई। इसी तरह अंकुर ने एक ग्राहक से वसूल की गई 8 हजार रूपये नकदी जमा नहीं करवाई। इसका पता चलने पर संपर्क किया तो आरोपियों ने कोई संतेषप्रद जवाब नहीं दिया।

नहाने गये दो दोस्तों की डिग्गी में डूबने से मौत

- एक दोस्त का पांव फिसला, दूसरा उसे बचाने में डूब गया

श्रीगंगानगर, (निसं)।जिले के पदमपुर इलाके के गांव सांवतसर में रविवार को गर्मी से निजात पानी के लिए खेत में बनी डिग्गी में नहाने के लिए गए दो दोस्तों की मौत हो गई। दोनों अपने कुछ दोस्तों के साथ नहर पर नहाने गए थे। इसी दौरान एक का पांव फिसला। दूसरा उसे बचाने लगा तो वह भी पानी में डूब गया। उन्हें डूबता देख पास खड़े दोस्तों ने शोर मचाया लेकिन जब तक उन्हें बचाया जाता उनकी मौत हो चुकी थी।

पदमपुर पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया है। गांव सांवतसर का रहने वाला दीपक पुत्र बाबूलाल मेघवाल और उसका दोस्त जयदेव पुत्र हीरालाल रविवार दोपहर करीब तीन बजे के आसपास गर्मी से निजात पाने के लिए गांव में एक खेत में बनी डिग्गी पर नहाने के लिए गए थे। उनके साथ उनके कुछ दोस्त भी थे। ये लोग दोपहर में डिग्गी में उतरे। इनके कुछ दोस्त तो बाहर निकल आए लेकिन दीपक और जयदेव नहाते रहे। इसी दौरान जयदेव का पांव फिसला। वह डूबने लगा तो दीपक ने उसे बचाने की कोशिश की। इसी प्रयास में दीपक का भी बैलेंस बिगड़ गया और वह डिग्गी में गिर गया। आसपास खड़े दोस्तों और अन्य लोगों ने दोनों को बचाने की कोशिश की।कुछ देर बाद उन्हें डिग्गी से निकाल लिया गया लेकिन अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

दोनों मृतकों दीपक और जयदेव के पिता मजदूरी करते हैं। दोपहर बाद दोनों के परिवारों को हादसे की सूचना मिली तो वे मौके पर पहुंचे। पिता और परिवार के लोग उस वक्त को कोस रहे थे जब दोनों बच्चों ने डिग्गी में नहाने का फैसला किया। पुलिस ने दोनों के शवों का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया।

बंधक बनाकर दुष्कर्म का मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। धमका कर युवती का अपहरण कर बंधक बना उसके साथ दुष्कर्म करने वाले व साथियों के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़िता ने आरोपी कोठारिया राजसमन्द निवासी दीपक पुत्र रतनलाल खटीक, रतनलाल खटीक, रीना, मंजु पुत्री रतनलाल खटीक के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया कि एक वर्ष से आरोपी दीपक से संपर्क मे होने से नजदीकियां है।

5 अप्रेल 2022 को आरोपी मुझे अश्लिल वीड़ियों वायरल करने की धमकी देकर अपहरण कर अपने साथ ले गए। जहां एक सप्ताह तक बंधक बनाए रख कर आरोपी दीपक ने मेरे साथ दुष्कर्म किया। मौका मिलने पर आरोपियों के चंगुल से निकल कर घर लौट कर परिजनों को आपबीती बता कर मामला दर्ज करवाया। प्रकरण की जांच कुराबड़ थानाधिकारी अमीत कुमार विश्नोई कर रहे हैं।

रोडवेज बस व ट्रेलर में टक्कर, एक जने की मौत

अजमेर, (कासं)। जिले के किशनगढ़ उपखंड क्षेत्र के नए रोडवेज बस स्टैंड के पास, वैष्णो देवी मंदिर के निकट रविवार दोपहर को रोडवेज बस और ट्रेलर की टक्कर से भीषण हादसा हो गया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में पुलिया के नीचे जूस का ठेला चलाने वाले एक युवक की बस और ट्रेलर के बीच में दबने से मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद यात्री बस में ही फंस गए, जिन्हें मौके पर मौजूद लोगों व पुलिस ने बमुश्किल बाहर निकाला।

घायल यात्रियों को किशनगढ़ के यज्ञ नारायण अस्पताल पहुंचाया। यहां उनका उपचार चल रहा है। हादसे के वक्त बस में करीब 30 यात्री सवार थे। इसमें से 20 घायल हो गए, जबकि 7 की हालत गंभीर बताई जा रही।

जानकारी के अनुसार बस अजमेर से जयपुर की ओर जा रही थी।सूचना पर किशनगढ़ पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और एम्बुलैंस की सहायता से करीब 20 घायलों को राजकीय यज्ञ नारायण अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका उपचार किया गया। जबकि किशनगढ़ से बच्चों, महिलाओं सहित 10 को अजमेर के जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय रैफर किया गया,जहां उनका उपचार चल रहा है। टक्कर के बाद रोड पर वाहनों की लंबी लाइन लग गई।

मौके से पुलिस ने वाहनों को हटाया और यातायात सुचारू किया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। गंभीर रूप से घायल पाली निवासी गोपाल सिंह, नवल कवर, करौली निवासी लक्ष्मी मीणा, पुष्कर निवासी विरेंद्र सिंह, जयपुर निवासी जनक कवर, भूपेंद्र सिंह, पुष्कर निवासी यशु, मीना कवर, खानपुरा अजमेर निवासी आहान खान, अजमेर निवासी अमायरा, प्रहलाद सिंह का उपचार चल रहा है। हादसे की सूचना मिलते ही अजमेर पुलिस प्रशासन सहित एडीएम सिटी भावना गर्ग समेत अन्य अधिकारी अस्पताल पहुंचे ओर घायल की कुशलक्षेम पूछी।

नेताओं एवं अधिकारियों ने पुष्पगुच्छ देकर राज्यपाल की अगवानी की

ट्रेन से परिवार सहित रेलवे स्टेशन पर पहुंचे राज्यपाल

- राज्यपाल 30 जून तक आबूपर्वत राजभवन प्रवास करेंगे

आबूरोड, (नि.सं.)। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिये रविवार को वाराणसी अहमदाबाद ट्रैन में लगे स्पेशल बोगी से आबूरोड रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। जनप्रतिनिधीयो सहित प्रशासनिक अधिकारीयो ने पुष्प गुच्छ देकर की अगुवाई। प्रशासनिक अधिकारीयो व जनप्रतिनिधीयो से की मुलाकात। अधिकारीयो से जानी कोरोना महामारी की प्रगति रिपोर्ट। सडक मार्ग से पहुंचे आबूपर्वत। 30 जून तक करेंगे आबूपर्वत राजभवन मे प्रवास।

दो घंटे ट्रेन लेट होने से नही हो पाया गार्ड ऑफ़ आनरराजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र अपने एक महा के ठाीष्मकलीन प्रवास को लेकर रविवार को ट्रैन से अपने निर्धारित समय से 3 घंटे देरी से आबूरोड रेलवे स्टेशन पहुंचे। राज्यपाल का रेलवे स्टेशन पर सिरोही विधायक संयम लोढ़ा, जोधपुर संभागीय आयुक्त हिमांशु गुप्ता , रेंज आईजी पी रामजी सिरोही जिला कलेक्टर डाक्टर भंवरलाल, सिरोही पुलिस अधिक्षक धमेन्द्र सिंह,पालिकाध्यक्ष मगन दान चारण जिला प्रमुख अर्जुन राजपुरोहित प्रधान लीलाराम ठाासिया ने पुष्प गुच्छ देकर अगवानी की। राज्यपाल ने उसके बाद अधिकारीयो से ओपचारिक मुलाकात मे प्रशासनिक स्थिति की जानकारी ली। उसके बाद राज्यपाल ने पत्रकारो से रूबरू हुये उसके बाद राज्यपाल मिश्र सडक मार्ग से आबूपर्वत के लिये रवाना हुये। राज्यपाल के आगमन को लेकर प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतेजाम किये गये थे।

आबूरोड रेलवे स्टेशन से लेकर आबूपर्वत तक सडक के दोनो तरफ पुलिस के जवान तैनात रहे। उपखण्ड अधिकारी आबूपर्वत कनिष्क कटारिया, उपखण्ड अधिकारी आबूरोड अरविन्द शर्मा, तहसीलदार दिनेश कुमार साहू, आबूपर्वत डीप्टी योगेश शर्मा, पालिका अधिशाषी अधिकारी अनिल झिंगोनिया, पीडब्लु डी सहायक अभियंता सचिव संचेता, जलदाय विभाग सहायक अभियंता हेमंत गोयल, रूडीप सहायक अभियंता अधिकारी सहित जिले के अधिकारीयो ने व्यवस्थाओ पर डटे रहे।

चप्पे चप्पे पर रही सुरक्षा :- राज्यपाल के आगमन को लेकर आबूरोड शहर के साथ आबूरोड रेलवे स्टेशन से लेकर आबूपर्वत राजभवन तक के मार्ग पर माकुल सुरक्षा व्यव्सथा नजर आई। रेलवे स्टेशन से पर राज्यपाल के ट्रैन से उतरने के साथ ही आबूरोड रेलवे स्टेशन से लेकर आबूपर्वत मार्ग को ब्लॉक किया गया। महामहिम के काफिले के निकलने के बाद पुन: रास्ता खोला गया। वही रेलवे स्टेशन पर भी चारो तरफ सुरक्षाकर्मी मुस्तेद नजर आये वही जिले के पुलिस के आला अधिकारी भी सुरक्षा को लेकर पैनी नजर बनाये हुये थे।

शहरवासीयो ने हाथ जोड किया महामहिम का अभिनन्दन :- राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र के दूसरी बार आबूरोड आगमन को लेकर शहरवासी उनके दिदार के लिये मुख्य रास्ते के दोनो ओर खडे नजर आये जेसे ही राज्यपल का काफिला मुख्य रास्ते से गुजरा दोनो तरफ खडे लोगो ने उनका हाथ जोड कर अभिनन्दन किया वही राज्यपाल ने भी अपने वाहन मे से ही सभी का अभिवादन स्वीकार किया।

झांसा देकर नकदी हड़पने का मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। शहर के प्रतापनगर थाना पुलिस ने दलाल व साथियों के खिलाफ ऋण दिलाने का झांसा देकर नकदी हड़पने का मामला दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित पुनावली राजसमन्द निवासी किशनलाल पुत्र भगवान लाल प्रजापत ने दलाल अशोक सिंह राठोड़ तथा सेन्ट्रल बैक ऑफ इण्डिया के मैनेजर व साथियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया कि मकान नवीनी करण के लिए अशोकसिंह राठोड़ से संपर्क किया तो उसने अपने अन्य साथियों के साथ मिल कर कागजी कार्यवाही पूरी की।

इस दौरान चैक व स्टाम्प दिए तथा बैक में खाता खुलवाया। कुछ दिनों बाद 12 लाख का बैंक ऋण स्वीकृत होने की जानकारी मिली। इस पर खाते में देखा तो ऋण पेटे पहली किश्त के खाते में पांच लाख रूपये जमा हुए थे। उक्त नकदी षड़यंत्रपूर्वक अशोक सिंह ने अपने खाते में ट्रांसफर कर दी। इसका विरोधक करने पर आरोपी ने टुकड़ों टुकड़ों में चार लाख का भुगतान किया तथा एक लाख रूपये चैक दिया जो निर्धारित समय पर बैंक में प्रस्तुत करने पर अनादरित हो गया। उगाही करने पर आरोपी ने कोई संतोषप्रद जवाब नहीं दिया। इस मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

भीषण आग में ट्रैक्टर ट्रॉली, बाइक, सहित आठ थड़ियां जलकर राख

गुढ़ाचन्द्रजी के मुहाना मोड़ पर थड़ियों में लगी आग

हिण्डौन सिटी, (का.सं.)। गुढ़ाचन्द्रजी के मुहाना मोड़ पर रविवार को सड़क किनारे रखी थड़ियों में आग लग गई। आग से थड़ियों के सामने खड़े एक ट्रैक्टर ट्रॉली, बाइक, सहित आठ थडिया जलकर राख हो गई। लोगों ने दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर मिट्टी और पानी डालकर काबू पाया लेकिन तब कर आग ने सब कुछ जलाकर राख कर दिया।

गुढ़ाचन्द्रजी पुलिस चौकी प्रभारी बृजेन्द्र शर्मा ने बताया कि सिकन्दरा सड़क मार्ग पर मुहाना मोड़ पर सड़क किनारे एक दर्जन से अधिक थडियों में अज्ञात कारणों से आग लग गई। आग ने पंचर की दुकान पर खड़े ट्रैक्टर ट्रॉली को भी अपने लपेटे में ले लिया। सूचना पर चौकी प्रभारी बृजेन्द्र शर्मा, हेड कांस्टेबल गजराज सिंह, कांस्टेबल लोकेन्द्र सिंह, दीपेन्द्र सिंह राजावत सहित दर्जनों लोग मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाने की कोशिश की लेकिन तेज हवा के कारण आग ने विकराल रूप ले लिया। आग से ट्रैक्टर ट्रॉली भी जलकर राख हो गई। आगजनी की सूचना लगते ही दीपेंद्र सिंह राजावत, राजेश कुमार जैन, महेंद्र सिंह चौहान सहित दर्जनों लोगों ने आग पर मिट्टी और पानी डालकर काबू पाने को कोशिश की लेकिन तेज हवा के कारण आग ने विकराल लेकर सभी थडियों को अपनी लपेटे में ले लिया। आगजनी का विकराल रूप होते ही दीपेंद्र सिंह राजावत, महेश मोदी, जगन्नाथ माली और पप्पू माली ने अपने ट्रैक्टरों से मौके पर पानी के टैंकर बुलाकर दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर मुश्किल से काबू पाया।

मुहाना मोड़ पर थड़ियों के पास खड़ा ट्रैक्टर धू-धू कर जलने लगा।

आगजनी से लाखों रुपए का सामान जलकर राख हो गया। आग से सड़क किनारे पिंचर सही करा रहे दीनदयाल पुत्र कल्याराम मीना निवासी बाडा राजपुर का टैक्टर ट्रॉली, धीरसिंह पुत्र मक्खन सिसोदिया की चयबोर जूस की थड़ी, हुकम पुत्र हरिनारायण सिसोदिया की परचूनी की दुकान, जगन्नाथ पुत्र गंगासहाय सिसोदिया की पंचर की दुकान, गोकुल पुत्र गंगासहाय की चाय की थड़ी, दीपक पुत्र विष्णु सिसोदिया की ज्यूस की दुकान ओर फतेह सिंह पुत्र शिवचरण सिसोदिया की थड़ी ओर परचूनी की थड़ी जलकर राख हो गई।

संक्षिप्त

चेजा पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्रोली जब्त

निवाई। वन क्षेत्र नोहटा से चेजा पत्थरों का अवैध खनन परिवहन करते हुए पत्थरों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली पुलिस की सहायता से जब्त की है। वनपाल राकेश चौधरी ने बताया कि पत्थरों से भरी ट्रेक्टर ट्रॉली को जब्त कर रेंज परिसर संजय वन में लाकर खडा कर मुकदमा दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि कार्रवाई के दौरान रामअवतार जाट सहायक वनपाल, राकेश कुमार बैरवा सहायक वनपाल, बद्रीलाल भारी, वनरक्षक रामराज मीणा, वनरक्षक और राजेश कुमार नायक मौजूद थे। उन्होंने बताया कि वन खंड नोहटा में हो रहे खनन पर अंकुश लगाने हेतु लगातार क्षेत्र में गश्त करते हुए अवैध खनन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी।

सीताराम सैनी अध्यक्ष चुने गए

श्रीमाधोपुर। लायंस क्लब श्रीमाधोपुर की साधारण सभा की बैठक शनिवार को डॉ. महेंद्र प्रताप तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से सीताराम सैनी को अध्यक्ष, सागरमल हलवाई को सचिव व रेवत सिंह को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। इस बैठक में डॉ सुरेंद्र सिंह शेखावत, डॉक्टर नीलकंठ कयाल, डॉ मंगल यादव, बजरंग लाल कुमावत, मालीराम बिजारणिया, रामरतन सोनी, राजेंद्र प्रसाद जांगिड, डॉ मुकेश ब्लडवाल, संयोग भावरिया, मानक चंद तिवारी आदि उपस्थित थे। क्लब की नई कार्यकारिणी पदाधिकारियों ने पदों को स्वीकार करते हुए जिम्मेदारी को बखूबी निभाने का संकल्प लिया।

सांप के काटने से युवक गंभीर

पावटा। प्रागपुरा में सांप के काटने से एक 21 वर्षीय युवक की स्थिति गंभीर हो गई। जिसे परिजनों ने इलाज के लिए पावटा सुंदरी देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां पर प्राथमिक इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए कोटपुतली के बीडीएम अस्पताल रेफर कर दिया गया। जानकारी के मुताबिक प्रागपुरा निवासी 21 वर्षीय युवक नीरज पुत्र महेश सैनी रविवार सुबह खेतों में कडब उठाने का कार्य कर रहा था तभी उसे एक सांप ने डस लिया।

ललित गोयल बने कार्यकारी अध्यक्ष

पावटा। अखिल भारतीय वैश्य महासमेलन राजस्थान के अध्यक्ष गोविंद अग्रवाल व महामंत्री केशव गुप्ता द्वारा महामंत्री मनीष मंगोडी वाला, कोषाध्यक्ष राजेश खुटेटा, प्रदेश युवा अध्यक्ष मुकेश विजय की सहमति से प्रागपुरा निवासी ललित गोयल को अखिल भारतीय वैश्य महासमेलन जिला जयपुर ग्रामीण का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया है।

बिजली सप्लाई बाधित रहेगी

पावटा। पावटा विधुत विभाग कनिष्ठ अभियंता वीरेंद्र यादव व सहायक अभियंता कपिल शर्मा ने बताया कि प्रागपुरा 33 केवी पावर हाउस पर सोमवार को पावर ट्रांसफार्मर क्षमता वृद्धि के चलते 33 केवी पावर हाउस प्रागपुरा से निकलने वाले सभी 11केवी फीडरों की बिजली सप्लाई सुबह 7:30 बजे से शाम 5 बजे तक बंद रहेगी।

मधुमक्खियों ने मनरेगा कार्य के दौरान हमला किया

पावटा, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत फतेहपुरा खुर्द में नरेगा का कार्य करते हुए मधुमक्खियों के हमले से नरेगा श्रमिक घायल हो गए हैं।

मधुमखियों के हमले में घायल 5 नरेगा श्रमिकों तारा, संजया, केशरी, पिंकी, संतोष को पावटा सुंदरी देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। घटना ग्राम पंचायत फतेहपुरा खुर्द के धोल्या जोहड क्षेत्र की है, जहां नरेगा के तहत मिट्टी डालने का कार्य चल रहा था। कार्य के दौरान मधुमक्खी का एक छत्ता छिड़ गया। इस दौरान एक बार मौके पर भगदड सी मच गई जिसके बाद लोगों ने इधर उधर भाग कर अपनी जान बचाई। वहीं कुछ श्रमिक मधुमक्खी काटने से बेहोश हो गई जिन्हें ग्रामीणों द्वारा पावटा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां उनका इलाज करते हुए इंजेक्शन लगाए गए। वहीं सरपंच प्रकाश ने बताया कि ग्राम पंचायत फतेहपुरा खुर्द के धोल्या जोहड क्षेत्र में रविवार को मनरेगा कार्य चल रहा है। नरेगा से जुड़े कार्यो के तहत मिट्टी डालने का कार्य किया जा रहा था। तभी मधुमक्खियों के हमला कर दिया। मधुमक्खियों के हुए अचानक हमले से नरेगा का कार्य कर रहे मजदूरों में भगदड मच गई। मुधुमक्खियों के काटने से काम करने वाले 25 नरेगा श्रमिकों में 5 श्रमिकों को पावटा सुंदरी देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया। जहां घायल नरेगा कर्मियों के इलाज के बाद उन्हे छुट्टी दे दी गई।

घायल श्रमिकों का इलाज पावटा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किया गया।

- पांच श्रमिक हुए घायल, उपचार जारी

आजादी गौरव यात्रा का स्वागत किया

पावटा। कांग्रेस की लोकतंत्र एवं संविधान को बचाने का संदेश देने सेवादल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालजी देसाई, राजस्थान प्रदेश सेवादल अध्यक्ष हेमसिंह शेखावत सहित महिला पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं एवं कांग्रेस पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं का रामवतार टेपण के नेतृत्व में गांधी आश्रम साबरमती से राजघाट दिल्ली के लिए रवाना हुई आजादी की गौरव यात्रा का पावटा पहुंचने पर सीएचसी के पास भव्य स्वागत किया गया।

आजादी की गौरव यात्रा में 40 डिग्री से अधिक तापमान के बीच सफेद कपडे पहने पार्टी कार्यकर्ता हाथों में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा थामे चल रहे थे। स गौरव यात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई गुजरी जहां आजादी गौरव यात्रा का जगह-जगह कांग्रेस कार्यकर्ताओं व शहरवासियों ने फूल बरसाकर स्वागत किया। इस दौरान कांग्रेसी कैलाश छितौली वाले, महा वीर यादव, ओमप्रकाश गौड, मूलचंद सैनी कालूराम जांगिड संतोष देवी खारवाल आसमा बानो, सुरेश कटारिया, मंगतराम यादव सहित बडी संया में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की मौजूदगी रही।

सार-समाचार

यात्रा के साथ मूर्तिप्राण-प्रतिष्ठा शुरू

पावटा/कोटपुतली। ग्राम रघुनाथपुरा में सांवरिया धाम बाकली में शिव परिवार, हनुमान मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर भव्य कलश यात्रा निकाली गई। आचार्य पंडित शुभम शर्मा ने बताया कि कलशों की विधिवत पूजा अर्चना कर कलश यात्रा को रवाना किया गया जो ग्राम के मुख्य मार्गों से नगर भ्रमण करती हुई कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। इस दौरान श्रद्धालु आस्था में सराबोर होकर नाचते गाते नजर आये वहीं ग्रामीणों द्वारा जगह जगह पुष्प वर्षा कर कलश यात्रा का स्वागत किया गया। कोटपूतली अभिभाषक संघ के कोषाध्यक्ष एडवोकेट दिनेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि 23 मई सोमवार को शिव परिवार हनुमान मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा होगी। साथ ही विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान लोक कलाकार जयराम ठेकला व सीताराम मासी द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी इस मौके पर मालीराम मीणा, भागीरथ मीणा, जगदीश यादव भगत जी, पूर्ण यादव, हनुमान यादव, अमिचंद मीणा , ओम प्रकाश मीणा, सुरेश जांगिड, पवन मीणा आदि लोग मौजूद रहे।

विधिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

देवली। रविवार को यहां विधिक सेवा प्राधिकरण टोंक की पालना में रालसा एक्शन प्लान 2022- 23 के अनुसार तालुकाओं में विधिक जागरूकता कार्यक्रम स्थानीय पेट्रोल पंप चौराहे पर किया गया। तालुका विधिक सेवा समिति द्वारा अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर विशेष विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन शहर के पेट्रोल पंप चौराहे पर हुआ। जिसकी अनुपालना में पैनल लॉयर (एडवोकेट) अनिल कुमार भूरेठा ने यहां उपस्थित व्यक्तियों को जैव विविधता के संरक्षण के महत्व व उसके विभिन्न पहलुओं और प्रौद्योगिकी तथा सतत विकास के संबंधो पर चर्चा कर जानकारी दी। साथ ही लायर अनिल बुरेटा ने प्रकृति के बारे में बताते हुए अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाने उनका ध्यान रखने वनों से होने वाले लाभ हानि के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा मौजूदा व्यक्तियों को उनके कानूनी अधिकारों के बारे में जानकारी दी। एवं उक्त संबंधी योजना का लाभ उठाने हेतु प्रेरित किया। तथा उक्त कार्यक्रम के प्रचार प्रसार से संबंधित पंप्लेट बाँटकर लोगों को जागरुक किया।

बोलेरो की टक्कर से तीन गंभीर घायल

उनियारा, (निसं)। एनएच 116 टोंक सवाई माधोपुर रोड खेडली के पास तेज रफ्तार बोलेरो गाडी की टक्कर से तीन जने गंभीर रूप से घायल हो गए। जानकारी अनुसार मनराज पुत्र पन्नालाल बैरवा, राजकुमार पुत्र बाबू लाल बैरवा, रेखा पत्नी मनराज बैरवा निवासी खेडली उनियारा से गांव की तरफ जा रहे थे। उसी समय पीछे से आ रही तेज रफ्तार बोलेरो ने उनके टक्कर मार दी। जिससे तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए। जिनको उनियारा अस्पताल में भर्ती कराया गया। वही सूचना पर उनियारा थाने से नरेंद्र सिंह मय जाब्ते मौके पर पहुंचे। मामला अलीगढ थाना क्षेत्र का होने पर अलीगढ पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई मौके पर की। तीनों की हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने उन्हें जिला अस्पताल रैफर कर दिया गया। पुलिस द्वारा इस मामले में अनुसंधान जारी है।

मनरेगा कार्यों का निरीक्षण किया

फागी। उपखंड क्षेत्र की रेनवाल माजी पंचायत मुख्यालय पर संचालित महात्मा गांधी मनरेगा कार्यों का रविवार को माधोराजपुरा पंचायत समिति विकास अधिकारी बृजेंद्रसिंह धाकड ने औचिक निरीक्षण किया। इस दौरान 31 श्रमिक अनुपस्थित पाए गए। मैट गायत्री देवी ने बताया कि माधोराजपुरा पंचायत समिति विकास अधिकारी बृजेंद्र सिंह ने रेनवाल मांजी लुहारिया बांध आवक खुदाई महात्मा गांधी मनरेगा कार्य पर निरीक्षण करने पर 103 श्रमिको में से 31 श्रमिक अनुपस्थित मिले। विकास अधिकारी बृजेंद्र सिंह ने मेट नीतू देवी, गायत्री देवी को छाया, दवा की व्यवस्था करवाने के साथ ही मनरेगा कार्यस्थल से कार्य के समय नदारत होने वाले श्रमिकों की अनुपस्थित लगाने की बात कही गई।

'गौ सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं'

अलवर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा कारागार विभाग मंत्री टीकाराम जूली ने कहा कि गौ सेवा से बडा कोई धर्म नहीं है। हम सभी को गौ माता की सेवा एवं रक्षा के लिये कृत सकंल्प रहना चाहिए उन्होंने कहा कि राजस्थान संभवत: देश का पहला राज्य है जहा गौ सेवा के संवर्धन के लिये वृहद स्तर पर गौ शालाओं का निर्माण कराया जा रहा है। केबिनेट मंत्री जूली रविवार को अलवर शहर के प्रताप ऑडिटोरियम में श्री सार्वजनिक गौ शाला एवं नेक कमाई के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित गौ कथा में राष्ट्रीय संत श्री राजेन्द्र दास जी महाराज के प्रवचन सुन रहे थे। इस दौरान बडी संख्या में ऑडिटोरियम पहुचें गौ भक्तों ने गौ माता रक्षा के लिए अपनी ओजस्वी वाणी से संकल्प लिया।

पुण्यतिथि पर गायों को चारा खिलाया

श्रीमाधोपुर। स्व. रामगोपाल चौहान की 8 वीं पुण्यतिथि पर सामाजिक कार्य करके उन्हें याद किया गया। डॉ. हंसराज चौहान सह आचार्य राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होद, संयुक्त सचिव रूक्टा एव टीम द्वारा स्व रामगोपाल चौहान की 8 वी पुण्यतिथि पर उनकी प्रतिमा पर माला पहनाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इसके पश्चात कस्बे की गायों को हरा चारा तथा गुड़ खिलाया गया व मोहल्ले की कन्याओं को फल वितरित करके उन्हें याद किया गया व पेड़ भी लगाए गए।

सांसद ने गांवों की चौपाल में लोगों की सुनी समस्याएं, अधिकारियों को दिये निर्देश

किशनगढ़ बास, (निसं)। सांसद महंत योगी बालक नाथ ने करीब एक दर्जन गांव की चौपाल पर बैठकर लोगों की जन समस्याएं सुनी और मौके पर संबंधित विभागों के अधिकारियों को फोन पर समस्याओं का निदान करने के लिए बोला।

इस दौरान सांसद ने ग्रामीणों की मांग पर सांसद निधि से विकास कार्य कराने की घोषणा कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की और से शुरू की गई कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए अपील की। सांसद की चौपाल यात्रा के दौरान पूर्व विधायक रामहेत यादव सहित पार्टी पदाधिकारी जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

किशनगढ़ बास विधानसभा क्षेत्र के गांव माचा में रविवार को जनसुनवाई करने पहुंचे सांसद महंत योगी बालक नाथ, पूर्व विधायक रामहेत यादव का गांव वासियों ने ढोल नगाड़ों के साथ स्वागत किया। गांव की चौपाल पर सांसद ने 2 करोड 78 लाख रुपए की प्रधानमंत्री जल जीवन मिशन व 11 लाख रुपए सांसद निधि कोष से दिए जाने की घोषणा की और ग्रामीणों को कहा कोरोना महामारी के चलते सांसद निधि का 2 साल का बजट लेप्स होने के कारण गांवों को जो विकास का पैसा मिलना चाहिए था वह नहीं मिल सका है। बजट थोड़ा है और सबको समान रूप से देना है और विकास को हमें आगे बढ़ाना है।

पूर्व विधायक रामहेत यादव ने कांग्रेस सरकार और क्षेत्रीय विधायक दीपचंद खेरिया पर विकास को रोकने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा ईसरदा बांध परियोजना में किशनगढ़ बास को शामिल नहीं किया गया। भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है अधिकारी कर्मचारी लोगों की बात नहीं सुन रहे हैं। गांव में बिजली-पानी की बिगड़ी स्थिति के चलते हाल बेहाल है। शिकायत करो तो कोई सुन नहीं रहा है।

सांसद ने गांव राता खुर्द बल्लभ ग्राम पाटन मेवान रामपुर की ढाणी झिरडिया मीरका नूर नगर गिरवास बघेरी खुर्द बघेरी कला माछरोली दौलतपुर में गांव की चौपाल पर पहुंच कर जन सुनवाई की और लोगों की समस्याएं सुनकर संबंधित विभागों के अधिकारियों को फोन पर समस्याओं का निदान करने के लिए कहा। सांसद की चौपाल यात्रा के दौरान पूर्व विधायक रामहेत यादव भाजपा मंडल अध्यक्ष उमेश कांत वशिष्ठ मनोज मित्तल सहित गांव के सरपंच एमपीएस जिला परिषद सदस्यों के अलावा बडी संख्या में गांव के लोग मौजूद रहे।

किशनगढ़ बास के गांव माचा में गांव की चौपाल पर सांसद महंत योगी बालक नाथ, पूर्व विधायक रामहेत यादव जनसुनवाई में पहुंचे।

- सांसद निधि कोष से विकास के लिए पैसा दिया

शिविर में 400 मरीज हुए लाभांवित

पावटा। कस्बे स्थित पंसारी धर्मशाला में शनिवार को आओ साथ चले राष्ट्रीय संयोजक व भाजपा पार्टी दिल्ली प्रदेश कोषाध्यक्ष विष्णु मित्तल द्वारा कैलाश चंद शर्मा अध्यक्ष सेवा भारती राजस्थान के मुख्य आतिथ्य, उपखंड पावटा एसडीएम राजवीर सिंह की अध्यक्षता व महासचिव दीनदयाल शोध संस्थान दिल्ली अतुल जैन, आओ साथ चलें संस्थान सीईओ मीना जांगिड, आओ साथ चलें संस्थान उपाध्यक्ष आनंद मित्तल उपाध्यक्ष, सरपंच विक्रम रावत, विपिन कुमार शर्मा, वीरेंद्र ढेढा, चंदन कुमार, पावटा प्रधान पूजा चौधरी, पूर्व सरपंच व सामाजिक कार्यकर्ता जगन चौधरी, गोपाल अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता निर्मल पंसारी, वाइस चेयरमैन नरपत सिंह, भाजपा एससी मोर्चा जिला महामंत्री बद्री प्रसाद चौहान भूरी भडाज शंकर स्वामी, सामाजिक कार्यकर्ता नीरज सेन के विशिष्ट आतिथ्य मे पंडित कमलेश शास्त्री के मंत्रोच्चार द्वारा दीप प्रज्वलित कर 'फ्री मेडिकल कैंप'का शुभारंभ किया गया। जिसमें 400 मरीजों की निशुल्क स्वास्थ्य की जांच की व परामर्श दिया।

चिकित्सा मंत्री ने निर्माणाधीन स्कूल भवन का लिया जायजा

मंडावरी, (निसं)। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीणा ने मंडावरी नगर पालिका पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में बन रहे स्कूल के नए भवन निर्माण का अधिकारियों के साथ जायजा लिया।

चिकित्सा मंत्री मीणा द्वारा अधिकारियों के साथ स्कूल के लिए हो रहे नए भवन निर्माण में गुणवत्ता संबंधी जानकारी भी ली गई। चिकित्सा मंत्री मीणा द्वारा पूर्व में जब उद्योग मंत्री थे तब उद्योग विभाग के सीआरएस फंड से स्कूल भवन के लिए रुपए स्वीकृत कराए थे। मंत्री मीणा द्वारा हाल ही में स्वीकृत कराए गए महिला महाविद्यालय के संचालन वाली जगह पर विचार विमर्श करते हुए आगामी समय में मंडावरी कस्बे में शिक्षा के लिए क्या आमूलचूल परिवर्तन हो सकते हैं एवं शिक्षा का विकास किस तरह हो सकता है उस पर भी चर्चा की गई। स्कूल के लिए नए भवन निर्माण का निरीक्षण कर जायजा लेते समय चिकित्सा मंत्री द्वारा उपस्थित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी से क्षेत्र में खेले जाने वाले पांच अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के बेहतर लोकेशन एवं ज्यादा से ज्यादा छात्र छात्राएं अंग्रेजी माध्यम से लाभान्वित हो गए ऐसी जगहों के लिए विचार-विमर्श भी किया गया। वहीं चिकित्सा मंत्री मीणा द्वारा पर्याप्त संख्या एवं बेहतर लोकेशन सहित आगामी समय में अंग्रेजी माध्यम विद्यालय मैं सुविधा युक्त वातावरण के लिए पर्याप्त जगह रहने वाली जगह को चिन्हित करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान चिकित्सा मंत्री मीणा ने जानकारी देते हुए बताया कि नव निर्माणाधीन स्कूल भवन निर्माण को लेकर एक ठेकेदार द्वारा अनियमितता बरतने एवं निर्माण की मंथर गति को लेकर उसका कार्य आदेश निरस्त कर दिया गया। वहीं इस भवन के निर्माण को तेज गति मिले इसके लिए दूसरे ठेकेदार को कार्य दिए जाने की कार्रवाई की जा रही है। जिस निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर आरके मीणा, नगर पालिका लालसोट की चेयरमैन रक्षा मिश्र, स्वायत शासन संस्था के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व पालिका अध्यक्ष दिनेश मिश्र, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी गोविंद नारायण माली, स्थानीय प्रधानाचार्य भगवान सहाय मीणा, पूर्व सरपंच रामधन लाकडा, अधिशासी अधिकारी नमन शर्मा आदि कई अधिकारी एवं शहरवासी मौजूद रहे।

- अंग्रेजी माध्यम स्कूल की लोकेशन पर भी चर्चा की

नए सीएचसी भवन के मुख्य द्वार के नक्शे को लेकर विरोध

अलवर, (निसं)। अलवर ग्रामीण विधानसभा की ग्राम पंचायत बहादुरपुर में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को पिछली गहलोत सरकार में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में क्रमोन्नत किया गया। लेकिन घोषणा को लागू इस बार गहलोत सरकार में ही किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य भवन के नई बिल्डिंग के निर्माण में जो नया नक्शा जारी किया गया उसमें सीएससी के मुख्य द्वार को पश्चिम दिशा से हटाकर दक्षिण दिशा की ओर कर दिया गया जोकि बहादुरपुर से रामगढ की ओर जाने वाली सड़क की ओर दिखाया गया।

नए सीएससी भवन के निर्माण के लिए जब इंजीनियरों की टीम ग्राम बहादुरपुर पहुंची तो वहां उपस्थित पंच सरपंच व ग्रामीणों ने नक्शे में दक्षिण दिशा में दिखाए गए मुख्य द्वार बनाने का विरोध किया। क्योंकि सामुदायिक स्वास्थ्य भवन की वर्तमान स्थिति में मुख्य द्वार पश्चिम दिशा की ओर है यदि दक्षिण दिशा की ओर मुख्य द्वार बनता है तो ऐसे में दुर्घटनाओं सहित अनेक दुविधाओं का सामना भी करना पड़ सकता है। मुख्य द्वार के नक्शे को लेकर ग्रामीणों का विरोध अलवर ग्रामीण विधायक एवं राजस्थान सरकार में सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली के पास पहुंचा। ग्रामीणों की जायज मांग को लेकर मंत्री जूली ने उपखंड अधिकारी अलवर प्यारेलाल सोठवाल को मामले की जांच कर निस्तारण करने के निर्देश दिए। ग्रामीणों के गतिरोध को देखते हुए एसडीएम प्यारेलाल सोठवाल ने तत्परता दिखाते हुए संबंधित चिकित्सा विभाग, निर्माण शाखा से एईएन , जेईएन, सहित पंच सरपंच व ग्रामीणों को लेकर शनिवार को मौके का जायजा लिया नए नक्शे को लेकर मुख्य द्वार का जो विरोध था वह उचित पाया गया।

प्रकृति से अंतर संबंध स्थापित करने होंगे: डॉ. पहाड़िया

लालसोट, (निसं)। उपखंड क्षेत्र स्थित मायला कुआ पर वन विभाग व बायोडाइवर्सिटी रिसर्च एंड डेवलपमेन्ट सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया गया।

जिसमें बीआरडीएस के स्टेट कोर्डिनेटर डॉ. सुभाष पहाड़िया ने संबोधित करते हुए कहा कि लगातार जैवविविधता के स्तर में कमी हो रही है जिसके कारण वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन का सामना करना पड रहा है। तापमान में बढ़ोतरी ग्लैशियर का पिघलना खाद्य संकट का सामना करना पड रहा है। वनस्पति व जीवों की प्रजातियां तीव्र गति से विलुप्त हो रही है। ऐसे में हमे लोगों को जैवविविधता संरक्षण के लिए आमजन को जागरूक करना होगा। साथ ही यह समझ भी विकसित करनी होंगी की बिना प्रकृति के संरक्षण के मानव अस्तित्व भी संकट में ही है। जमीनी स्तर पर पारिस्थितिकी तंत्र की पुनर्बहाली के लिए अथक प्रयास करने के साथ ही प्रकृति से अंतरसंबंध स्थापित करने होंगे। जंगलों और वेटलैंड्स को बचाने के लिए स्थानीय स्तर पर हमारे सामुहिक प्रयास सकारात्मकता के साथ हो तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों को इस मुहिम से जुडकर सरकार तक जैवविविधता संरक्षण के लिए सरकारी स्तर भी प्रयास हो तो अभी भी हम भविष्य की पीढ़ी के लिये प्राकृतिक विरासत को सुरक्षित रख सकते है। वन विभाग के अधिकारी सुशील चंद यादव ने कहा कि आमजन के सहयोग से ही वन विभाग जैवविविधता का संरक्षण कर सकता है। प्राचार्य अंजना त्यागी ने कहा कि पृथ्वी को और जैवविविधता के संरक्षण हेतु स्काउट गाइड के स्वयंसेवक हमेशा प्रयासरत रहेंगे। डॉ पहाड़िया के नेतृत्व में विद्यार्थियों और वन विभाग के कर्मचारियों ने मायला कुआ क्षेत्र में आरावली पहाड़ियों का भ्रमण कर सभी को जैवविविधता की जानकारी प्रदान की गई।

- 'प्रकृति का संरक्षण मानव जीवन की गारंटी'

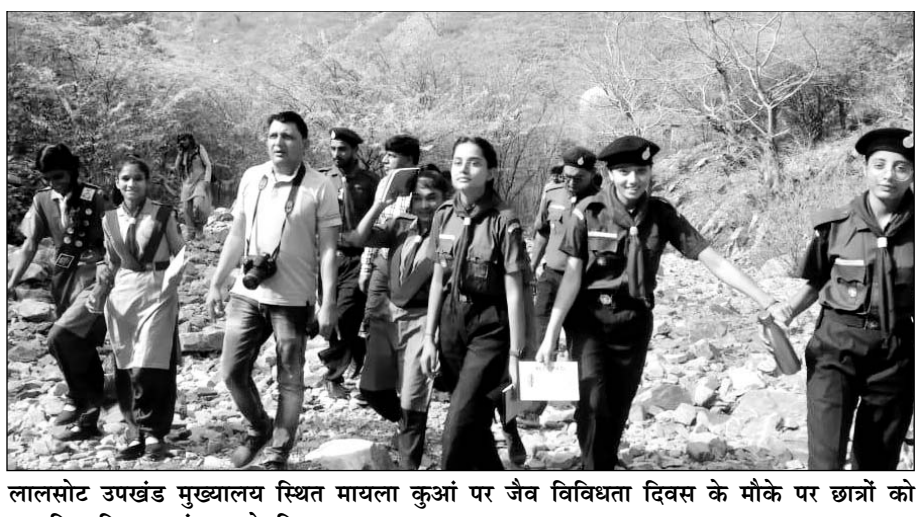

लालसोट उपखंड मुख्यालय स्थित मायला कुआं पर जैव विविधता दिवस के मौके पर छात्रों को प्राकृतिक विरासत संरक्षण के लिए वन भ्रमण कराया गया।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

IDFC FIRST Bank

(पूर्व में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)

CIN : L65110TN2014PLC097792

पंजीकृत कार्यालय - केआरएम टॉवर्स, 8वीं मंजिल, हैरिंगटन रोड, चेटपेट, चैन्नाई-600031

फोन- +91 44 4564 4000 | फैक्स- +91 44 4564 4022

वित्तीय अस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुनर्निर्माण एवं ब्याज प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के सैक्शन 13 (2) के तहत नोटिस

निम्न ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं ने नीचे वर्णित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड का सिक्योर्ड ऋण (पूर्व में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) से लिया था। निम्नलिखित ऋणग्रहितओं एवं सहऋणग्रहिताओं के ऋण उनकी अपनी-अपनी सम्पत्तियों के गिरवी रखने से सुरक्षित है। क्योंकि उन्होंने अपने-अपने ऋण एग्रीमेन्टस के नियम व शर्तों की पालना नहीं की है और अनियिमित हो गये है, उनके ऋणों को आरबीआई की गाइडलाइन्स के अनुसार एनपीए वग्रीकृत कर दिया गया है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशियाँ उनके पृथक नोटिस में लिखी गयी है तथा और विशेष रूप से निम्न सूचि में वर्णित है और उक्त राशियों पर आगे का ब्याज भी लागू होगा तथा वह उनकी अलग-अलग तिथियों से समझौते की प्रभावी दर से वसूला जायेगा।

क्रम संख्या	ऋण खाता संख्या	ऋण का प्रकार	ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के नाम	सैक्शन 13(2) के नोटिस की तिथि	सैक्शन 13(2) नोटिस के अनुसार बकाया राशि	सम्पत्ति का पता
1	10041310668, 10041312178 एवं 10041120554	गृह ऋण	1. सिद्धार्थ गुप्ता 2. सुनीता गुप्ता 3. आलोक गुप्ता	18.05.2022	2,37,18,027.72/-	**सम्पत्ति-** 1 व 2-रिहायशी सम्पत्ति फ्लेट नं. 313 व 314 तीसरे माले पर, बिल्डींग जिसे अथेना अपार्टमेंट के नाम से जाना जाता है, प्लाट नं. सी-2, सवाई जयसिंह हाईवे, बनीपार्क, जयपुर-302016 पर निर्मित है का पूरा व प्रत्येक भाग, फ्लैट नं. 313 कुल क्षेत्रफल करीब 1340.32 वर्गफीट व फ्लेट नं. 314 क्षेत्रफल करीब 182.43 वर्गफीट, सीमाएं है-पूर्व-खाली जगह, पश्चिम - अन्दर आने का रास्ता, दक्षिण-सीढियाँ, उत्तर-खाली जगह **सम्पत्ति-** 3 व 4 - रिहायशी सम्पत्ति फ्लेट नं. 906 नवीं मंजिल व फ्लेट नं. 1006 दसवीं मंजिल, बिल्डींग जिसे अथेना अपार्टमेंट के नाम से जाना जाता है, प्लाट नं. सी-2 सवाई जयसिंह हाईवे, बनीपार्क, जयपुर-302016 पर निर्मित है, का पूरा व प्रत्येक भाग, फ्लैट नं. 906 कुल क्षेत्रफल करीब 1357.16 वर्गफुट व फ्लेट नं. 1006 कुल क्षेत्रफल 205.25 वर्गफुट, जमीन व खुली छत के अधिकार के साथ क्षेत्रफल 1152.52 वर्गफुट का पूरा व प्रत्येक भाग, सीमाएं है पर्व-कारीडार व फ्लेट नं. 903, पश्चिम-खुली जगह, दक्षिण-खुली जगह, उत्तर-लिफ्ट

आपको एतद्द्वारा, इस प्रकाशन के 60 दिन के अन्दर, ऊपर सूचि में दर्शायी राशियों को उनकी प्रथम तिथि से, उस पर लगे आगे के समझौते में ब्याज दर तथा अन्य खर्चों, चार्ज आदि सहित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लि. (पूर्व में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को भुगतान करने को कहा जा रहा है, यदि ऐसा नहीं हुआ, तो अधोहस्ताक्षरकर्ता को, एसएआरएफएइएसआई एक्ट के सैक्शन 13(4) तथा सैक्शन 14 के तहत, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशि वसूल करने के लिये, गिरवी रखी सम्पत्तियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने के लिये बाध्य होना पडेगा/इसके अलावा उक्त एक्ट के सैक्शन 13 (13) के तहत आप उक्त सम्पत्तियों को बिक्री/लीज अथवा किसी अन्य प्रकार से ट्रांसफर नहीं करने के लिये प्रतिबंधित है।

ह./-

प्राधिकृत अधिकारी

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

(पूर्व में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)

दिनांक- 23.05.2022

स्थान- जयपुर

संक्षिप्त

स्टेट बैंक कर्मचारी कल्याण समिति के चुनाव 28 को

टोंक। भारतीय स्टेट बैंक अनुसूचित जाति जनजाति कर्मचारी कल्याण एसोसिएशन राजस्थान के चुनाव 28 मई को सवाईमाधोपुर में आयोजित किए जाएगे। मुख्य चुनाव अधिकारी नानूलाल मीणा ने बताया कि एसोसिएशन के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महासचिव, संगठन सचिव, सहायक सचिव, कोषाध्यक्ष सहित अन्य पदों के लिए जयपुर स्थित बैंक मुख्यालय पर नामांकन दाखिल कर सकते है तथा नाम वापसी 23 मई 2022 को सायं साढे 5 बजे तक ले सकते है।

10 बुलेट गाड़ियों पर कार्रवाई

टोंक । यातायात पुलिस की टीम ने टोंक शहर में बुलेट गाड़ियों से पटाखे की आवाज निकालने पर कार्यवाही करते हुए 10 वाहनों चालान किए, साथ मोटरवाहन अधिनियम में कुल 175 वाहनो के चालान किए। पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी के निर्देशानुसार यातायात पुलिस टोंक के प्रभारी भैंरुलाल जाट, हैडकांस्टेबल कुलदीप सिंह सिनसिनवार ने टोंक शहर में बुलेट गाडियों में तेज आवाज में पटाखे नुमा आवाज निकाल कर गाडी चलाने पर कार्यवाही करते हुए 5 वाहनों के चालान किए और टोंक शहर में रविवार को कुल मोटरवाहन अधिनियम में 175 वाहनों के चालान किए।

तीन खिलाड़ियों ने जीते मैडल

कोटपूतली। जयपुर में क्वांट फिटनेस द्वारा आयोजित ओपन पॉवर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में कोटपूतली के टर्बन फिटनेस जिम के तीन खिलाडियों अमृतपाल सिंह ने 625 किलो वजन उठाकर गोल्ड मैडल, जॉनी सेहरा ने 440 किलो वजन उठाकर सिल्वर मैडल जीता। वहीं कृष्ण कुमार ने भी अपना बेहतर प्रदर्शन करते हुए मैडल प्राप्त किया।

व्यक्ति की जेब से 6 हजार पार

निवाई। गिर्राज जाट निवासी पलेई रविवार की सुबह सरकारी अस्पताल में ओपीडी की पर्ची लेने के लाइन में खडा था। इसी दौरान उसकी जेब से अज्ञात ने 6 हजार रूपये निकाल लिये।

ट्रक व कार में हुई भिड़ंत, कार चालक की मौत

चाकसू, (निसं)। शनिवार देर रात को कस्बे में टोंक रोड मानव कॉलेज के पास एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ टोंक से जयपुर की ओर जा रहे एक बजरी से भरे ट्रक और कार में आमने सामने की जोरदार भिड़ंत हो गई दुर्घटना इतनी भयंकर थी की कार के परखच्चे उड़ गए और कार का आगे का आधा हिस्सा एवं वाहन चालक ट्रक के नीचे घुस कर बुरी तरीके से फंस गया।

- बड़ी मशक्कत के बाद कार चालक को निकाला बाहर

हादसे में कार का आगे का हिस्सा पूर्णतय क्षतिग्रस्त हो गया।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने 1 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद क्रेन एवं आसपास के लोगों की मदद से कार को ट्रक के नीचे से निकाल कर चालक को बाहर निकाला। वहीं हादसे में कार चालक गम्भीर रूप से घायल हो गया। जिसे एंबुलेंस की सहायता से चाकसू उपजिला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां गंभीर स्थिति होने के कारण प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रैफर किया था।

इस दौरान रास्ते में कार चालक की मौत हो गई पुलिस ने ट्रक को जप्त कर हादसे की जांच शुरू कर दी है। सब इंस्पेक्टर जितन्द्र वर्मा ने बताया कि रसूलपुरा निवासी प्रहलाद गुर्जर उम्र 25 वर्ष अपनी आल्टो कार से जयपुर से चाकसू की तरफ आ रहा था इस दौरान निवाई से जयपुर की और तेज रफ्तार जा रहे ट्रक ने कार को अपनी चपेट लेकर दुर्घटनाग्रस्त हो गए दुर्घटना के बाद दोनों और वाहनों की लम्बी कतारें लगने से जाम लग गया पुलिस ने मौके पर पहुंचकर यातायात को सुचारू करवाया। रविवार को मृतक का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया है वही पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे के जांच शुरू कर दी है।

मृतक के परिजनों को आर्थिक सहायता सौंपी

श्रीमाधोपुर। ग्राम पंचायत जाजोद में रविवार को सीकर परिवार संगठन ने सोशल मीडिया पर मुहिम चलाकर जाजोद निवासी सुरेन्द्र पुत्र सुमेर सिंह के परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान की। संगठन के सदस्य मक्खन कुड्डी ने बताया की जाजोद निवासी मृतक सुरेन्द्र सिंह दिल्ली में एक कंस्ट्रक्शन कंपनी में काम करता था जिसकी 5 मई को दिल्ली के विकासपुरी एरिया में सड़क हादसे में मौत हो गयी थी। मृतक सुरेंद्र सिंह के परिवार में उनकी मां, पत्नी और 4 छोटे बच्चे थे। परिवार में कमाने वाला वह अकेला ही था। जिसकी यथासंभव सहयोग के लिए सीकर परिवार संगठन ने सोशल मीडिया पर मुहिम की शुरुआत करके पीड़ित परिवार को आर्थिक सम्बल प्रदान करने के लिए 81 हजार रुपए की राशि एकत्रित की। एकत्रित राशि सीकर परिवार संगठन की सदस्या सरोज बराला के द्वारा संगठन के सदस्य मक्खन कुड्डी, राजपाल नेहरा, सुभाष लोरा व भंवर महला की उपस्थिति में पीड़ित परिवार को 81 हजार का चैक सौप कर प्रदान की गई। इस मौके पर उपसरपंच सुखसिंह शेखावत, महेन्द्र सिंह शेखावत, महेंद्र बगड़िया, सौरभ महला, श्रीराम कुड्डी, गिरधारी महला, रघुवीर सिंह, मुकेश सिंह आदि मौजूद थे।

मृतकों के परिजनों को सांत्वना दी

राजगढ़। राजगढ बांदीकुई मार्ग पर ट्रक एवं ऑटो रिक्शा हादसे में पिता-पुत्र एवं सास-बहू के निधन पर टेंट व्यवसाय से जुड़े राष्ट्र के पदाधिकारियों को राजगढ के टेंट व्यवसाई ललित टेंट हाउस के मालिक स्वर्गीय हरिराम सैनी एवं उनके परिजनों की मृत्यु पर शोक जताया। इस अवसर पर उन्होंने पीडित परिजनों को हर संभव मदद का आश्वासन दीया। ऑल इंडिया के अध्यक्ष रवि जिंदल राजस्थान के अध्यक्ष रासबिहारी शर्मा महामंत्री पर्वत सिंह भाटी कोषाध्यक्ष जितेंद्र गर्ग एवं जयपुर गार्डन एवं टेंट डीलर समिति अध्यक्ष रजनीश जयपुर के उपाध्यक्ष भाई विनोद शर्मा महामंत्री मुकेश छिपा कोषाध्यक्ष मनमोहन भारद्वाज एवं अन्य ने पीडित परिजनों को सांत्वनादी। संयुक्त सचिव गोपाल चौधरी उपाध्यक्ष गोवर्धन लाल शर्मा सह सचिव कांति कैलाश गोयल संरक्षक अलवर राकेश शर्मा आरके प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सहित अन्य मौजूद रहे। राजगढ में जिंदल साहब ने करीब 10 लाख की बच्चों के नाम एफडीआर की घोषणा शामियाना परिवार की तरफ से सहायता राशि की घोषणा करके गए हैं और किसी भी तरह के इन बच्चों को हर तरह मदद के लिए आश्वासन देकर गए।

संघर्ष समिति के आव्हान पर व्यापारियों ने आज राजगढ़ बंद करने का निर्णय लिया

राजगढ़, (निसं)। राजगढ़ बचाओ संघर्ष समिति एवं व्यापार महासभा की ओर से सराय बाजार तोड़फोड़ प्रकरण में गोविंद देवजी बाजार में बैठक हुई।

इस बैठक में सर्वसम्मति से मांगों के निराकरण को लेकर 23 मई सोमवार को राजगढ़ बंद का निर्णय लिया गया। सोमवार को राजगढ़ व्यापार संघ एवं राजगढ़ बचाओ संघर्ष समिति के संयुक्त तत्वाधान में प्रशासन को ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। इस बैठक में सभी व्यापार संघों की ओर से सराय बाजार प्रकरण में गैर नियोजित ढंग से करीब 86 आवासीय एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के साथ मंदिरों में तोड़फोड़ की निंदा की। वहीं चलते विगत 6 दिन से आमरण अनशन जारी है। शनिवार रात्रि को अमित गुप्ता की तबीयत खराब होने पर उसे अलवर रैफर किया गया। आमरण अनशन के छठे दिन संघर्ष समिति के अध्यक्ष दिनेश प्रधान एवं अमित गुप्ता के स्थान पर ललित साहू का आमरण अनशन जारी रहा।

राजगढ़ बचाओ संघर्ष समिति एवं व्यापार महासभा की ओर से सराय बाजार तोड़फोड़ प्रकरण में बैठक हुई।

बैठक में वक्ताओं ने करीब 1 माह से अधिक समय के बाद भी बेतरतीब ढंग से तोड़फोड़ से उजड़े परिवारों की मुआवजा एवं पुनर्वास, दोषी अधिकारियों के खिलाफ न्यायिक जांच सहित अनेक मांग रखी गई। इस आमसभा में राजगढ़ व्यापार महासभा के साथ अलवर जिला व्यापार संघ के अध्यक्ष रमेश जुनेजा एवं उनकी टीम ने राजगढ़ आम सभा को समर्थन दिया। राजगढ़ बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष दिनेश प्रधान एवं संयोजक प्रकाश दीक्षित ने बताया कि किसान सभा में सभी ने खुले मन से विचार व्यक्त करते हुए आंदोलन को पुरजोर ढंग से उठाने एवं उचित निस्तारण तक जारी रखने का आव्हान किया। इसे आम सभा को भूपेंद्र शर्मा, पवन नरूका पार्षद, भाजपा नेता सुनीता मीणा, प्रभु दयाल शर्मा, अशोक बजाज, सुरेंद्र माथुर, विश्वास मित्तल, अध्यक्ष बसंत गुप्ता, राजेंद्र जैन, संजय गुप्ता एवं अमरचंद फौजी सहित अनेक गणमान्य जन ने विचार व्यक्त किए। आम सभा का दोषपूर्ण अंदाज में प्रखर वक्ता प्रशांत गुप्ता ने किया। प्रशासन की ओर से कोई जिम्मेवारी नहीं लेने पर वक्ताओं ने जमकर प्रहार किया। बैठक में सराय बाजार मामले में

सार-समाचार

गौ जलसेवा परिवार की कार्यकारिणी गठित

फुलेरा। फुलेरा क्षेत्र में पिछले 3 वर्षों ने निराश्रित और बेसहारा गौ-वंशों की लिए कार्यरत संस्था गौ जल सेवा परिवार की कार्यकारिणी का गठन हरिसिद्ध हनुमान गौशाला सियाराम बाबा की बगीची फुलेरा के महंत त्रिलोकी दास महाराज की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम के दौरान सभी सदस्यों की सर्व सहमति से अमर चन्द सैनी को अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। संरक्षक के रूप में विजय गोपाल दाधीच, शेषनारायण सैनी, यादराम शर्मा, पूरणमल सैनी को नियुक्त किया गया है। तत्पश्चात वहीं नवनिर्वाचित अध्यक्ष अमर चन्द सैनी की अभिषंशा पर अनिल कुमार सैनी को सचिव के पद पर, कोषाध्यक्ष के पद पर संगीता धामा को नियुक्त किया गया। साथ ही उपाध्यक्ष के पद पर दिलीप सुरोलिया, पूनम कुमावत, बजरंग जोशी, राघवेंद्र शर्मा को नियुक्त किया। इसी प्रकार संगठन मंत्री के रूप मे कपूर चन्द शर्मा, गीता गुप्ता, किशन शर्मा, घनश्याम दास माली को तो इसी क्रम में सहसंगठन मंत्री के रूप गजानंद कुमावत, अखिल कुमावत को नियुक्त किया गया तो प्रचार मंत्री के पद पर सूरज सैनी (सब्जी मंडी), ताराचंद सैनी, विकास शर्मा, रमन सैनी, चतुर्भुज कुमावत को नियुक्त किया गया। इसी प्रकार विधि सलाहकार के पद पर एडवोकेट महेन्द्र कुमावत व एडवोकेट मुकेश कारडिया को चुना गया।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ

निवाई। सत्यासत्य निर्णय योग साधना वेद आश्रम मूंडिया में रविवार को विशाल ऋग्वेद पारायण महायज्ञ व प्रवचन माला का ध्वजारोहण के साथ शुभारंभ हुआ। राजस्थान प्रशासनिक सेवा अधिकारी केसरलाल मीणा ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वामी आत्मज्ञानन्द तथा उपखण्ड अधिकारी विजेन्दर मीना द्वारा ध्वजारोहण करके किया। तत्पश्चात आचार्य योगेश भारद्वाज, जीतेन्द्र आर्य, महिपाल आर्य, राकेश शास्त्री ने ऋग्वेद मन्त्रों के साथ यज्ञ कुंड में आहुतियां दिलवाई। बहिन सविता शास्त्री ने भजनों एवं हृदय परिवर्तन करने वाले प्रवचनों के माध्यम से सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम में विधायक प्रशांत बैरवा, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष राजेश चौधरी, हनुमान मीना, एडवोकेट सतीश शर्मा, सीताराम कटारा, पप्पूलाल मीणा, चैनपुरा सरपंच मदनलाल मीणा ने अपना योगदान दिया। इस दौरान श्रद्धालु राजेश चौधरी ने एक दिन के भोजन की व्यवस्था करवाने की घोषणा की। इसी अवसर पर समस्त ग्रामवासियों ने विधायक प्रशांत बैरवा द्वारा आश्रम पर वाचनालय के लिए 5 लाख रूपए का सहयोग देने पर धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर राधेश्याम, मदनलाल, रामधन, प्रहलाद मीना, शंकर जैन, शंकर मीना, मुकेश मीना, पदम मीना, कैलाश मेम्बर, मीठालाल व गंगासहाय मीणा सहित समस्त ग्रामवासी मौजूद थे।

11 साल से फरार स्थाई वारन्टी गिरफ्तार

रींगस। पुलिस महानिदेशक व पुलिस अधीक्षक सीकर के निर्देश पर वांछित अपराधियों एवं असामाजिक तत्वों के विरूद्ध चल रही कार्यवाही में रींगस पुलिस ने 11 साल से फरार चल रहे एक स्थाई वारंटी को गिरफ्तार कर लिया। थानाधिकारी हिम्मत सिंह ने बताया कि न्यायालय अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट रींगस के प्रकरण संख्या 530/ 2011 धारा 380 भादस सर बनाम सुरेश कुमार में फरार अभियुक्त सुरेश कुमार उर्फ भोमाराम पुत्र सुगन चन्द जाति कुमावत निवासी सबलपुरा थाना चितावा जिला नागौर का वर्ष 2011 से न्यायालय में स्थाई गिरफ्तारी वारन्ट चल रहा था। इस पर टीम गठित कर आरोपित को गिरफ्तार कर लिया। उसे न्यायालय में पेश किया गया जहा से उसे न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।

हेमन्त को मिला इंडिया प्राईम अवार्ड

मालपुरा। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गरजेडा के शिक्षक हेमन्त कुमार शर्मा को फॉक्स क्यूज द्वारा इंडिया प्राईम अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया। शिक्षक हेमन्त शर्मा का चयन देश के 100 चुनिन्दा शिक्षकों में किया गया तथा शर्मा को यह अवार्ड कोविड समय में स्कूल के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोडे रखना, ऑनलाईन शिक्षण कार्य पर जोर देना, बैक टू हॉम वर्क स्माईल कार्यक्रम सहित अन्य शैक्षिक कार्यों के साथ-साथ कोविड वैकसीनेशन कार्य 0 से 10 आयु की बालिकाओं के सुरक्षित भविष्य के लिए सुकन्या स्मद्धि योजना में बैंक खाते खुलवाना,वृक्षारोपण व पंछी परिडे लगाने के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता के किये गये कार्यों पर शिक्षक को इंडिया प्राईम अवार्ड से सम्मानित किया गया।

शिविर में 11 यूनिट रक्त संग्रहित

कोटपूतली। कस्बे के शक्ति विहार कॉलोनी निवासी सामाजिक कार्यकर्ता जितेन्द्र आर्य के सौजन्य से यहां के राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जहाँ भीम आर्मी जिलाध्यक्ष व पार्षद तारा पूतली के नेतृत्व में 11 कार्यकर्ताओं ने राजकीय अस्पताल के ब्लड बैंक में रक्तदान किया। साथ ही इस अवसर पर मरीजों को फलों का वितरण भी किया गया। इस दौरान बीडीएम अस्पताल के पीएमओ डॉ. अश्वनी गोयल, मक्खनलाल वर्मा, बाबूलाल नैनावत, डॉ. जयदयाल, सतपाल मोरोडिया, अमित रायपुर, बबलू खाडा, देशराज आर्य, भूपसिंह आर्य, नीरज व सचिन गुर्जर सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

पेड़ से गिरकर राष्ट्रीय पक्षी घायल

बौंली। क्षेत्र के लाखनपुर ग्राम पंचायत अंतर्गत खेडा गांव में शनिवार रात्रि को चले अंधड व हल्की वर्षा के कारण पेड से गिरकर राष्ट्रीय पक्षी मोर घायल हो गया। ग्रामीण सूरजमल वैष्णव ने बताया कि शनिवार रात्रि को खेडा गांव में अंधड व वर्षा से पेड पर विश्राम कर रहा राष्ट्रीय पक्षी मोर गिरकर घायल हो गया। घायल मोर को सुबह जब राहगीर गिर्राज मीणा ने देखा तो घायल मोर को कुत्ते नोच रहे थे। कुत्तों को भगाकर गिर्राज घायल मोर को अपने घर ले आया एवं इसकी जानकारी प्रबुद्ध नागरिकों को दी। ग्रामीणों ने घायल मोर की सूचना बौंली रेंज कार्यालय पर वनपाल भूपेंद्र जादौन को दी। जिस पर वन विभाग ने तुरंत वन कर्मी घनश्याम शर्मा को मौके पर भेजा।

प्रधान बस्तीराम यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर विधायक पर लगाये आरोप

बहरोड़/नीमराना। बहरोड़ पंचायत समिति में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य बस्तीराम यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। जिसमें बहरोड के जिला नहीं बनने व क्षेत्रीय समस्याओं को उठाते हुए पूर्व वरिष्ठ क्षेत्रीय राजनीति के कद्दावर नेता उपस्थित रहे।

जिनमें नंदराम ओला, विरजानंद यादव, प्रदीप पार्षद सहित सैकड़ों की संख्या में उपस्थित क्षेत्रीय वरिष्ठ लोगों के सानिध्य में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर क्षेत्र की समस्याओं को उठाते हुए बताया कि बहरोड़ विधायक द्वारा कृषि भूमि पर अवैध कॉलोनियों से राशि वसूल की जा रही है पंचायत समिति की टिकटें राज्य सरकार से लेने में बाधा डालते हुए कहा कि समर्थन वापस लेकर विरोध करूंगा। इस प्रकार विधायक ने कांग्रेस पार्टी को गर्त में ले जाने का कार्य किया है कोशिश की है।

बस्तीराम यादव ने कहा कि बहरोड पंचायत समिति के प्रधान बनने में भी विधायक द्वारा भारी विरोध किया गया परंतु गंडाला से जोशी, अजीत ठेकेदार आदि सभी के अलावा क्षेत्र की जनता के आशीर्वाद से मुझे प्रधान बनने से नहीं रोक पाए। जब से विधायक बहरोड राजनीति में आया है बहरोड़ अपराध जगत का केंद्र बन गया है जिसमें वेश्यावृत्ति, हत्याकांड, गोलीकांड, व्यापारी का अपहरण आदि घटनाएं होती दिखाई दे रही हैं। इस दौरान यादव ने कहा कि बहरोड़ विधायक के द्वारा जनप्रतिनिधियों की तथा कर्मचारियों व आम नागरिकों की समस्याएं सुनने के बजाय गंडाला में किसी व्यक्ति द्वारा पूछने पर उसको डीएसपी से कहकर जेल में बंद करवा दिया वहीं नीमराणा पीएचसी की महिला कर्मचारी द्वारा गार्ड की मांग करने पर उसे जलील करते हुए धमकाया वहीं उन्होंने कहा कि विधायक किसी भी जनप्रतिनिधि को चुनाव में नहीं जीता पाया है। विधायक जनता की आंखों में धूल झोंक रहा है परंतु बहरोड़ क्षेत्र की जनता लाखों आंखों से देखती है जिसमें विधायक द्वारा भू माफिया, शराब माफिया तथा उद्योगों से अवैध वसूली की जा रही है। वहीं बहरोड को जिला बनाओ संघर्ष समिति के मामले में विधायक ने शकुंतला रावत इंद्राज गुर्जर, राजेंद्र यादव आदि लोगों से मिलकर बहरोड़ को जिला बनाने की मांग पर एक शब्द भी नहीं कहा तथा झूठी वाहवाही लूटने के लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस की और इसी के चलते मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कार्यक्रम में नहीं गया उन्होंने कहा कि बहरोड़ के लिए निर्भीक होकर लड़ने की हिम्मत रखते हैं और लड़ूंगा तथा मरते दम तक सभी जनप्रतिनिधियों का सम्मान करते हुए क्षेत्र की समस्याओं को हल करने में पूरा सहयोग दूंगा। विधायक पर आरोप लगाते हुए कहा कि जनता जल मिशन के ठेकेदारों को डराया धमकाया जा रहा है तथा उनसे रुपए मांगने की वजह से ठेकेदार गांव में जनता जल जीवन मिशन के लिए कार्य करने में असमर्थता जाहिर की गई है।

सीएलजी सदस्यों की बैठक आयोजित

फुलेरा। फुलेरा कस्बे की न्यू कॉलोनी स्थित अग्रवाल पंचायत भवन परिसर में जन सभागिता को लेकर सीएलजी सदस्यों की एक बैठक थानाधिकारी रघुवीर सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक के प्रारंभ में थानाधिकारी रघुवीर सिंह राठौड़ ने जनसभागितता को लेकर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जनसहयोग के बिना पुलिस अधूरी है। सभी के सहयोग से ही अपराधों पर अंकुश लग सकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि पुलिस का काम सत्यापन करना है, लेकिन जनता का काम सत्यापन करवाना है। साथ ही उन्होंने कहा कि मुख्य बाजार में यातायात व्यवस्था को व्यवस्थित करने में व्यापारी भी सहयोग प्रदान करे। इसअवसर पर नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जितेन्द्र अग्रवाल, विमल जैन,अब्दुल लतीफ कुरैशी, शेलेन्द्र शर्मा, महेन्द्र सैनी, दैनिक रेलयात्री संघ एकीकृत के अध्यक्ष अशोक वासदेव, दुर्गा सिंह नरुका, हीरालाल चौधरी, भगवती देवी, मोहम्मद अजीज लुहार सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

सूने मकान में चोरी करते दो को रंगे हाथों गिरफ्तार किया

निवाई। शनिवार की रात को एक मकान में चोरी की नियत से घुसे दो लोगों को पुलिस ने चोरी करते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया।

थानाधिकारी अजय कुमार ने बताया कि शनिवार की रात को सूचना मिली कि 80 फीट रोड पर स्थित विजयनारायण शर्मा के मकान में दो लोग कुल्हाडी और लोहे का सरिया लेकर घुस गए हैं। मकान मालिक के पुत्र संजय शर्मा ने देखा तो उसे मकान में दो जने चोरी के लिए सामान को इधर-उधर बिखेरते हुए दिखाई दिए। उसने किरायेदार हनुमान रॉयल निवासी मिदियान नागौर को घटना के बारे में बताया। किरायेदार हनुमान भी किसी कार्य से बाहर गया हुआ था। हनुमान ने पडौसियों व पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस के जवान मौके पर पहुंचे। मकान के बाहर खडे लोगों ने पुलिस को बताया कि मकान की लाइट जली हुई है तथा किसी चीज को तोडने की आवाजें आ रही हैं। इस पर कांस्टेबल भारत भूषण और कालूराम ने मकान की दीवार फांदकर अंदर प्रवेश किया। मकान के अंदर दो जने सामान बिखरते दिखाई दिए। दोनों को कांस्टेबलों ने चोरों को ललकारा तो चोरों ने उन पर कुल्हाडी और लोहे की रॉड से हमला कर दिया। कांस्टेबलों ने मुस्तैदी दिखाते हुए उनके वार से बचा लिया। इतने में ही चोर दोनों कांस्टेबलों को धक्का मारकर मकान के तलघर की तरफ दौडे। दौडते समय दोनों तलघर की सीढियों से लुढकते हुए नीचे गिरकर घायल हो गए। पुलिस कांस्टेबलों ने तलघर में जाकर दोनों पकड लिया और उपचार के लिए सीएचसी में भर्ती करवाया। दोनों आरोपियों को चोरी करने के प्रयास, पुलिस कांस्टेबलों पर जानलेवा हमला करने सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर पवन जाटव पुत्र राजकुमार जाटव उम्र 24 वर्ष निवासी रोहिणी सेक्टर 25 दिल्ली तथा मुरारी तेली उम्र 40 पुत्र कालीचरण तेली निवासी दिल्ली बायपास बलसवा डेयरी दिल्ली को गिरफ्तार कर लिया गया।

मालपुरा में राजपूत समाज की 140 प्रतिभाओं का सम्मान किया

मालपुरा, (निसं)। राजपूत सभा के बैनर तले रविवार को राजपूत छात्रावास में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। राजऋषि समता राम महाराज नाद पुष्कर के मुख्य आतिथि में हुए प्रतिभा सम्मान समारोह में भंवर सिंह पलाडा, रामसिंह चन्दलाई प्रदेशाध्यक्ष राजपूत सभा जयपुर बलवीर सिंह हातोज महामंत्री जयपुर, मदन सिंह चौहान जिलाध्यक्ष टोंक, हनुमान सिंह सोंलकी महामंत्री टोंक व चन्द्रवीर सिंह चौहान युवा महासभा अध्यक्ष टोंक,नरेन्द्र सिंह आमली, टोंक तहसील अध्यक्ष उमराव सिंह सोनवा, नरेन्द्र सिंह तहसील अध्यक्ष पीपलू, भागीरथ सिंह तहसील अध्यक्ष टोडारायसिंह ने महाराणा प्रताप व मां दुर्गा के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवल्लित कर सम्मान समारोह का आगाज किया।

राजपूत महासभा तहसील अध्यक्ष धनसिंह राजावत ने बताया कि समारोह में कक्षा 10 के 30 कक्षा 12 के 35 स्नातक व उच्च स्नातक के 20, खेलकुद कोटे से 20, राजकीय सेवा नियुक्ति के 18, सेवानिवृत्त व जनप्रतिनिधि कोटे से 6 सहित कुल 140 प्रतिभाओं का सामाजिक मंच पर स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र से सम्मान कर उत्साहवर्धन किया गया।

अतिथियों ने समाज में फैली कुरीतियों को त्याग शिक्षा के क्षेत्र में विशेष जोर देने के साथ-साथ राजपूती बेटियों को पर्दे से बाहर निकाल उच्च शिक्षा व उच्च पदो पर समाज का गौरव बढाये जाने के लिए प्रेरित किये जाने पर जोर दिया। सम्मान समारोह के दौरान राजपूत सरदारों ने राजनैतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में समाज की मजबूत पकड के लिए एकजुटता का संदेश दिया। साथ ही अजमेर रोड स्थित राजपूत छात्रावास विकास के लिए नरेन्द्र सिंह आमली ने 1 लाख, नारायण सिंह आमली ने 1 लाख, भंवर सिंह पलाडा ने 1 लाख, शेरसिंह राजावत ने 31 हजार, भंवर सिंह चबराना ने 31 हजार, विष्णु सिंह मालुणी ने 27 हजार, विमला कंवर नगर ने 11 हजार की सहयोग राशि की घोषणा की। कार्यक्रम संचालन रघुवीर सिंह,भंवर सिंह,ने किया। राजपूत समाज के बैनर तले हुए प्रथम प्रतिभा सम्मान समारोह के सफल आयोजन पर तहसील अध्यक्ष धनसिंह सहित कार्यकारिणी को समाज बंधुओ ने बधाई दी।

मालपुरा में राजपूत सभा के बैनर तले राजपूत छात्रावास में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

- कुरीतियों को त्याग शिक्षा पर जोर दिया

शिविर की तैयारियां जोरों पर

श्रीमाधोपुर। जिला अंधता निवारण समिति जयपुर के आर्थिक सहयोग व रोटरी क्लब श्रीमाधोपुर सनराइज एवं सत्यनारायण कैलाश चंद कयाल के संयुक्त तत्वावधान में आगामी 1 जून बुधवार को डॉक्टर माधव सिंह हॉस्पिटल के पास स्थित स्वर्गीय चौधरी नाथूराम भामू रोटरी भवन श्रीमाधोपुर में प्रातः 9 से दोपहर 1 बजे तक आयोजित किए जाने वाले निशुल्क मोतियाबिंद जांच एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर की तैयारियां अभी से प्रारंभ कर दी गई है। रोटरी क्लब श्रीमाधोपुर सनराइज के पूर्व अध्यक्ष दिलीप सिंह शेखावत के अनुसार शिविर में आने वाले मरीजों की जांच शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर के चिकित्सकों एवं उनकी टीम द्वारा की जाएगी, टीम द्वारा चयनित मरीजों की सर्जरी निशुल्क रूप से जयपुर ले जाकर की जाएगी। बताया गया है कि मोतियाबिंद के मरीजों को चश्मा, भोजन व रहने की व्यवस्था निशुल्क की जाएगी। मरीज़ों से कहा गया है कि वे अपने साथ अपना मोबाइल, आधार कार्ड की दो फोटो कॉपी आवश्यक रूप से साथ लेकर आनी है।

'भारत की तरक्की का रास्ता गांव की पगडंड़ी से गुजरता है'

टोंक। देश की राजधानी नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में 20 - 21 मई को पंचायत राज व्यवस्था के विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में टोंक के गांधीवादी मुजीब आजाद ने राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए गांधी एवं ग्राम स्वराज पर व्याख्यान दिया और टोंक जिले सहित राजस्थान का गौरव बढ़ाया है।

- दिल्ली में पंचायत राज व्यवस्था के विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में टोंक के मुजीब आजाद ने व्याख्यान दिया

इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस नई दिल्ली द्वारा महात्मा गांधी और ग्राम स्वराज्य विषय पर दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के पंचायत राज से जुड़े हुए निर्वाचित प्रतिनिधियों, पंचायत राज पर शोध करने वाले विद्वान विशेषज्ञों तथा विश्वविद्यालयों के सामाजिक विज्ञान, ग्रामीण विकास, राजनीतिक विज्ञान में दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष सहित वर्तमान व पूर्व सांसदों ने भाग लिया। कॉन्फ्रेंस में गांधीवादी विचारक मुजीब आजाद ने कहा कि भारत की तरक्की का रास्ता गांव के खेत खलिहान की पगडंडी से होकर गुजरता है। मुजीब आजाद ने कहा कि महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य की पालना करते हुए यदि गांव का समग्र विकास और आदर्श गांव की परिकल्पना को लागू किया जाए तो गांव से होने वाले शहरी पलायन को रोका जा सकता है, गैर बराबरी को समाप्त किया जा सकता है, उन्होंने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था ग्रामीण व्यवस्था पर निर्भर है, मुजीब आजाद ने पंचायत राज के निर्वाचित प्रतिनिधियों से आव्हान किया है कि वह गांधी के विचार को जीवन में अपनाते हुए अपना जीवन गांव को समर्पित करें गांधी के बताए हुए नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए देश को उन्नति की ओर ले जाएं।

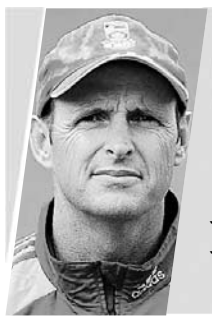

जाहिर तौर पर हम उनसे (साहा) काफी है। उनका (साहा) टीम में होना शानदार है। वह एक पेशेवर है और उन्हें आईपीएल और क्रिकेट के सभी प्रारूपों का अच्छआ अनुभव है। **- गैरी कर्स्टन**

गुजरात टाइटंस के मार्गदर्शक, ऋद्धिमान साहा के बारे में।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

एच.एस. प्रणय

टखने में चोट के बाद भी अपने करियर की सबसे यादगार जीत में से एक दर्ज करने के बाद भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी एच एस प्रणय ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में हार व मानने की मानसिकता ने उन्हें थॉमस कर सेमीफाइनल में डेनमार्क पर शानदार जीत के दौरान प्रेरित किया। प्रणय ने निर्णायक एकल मैच में शानदार प्रदर्शन किया जिससे भारतीय पुरुष टीम ने यहां डेनमार्क पर 3-2 सेज ीत के सात इतिहास रच दिया। भारतीय टीम पहली बार थॉमस कप के फाइनल में पहुंचने में सफल रही।

क्या आप जानते हैं ?... ऑस्ट्रेलिया के खब्बू स्पिनर फ्लीड वुड स्मिथ ने इंग्लैंड के विरुद्ध 1932 में 87 ओवर में 298 रन पर एक विकेट लिया था। ये आज तक एक टेस्ट पारी में किसी भी गेंदबाज द्वारा दिए गए सबसे ज्यादा रन है।

आईपीएल के आखिरी लीग मैच में पंजाब ने हैदराबाद को पांच विकेट से हराया

हरप्रीत बरार ने जीता मैन ऑफ द मैच का खिताब

मुम्बई, 22 मई। लियाम लिविंग्स्टन की पांच छक्कों से सजी 49 रन की तूफानी पारी की बदौलत पंजाब किंग्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को आईपीएल के परिणामं के लिहाज से महत्वहीन मुकाबले में रविवार को 29 गेंद शेष रहते पांच विकेट से हरा दिया। पंजाब ने इस तरह जीत के साथ आईपीएल में अपना अभियान समाप्त किया।

वही हरप्रीत बरार ने शानदार गेंदबाजी का प्रदर्शन करते हुए तीन विकेट लेकर मैन आफ दी मैच का खिताब जीता। हैदराबाद ने अभिषेक शर्मा (43), वाशिंगटन सुंदर (25) और रोमरियों शेफर्ड (नाबाद 26) की उपयोगी पारियों से 20 ओवर में आङ्ग विकेट पर 157 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया लेकिन पंजाब ने 15.1 ओवर में पांच विकेट पर 160 रन बनाकर आसान जीत हासिल कर ली। पंजाब की 14 मैचों में यह सातवीं जीत रही जबकि हैदराबाद 14 मैचों

में आङ्ग्वीं हार के साथ पंजाब से दो स्थान नीचे आठवें स्थान पर रहा। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरे हैदराबाद के लिए सलामी बल्लेबाज अभिषेक ने 32 गेंदों पर 43 रन में पांच चौके और दो छक्के लगाए। राहुल त्रिपाठी ने 18 गेंदों में 20 और एडन मारक्रम ने 17 गेंदों में 21 रन बनाये। हैदराबाद ने अपना पांचवां विकेट 96 के स्कोर पर गंवा दिया था लेकिन इसके बाद सुंदर और शेफर्ड ने छठे विकेट के लिए 58 रन की साझेदारी की। सुंदर ने 19 गेंदों की अपनी पारी में तीन चौके हुए एक छक्का लगाया जबकि शेफर्ड ने 15 गेंदों की अपनी पारी में दो चौके और दो छक्के लगाए।

स्कोर बोर्ड

हैदराबाद	रन	गेंद	4	6
प्रियम गर्ग का मयंक बो रबाडा	4	7	0	0
अभिषेक का लिविंगस्टन बो हरप्रीत	43	32	5	2
त्रिपाठी का धिवन बो हरप्रीत	20	18	1	1
मार्करम स्टं जितेश बो हरप्रीत	21	17	2	0
निकोलस का जितेश बो एलिस	5	10	0	0
वॉशिंगटन का धवन बो नाथन	25	19	3	1
रोमारियो नाबाद	26	15	2	2
जगदीश का प्रेक बो नाथन	0	1	0	0
भुवनेश्वर रन आउट	1	1	0	0
उमरान नाबाद	0	1	0	0
अतिरिक्त :	12			
कुल : 20 ओवर में 8 विकेट पर 157 रन				
विकेट पतन : 1-14, 2-61, 3-76, 4-87, 5-96, 6-154, 7-154, 8-156				
गेंदबाजी : लिविंगस्टन 4-0-25-0, अर्शदीप 4-0-25-0, रबाडा 4-0-38-1, नाथन 4-0-40-3, हरप्रीत 4-0-26-3				

पंजाब	रन	गेंद	4	6
बेयरस्टो बो फजल	23	15	5	0
धवन बो फजल	39	32	2	2
शाहरुख का सुंदर बो उमरान	19	10	2	1
मयंक का जगदीश बो सुंदर	1	4	0	0
लिविंगस्टन नाबाद	49	22	2	5
जितेश का प्रियम बो जगदीश	19	7	3	1
प्रेरक नाबाद	4	1	1	0
अतिरिक्त :	6			
कुल : 15.1 ओवर में 5 विकेट पर 160 रन				
विकेट पतन : 1-28, 2-66, 3-71, 4-112, 5-133				
गेंदबाजी : भुवनेश्वर 2-0-22-0, सुंदर 2-0-19-1, फजल 4-0-32-2, जगदीश 4-0-38-1, उमरान 2.1-0-24-1, रोमारियो 1-0-23-0				

पुजारा की टेस्ट टीम में वापसी, प्रसिद्ध कृष्णा नया चेहरा

नई दिल्ली, 22 मई। इंग्लैंड के ख़िलाफ़ होने वाले एकमात्र टेस्ट के लिए चेतेश्वर पुजारा की भारतीय टीम में वापसी हुई है। दक्षिण अफ्रीका में ख़राब प्रदर्शन के बाद पुजारा को श्रीलंका के ख़िलाफ़ खेली गई घरेलू टेस्ट सीरीज़ से बाहर कर दिया गया था। अब काउंटी क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन कर उन्होंने टीम में वापसी की है।

चोट के कारण आईपीएल से बाहर हुए रवींद्र जडेजा को भी 17 सदस्यीय दल में जगह मिली है, जबकि प्रसिद्ध कृष्णा नए चेहरे हैं। इंग्लैंड के ख़िलाफ़ यह टेस्ट एक से पांच जुलाई के बीच एजबेस्टन में खेला जाएगा।

इंग्लैंड के ख़िलाफ़ एकमात्र टेस्ट के लिए भारतीय दल- रोहित शर्मा (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, हनुमा विहारी, चेतेश्वर पुजारा, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), केएस भरत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, रवि अश्विन, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद शमी, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, प्रसिद्ध कृष्णा।

पर्वतारोही पियाली बसाक ने एवरेस्ट पर फहराया तिरंगा

कोलकाता, 22 मई। पश्चिम बंगाल से आने वाली पर्वतारोही पियाली बसाक ने रविवार को एक नयी उपलब्धि हासिल करते हुए बिना पूरक ऑक्सीजन के माउंट एवरेस्ट (8848 मी) की चढ़ाई पूरी की। एक अक्टूबर, 2021 को माउंट धौलागिरी-1 (8167 मीटर) को सफलतापूर्वक फतह करने वाली बसाक पूरक ऑक्सीजन के बिना दुनिया के सातवें सबसे ऊंचे पर्वत के शिखर पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला बनी थीं। एक रिपोर्ट में काठमांडू में उनके एजेंट कार्यालय मेसर्स पायनियर के हवाले से कहा गया कि उन्होंने एवरेस्ट पर पहुंचने के बाद लगभग सुबह नौ बजे राष्ट्रीय तिरंगा फहराया। संदेश में कहा गया कि पियाली बसाक बिना पूरक ऑक्सीजन समर्थन के दुनिया के शीर्ष पर पहुंच गई हैं।

पियाली बसाक पूरक ऑक्सीजन समर्थन के बिना माउंट एवरेस्ट और माउंट ल्होत्से को फतह करने के लिए निकली थीं। धन की कमी के कारण उन्हें अपना अभियान लगभग छोड़ना पड़ा था, लेकिन आखिरकार उन्हें शुक्रवार की सुबह एवरेस्ट के लिये अनुमति मिल गई। पियाली बसाक ने शनिवार को शाम सात बजे (नेपाली समय) के आसपास अपना सफ़र शुरू किया और नेपाल की ओर से एक शेरपा गाइड के साथ लगभग सुबह नौ बजे (नेपाली समय) शिखर पर पहुंच गयीं। पियाली बंगाल की पहली महिला हैं जिन्होंने बिना ऑक्सीजन की बोतल के एवरेस्ट पर चढ़ाई की है, जो कम से कम 27,000 फीट ऊपर है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि एक दिन के आराम के बाद, हुगली जिले के चंदननगर की पियाली सोमवार को बिना ऑक्सीजन की बोतल के 8,516 मीटर की ऊंचाई पर दुनिया के चौथे सबसे ऊंचे पर्वत ल्होत्से पर चढ़ाई का प्रयास करेंगी।

मैदान पर मौजूद खिलाड़ी आश्वस्त नहीं थे, इसलिये रिव्यू नहीं लिया : रिषभ पंत

मुंबई, 22 मई । दिल्ली कैपिटल्स और मुंबई इंडियन्स के बीच शनिवार को खेले गये आईपीएल मैच में जब टिम डेविड बल्लेबाज़ी करने आये तो मुंबई को 33 गेंदों पर 65 रन चाहिये थे। डेविड की पारी की पहली गेंद उनके बल्ले का किनारा छूकर रिषभ पंत के दस्तानों में जा पहुंची।

हल्की आवाज़ आने पर पंत ने अपील भी की, लेकिन अंपायर ने आउट नहीं दिया और कुछ सोच-विचार करने के बाद पंत ने रिव्यू भी नहीं लिया। उस समय दिल्ली कैपिटल्स के पास दोनों रिव्यू बाकी थे। इसके बाद डेविड ने 10 गेंदें खेलकर ताबड़तोड़ 34 रन बनाये और मुंबई पांच गेंदें रहते मैच जीत गयी।

मैच के बाद स्टार स्पोर्ट्स से बात करते हुए पंत ने कहा कि मैदान पर मौजूद अन्य खिलाड़ी विकेट को लेकर आश्वस्त नहीं थे इसलिये उन्होंने रिव्यू नहीं लिया उन्होंने कहा कि मुझे लगा कि वहां कुछ था, इसलिये मैंने

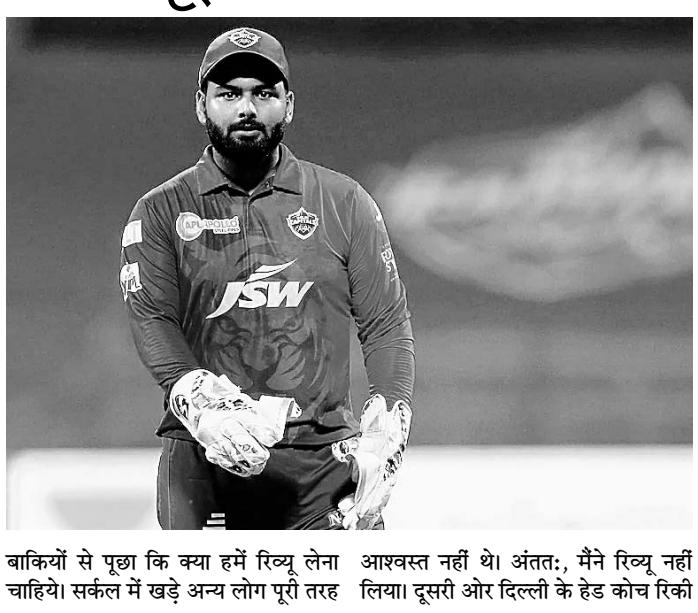

बाकियों से पूछा कि क्या हमें रिव्यू लेना चाहिये। सर्कल में खड़े अन्य लोग पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। अंततः, मैंने रिव्यू नहीं लिया। दूसरी ओर दिल्ली के हेड कोच रिकी पॉन्टिंग ने कहा कि उनकी टीम सिर्फ एक निर्णय की वजह से मैच नहीं हारी, बल्कि उनकी हार के अन्य कारण भी थे उन्होंने पोस्ट मैच कांफ्रेंस में कहा कि मैच के एक पहलू पर उंगली रखकर बताना हमेशा मुश्किल होता है। मैच की शुरुआत में हमारे ऊपरी क्रम के बल्लेबाज़ों ने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। हमने करीब 30-40 रन पर चार विकेट खो दिये थे। यह एक टी20 मैच की अच्छी शुरुआत नहीं थी। खासकर ऐसे मैच की जिसे जीतना हमारे लिये आवश्यक था।"

पॉन्टिंग ने कहा कि टिम डेविड पहली बॉल पर करीब-करीब आउट होने के बाद अच्छा खेले, लेकिन मैच के ऐसे कई पहलू हैं जिनसे हम निराश होंगे। महत्वपूर्ण यह है कि खिलाड़ी ऐसे मैचों से कुछ न कुछ सीखेंगे। अंततः, मैं बहुत दुखी महसूस कर रहा हूं कि मैच हमारे हाथों से फिसल गया जब उन्हें आखिरी सात या आठ ओवरों में 12 रन प्रति ओवर चाहिये थे।"

मध्यप्रदेश को 3-0 से हराकर यूपी तीसरे स्थान पर

इंफाल, 22 मई। बेहतरीन तालमेल और तेजतर्रार खेल का प्रदर्शन करते हुये उत्तर प्रदेश ने 12वीं हाकी इंडिया सब जूनियर महिला हाकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप में मध्य प्रदेश को 3-0 से हराकर तीसरा स्थान प्राप्त कर लिया। प्रतियोगिता का फाइनल आज शाम छह बजे हरियाणा और झारखंड के बीच खेला जायेगा।

खुमार लंपाक हाकी स्टेडियम में रविवार सुबह खेले गये मुकाबले में यूपी की लड़कियां पूरे मैच में प्रतिद्वंदी टीम पर हावी रहीं। मैच के पहले क्वार्टर के चौथे और पांचवें मिनट पर पीताबंरी कुमारी और प्रीति पटेल ने मध्य प्रदेश की रक्षा पंक्ति को तहस नहस करते हुये शानदार फील्ड गोल किये जबकि मैच के 58वें मिनट पर कंचन कुमारी ने एमपी की गोलकीपर कृषा परिहार को चकमा देते हुये तीसरा गोल दाग कर अपनी टीम की जीत की पटकथा लिख दी।

प्रतियोगिता में यूपी की लड़कियों का प्रदर्शन शानदार रहा है। यूपी टीम ने पहले लीग मैच में गुजरात को 21-0 से रौंद कर अपने सफर की शुरूआत की थी जबकि बाद में उसने छत्तीसढ़ को 8-2 से हरा कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनायी, और चंडीगढ को एकतरफा मुकाबले में 5-0 से हरा कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल में यूपी को कड़े संघर्ष में झारखंड से 1-2 से शिकस्त झेलनी पड़ी और उसका खिताब जीतने का सपना चकनाचूर हो गया।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी-20 श्रृंखला के लिये भारतीय टीम घोषित

रोहित और विराट सहित कई बड़े नामों को आराम, राहुल को कप्तानी

नई दिल्ली, 22 मई। राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने दक्षिण अफ्रीका के ख़िलाफ़ आगामी टी20 सीरीज़ के लिए भारतीय टीम की घोषणा कर दी है। टी20 टीम में कप्तान रोहित शर्मा सहित विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह जैसे सीनियर खिलाड़ियों को आराम दिया गया है। केएल राहुल इस टीम की कमान संभालेंगे, जिसमें हार्दिक पांड्या और दिनेश कार्तिक की वापसी हुई है। तेज गेंदबाज उमरान मलिक और अर्शदीप सिंह इस टीम के नए चेहरे हैं। ऋषभ पंत को टी20 टीम का उपकप्तान बनाया गया है।

चोट से उबरने के बाद हार्दिक पांड्या को टीम में शामिल किया गया है। साथ ही आईपीएल में विस्फोटक बल्लेबाज़ी करने के बाद दिनेश कार्तिक को भी टीम में वापिस बुलाया गया है। पंजाब किंग्स के लिये वर्षों से बेहतरीन प्रदर्शन करते आ रहे अर्शदीप सिंह और आईपीएल 2022 में अपनी तेज़ रफ्तार गेंदबाज़ी से सबका ध्यान अपनी ओर खींचने वाले उमरान मलिक को पहला कॉल-अप भेजा गया है।

टीम- केएल राहुल (कप्तान), ऋतुराज गायकवाड़, इशान किशन, दीपक हुड्डा, श्रेयस अय्यर, ऋषभ पंत (उपकप्तान/विकेटकीपर), दिनेश कार्तिक (विकेटकीपर), हार्दिक पांड्या, वेंकटेश अय्यर, युज़वेंद्र चहल, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, भुवनेश्वर कुमार, हर्षल पटेल, आवेश ख़ान, अर्शदीप सिंह, उमरान मलिक।

बहरीन पैरा बैडमिंटन में भारत ने 7 स्वर्ण सहित 23 पदक जीते

मनामा, 22 मई। शीर्ष पैरा शटलर प्रमोद भगत और तरुण ढिल्लों के दो-दो स्वर्ण पदक जीतने के साथ ही भारतीय पैरा बैडमिंटन टीम ने पहली बहरीन पैरा बैडमिंटन अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2022 में सात स्वर्ण सहित 23 पदकों के साथ अपना सफर समाप्त किया। होनहार युगल शटलर मनीषा रामदास ने दो स्वर्ण पदक जीते, जबकि नित्या सेरे सुमति सिवन (डब्ल्यूएस एसएच 6) और धिनगरन पांडुरंगन और शिवराजन सोलाईमलाई (डबल एसएच 6) ने भारत को अन्य पदक दिलाये।

एशिया कप के पहले दिन भिड़ेंगे भारत-पाकिस्तान

जकार्ता, 22 मई। हीरो एशिया कप का मौजूदा चैम्पियन भारत इस बार के अपने एशिया कप की शुरुआत सोमवार को पाकिस्तान के खिलाफ जीबीके एरिना में करेगा। रोमांच से भरपूर पहले दिन में मलेशिया का सामना ओमान से होगा, जो एक पखवाड़े पहले थाईलैंड में अपने एशियाई खेलों के क्वालीफायर की सफलता के बाद आत्मविश्वास से भरे हुए हैं।

एशियाई चैम्पियन्स ट्रॉफी खिताब धारक कोरिया पूल बी मैचों में बांग्लादेश से खेलेगा, जबकि जापान, जो एशियाई खेलों का गत चैंपियन भी है, मेजबान इंडोनेशिया से भिड़ेगा। एशियाई हॉकी महासंघ कैलेंडर में इस टूर्नामेंट के पिछले संस्करण में, जो विश्व कप क्वालीफायर भी है, भारत ने ढ ाका में आयोजित फाइनल में मलेशिया को 2-1 से हराया था। भारत और पाकिस्तान दोनों ने तीन-तीन बार एशिया कप का अपने नाम किया है।

भारत ने अनुभवी कप्तान बीरेंद्र लाकड़ा और उपकप्तान एसवी सुनील के साथ खेलने के लिये एक युवा टीम का चयन किया है। टोक्यो ओलंपिक खेलों में स्टार प्रदर्शन करने वाले सिमरनजीत सिंह लंबी चोट के बाद वापसी कर रहे हैं। टीम को दो बार के ओलंपियन और पूर्व कप्तान सरदार सिंह टीम के साथ कोच के रूप में जुड़ेंगे। पाकिस्तान के खिलाफ अपने शुरुआती मैच की पूर्व संध्या पर बोलते हुए, लाकड़ा और सुनील दोनों ने उच्च दबाव वाले खेल में युवाओं का मार्गदर्शन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सुनील ने कहा, दबाव हमेशा (पाकिस्तान के खिलाफ) होता है।

हार के बावजूद पोंटिंग ने रिषभ पंत का समर्थन किया

मुंबई, 22 मई। मुंबई इंडियन्स के खिलाफ शनिवार का मुकाबला हारकर आईपीएल 2022 से बाहर होने के बावजूद दिल्ली कैपिटल्स के कोच रिकी पोंटिंग ने बतौर कप्तान पंत का समर्थन किया है।

मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में पोंटिंग ने कहा कि मुझे कोई संदेह नहीं है कि, पिछले सीज़न भी, पंत कप्तानी के लिये सही विकल्प थे। जब आप वक्त में पीछे जाकर देखेंगे, श्रेयर (अय्यर) चोटिल हो गये थे और रिषभ ने कप्तानी संभालते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया था। पिछले सीज़न हम अंक तालिका में सबसे ऊपर थे। हम आखिरी दो मैच भले ही हार गये थे, लेकिन मुझे कोई शक नहीं है कि पंत कप्तान के तौर पर सही विकल्प हैं।"

पोंटिंग ने कहा कि वह अभी भी युवा हैं। वह अभी भी कप्तानी के बारे में बहुत कुछ

सीख रहे हैं। एक टी20 टीम का कप्तान होना आसान नहीं है, वह भी आईपीएल जैसी बड़ी लीग में। दुर्भाग्यवश, जब आप इतने बड़े खिलाड़ी होते हैं तो आपके हर फैसले, हर कदम पर सवाल उठाए जाते हैं। इसलिये उन्हें मेरा पूरा समर्थन है, और उम्मीद है कि अगले साल हम फिर एक साथ काम करेंगे। पंत के विपक्षी कप्तान रोहित शर्मा ने भी पंत का समर्थन करते हुए कहा कि वह एक बेहतरीन कप्तान हैं।

रोहित शर्मा ने कहा कि वह एक बेहतरीन कप्तान हैं। कभी-कभी चीज़ें आपके अनुसार नहीं चलतीं। मैं इस स्थिति में रहा हूं और मैं उन्हें अभी यही बता रहा था। कभी-कभी चीज़ें आपकी योजना के अनुसार नहीं होतीं। इसमें कुछ बुराई नहीं है। इस सब से आप बहुत कुछ सीख सकते हैं। रोहित ने कहा कि पंत विकेट के पीछे से खेल को बहुत अच्छी तरह पढ़ ते हैं और ऐसे दबाव वाले टूर्नामेंट में छोटी-मोटी गलतियां होती रहती हैं। उन्होंने कहा कि अपना आत्मविश्वास न खोना बेहद महत्वपूर्ण है। रोहित ने कहा कि पंत आत्मविश्वास वाले खिलाड़ी हैं और अगले सीज़न वह मज़बूत वापसी करेंगे।

मैं पहली बार खराब फॉर्म से नहीं जूझ रहा हूं : रोहित

मुम्बई, 22 मई। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा इस आईपीएल में अपने प्रदर्शन से काफ़ी निराश हैं लेकिन उनका मानना है कि वह जल्द ही वापसी करेंगे। इस सीज़न खेले कुल 14 मुक़ाबलों में वह केवल 19.14 की औसत और 120 के स्ट्राइक रेट से 268 रन ही बना पाए। ऐसा पहली बार हुआ जब आईपीएल के किसी सीज़न में वह एक अर्धशतक तक नहीं बना पाए।

रोहित ने अपनी फ़ॉर्म पर चर्चा करते हुए कहा कि काफ़ी चीज़ें मेरे अनुरूप नहीं गईं। हालांकि यह चीज़ें पहले भी मेरे साथ हो चुकी हैं लिहाज़ा मैं पहली बार इन परिस्थितियों का सामना नहीं कर रहा हूं। मुझे पता है कि क्रिकेट यहां समाप्त नहीं होती अभी आगे काफ़ी क्रिकेट खेलनी है।

मुझे मानसिक पहलू पर थोड़ा काम करने की ज़रूरत है ताकि मैं वापस अपनी लय प्राप्त कर सकूं। मुझे बस थोड़े से समायोजन की

दरकार है और जब भी मुझे खाली समय मिलेगा मैं इस पर काम करूंगा। रोहित की ख़राब फ़ॉर्म का खामियाज़ा टीम को भी भुगतना पड़ा। मुंबई इस सीज़न के पहले आठों मुक़ाबले हार गई। पिछले छह मुक़ाबलों में उन्होंने चार मुक़ाबले ज़रूर अपने नाम किए लेकिन तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। रोहित ने इस सीज़न मुंबई के प्रदर्शन पर बात करते हुए कहा कि यह सीज़न हमारे लिए काफ़ी निराशाजनक रहा, हम सीज़न की शुरुआत में अपनी योजनाओं को धरातल पर नहीं उतार सके। आईपीएल जैसे टूर्नामेंट में आपको मॉमेंटम बनाना पड़ता है।

शुरुआत में हम एक के बाद एक लगातार मुक़ाबले हारते रहे। हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण यह था कि हम योजनाओं को अपने हिसाब से मैदान में लागू करें लेकिन चीज़ें वैसी घटित नहीं हुईं जैसा हम चाहते थे। हालांकि एक नई टीम के साथ ऐसा होता है क्योंकि खिलाड़ियों को अपनी भूमिकओं को समझने में समय लगता है। कुछ खिलाड़ी इस फ्रैंचाइज़ी के लिए पहली बार खेल रहे थे, अपनी राष्ट्रीय, राज्य या दूसरी लीग में वह जो भूमिका निभाते हैं उसके मुक़ाबले यहां उन्हें दूसरी भूमिकाएं दी गई थीं और यही वजह रही कि उन्हें नई भूमिकाओं से तालमेल बनाने में समय लग गया।"

स्वदेशी मार्शल आर्ट कलारीपयट्टू के लिये यूपी की टीम ने कमर कसी

लखनऊ, 22 मई। पंचकूला हरियाणा में आयोजित खेलो इंडिया यूथ गेम्स में स्वदेशी मार्शल आर्ट कलारीपयट्टू के लिये उत्तर प्रदेश टीम के चयन और प्रशिक्षण के लिये तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। चौक स्टेडियम इंडोर हॉल में शिविर का उद्घाटन पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा ने किया। इस अवसर पर केरल से आए कलारीपयट्टू प्रशिक्षक एक्सपर्ट्स व प्रदेश के खिलाड़ियों ने खेल की विभिन्न तलवारबाजी, लाठी, उर्मी जैसी पारंपरिक विधाओं का प्रदर्शन भी किया। यूपी कलारीपयट्टू एसो. के सीईओ प्रवीण गर्ग ने बताया कि तीन दिवसीय शिविर में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये केरल से खेल के एक्सपर्ट श्रीजयन, अनश्वरा, श्रीलक्ष्मी, कीर्थना कृष्ण को बुलाया गया है ताकि प्रदेश की टीम खेलो इंडिया में शानदार प्रदर्शन करते हुए पदक प्राप्त कर देश का नाम रोशन करे।

हरियाणा ने जीता महिला जूनियर हॉकी का खिताब

इंफाल 22 मई। खेल के हर विभाग में झारखंड को 19 साबित करते हुये हरियाणा ने रविवार को 12वीं हाकी इंडिया सब जूनियर महिला हाकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम कर लिया। इससे पहले सुबह के सत्र में उत्तर प्रदेश ने मध्य प्रदेश को 3-0 से हरा कर तीसरा स्थान प्राप्त किया। खुमार लंपाक हाकी स्टेडियम में रविवार शाम खेले गये फाइनल मुकाबले में हरियाणा के खिलाड़ियों ने तालमेल और सूझबूझ के खेल का प्रदर्शन करते हुये झारखंड पर शुरू से ही दबाव बनाना शुरू कर दिया, नतीजन खेल के 13वें मिनट में रिया ने झारखंड की रक्षा पंक्ति को भेदते हुये अपनी टीम के लिये पहला गोल दागा। बाद के क्वार्टर में दोनो ही टीमों ने एक दूसरे पर हमले किये मगर कोई भी टीम इसे गोल में तब्दील नहीं कर सकी। हरियाणा की ओर से दूसरा निर्णायक गोल 39वें मिनट में सेजल ने किया और अपनी टीम को ड्राइविंग सीट पर बैठा दिया। आखिरी के 15 मिनट झारखंड की लड़कियों ने गोल करने का भरपूर प्रयास किया जिसे हरियाणा की चपल रक्षा पंक्ति ने विफल कर दिया और अंततः हरियाणा को चैंपियन बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

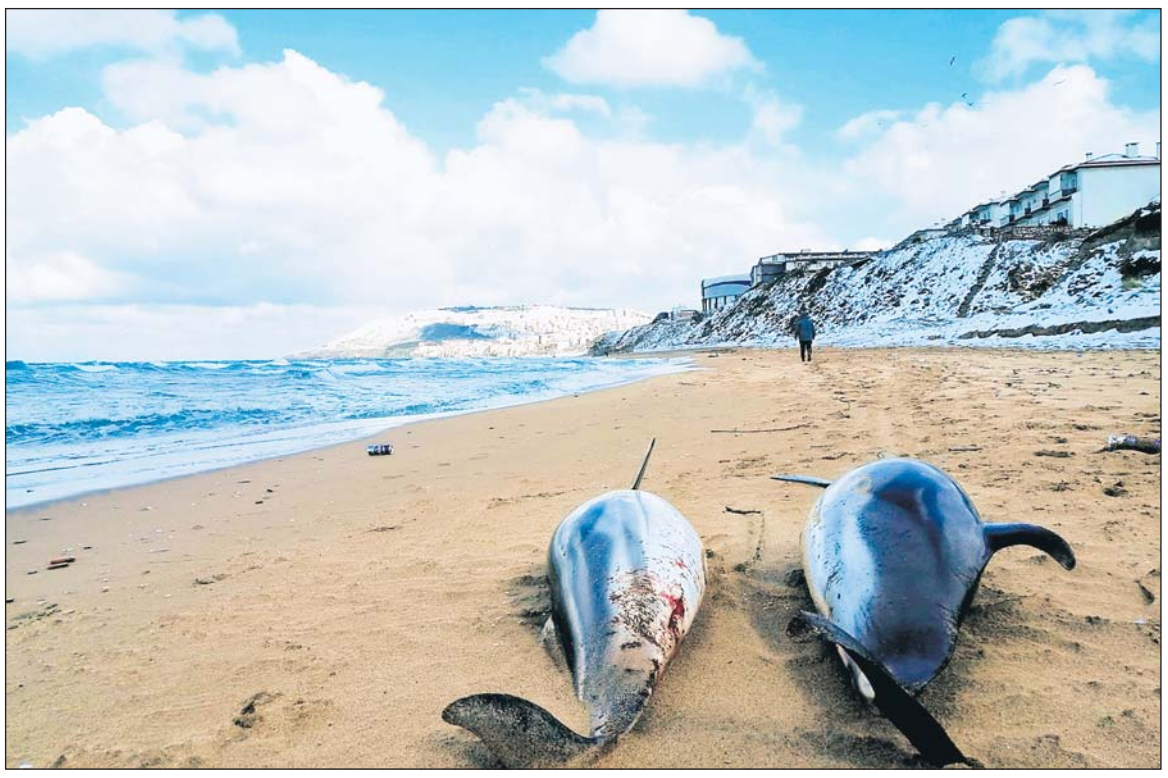

वैज्ञानिकों का कहना है कि हाल ही में ब्लैक सी में डॉल्फिन्स की मौतों में जो बढ़ोतरी हुई है उसका कारण यूक्रेन में चल रहा युद्ध हो सकता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि, नॉर्थ ब्लैक सी में 20 रुसी नौसैनिक जलयानों तथा यूक्रेन में चल रही सैन्य गतिविधियों की वजह से ध्वनि प्रदूषण बहुत अधिक है, जिसके कारण डॉल्फिन्स टर्की तथा बुल्गारिया के समुद्र तटों की ओर जा रही हैं। यहां पहुंचने पर या तो ये असहाय हो जाती हैं या फिर फिशिंग नैट्स में फंस जाती हैं। युद्ध की शुरुआत से, टर्की के ब्लैक सी तट पर कॉमन डॉल्फिन (डैल्फाइनस डैल्फस) फंसने की संख्या में वृद्धि हुई है। टर्की के वैस्टर्न ब्लैक सी कोस्ट पर 80 से अधिक डॉल्फिन मृत पाई गईं। टर्किश मरीन रिसर्च फाउण्डेशन ने इसे "असाधारण वृद्धि" बताया है। फाउन्डेशन द्वारा की गई जाँच में पाया गया कि इनमें से आधी डॉल्फिन्स की मृत्यु मछली पकड़ने वाले जालों में फँस जाने के बाद हुई। फाउन्डेशन के चेयरपर्सन डॉ. बेराम ओज़तुर्क के अनुसार, शेष डॉलफिन की मृत्यु अभी भी एक "अनुत्तरित प्रश्न है, क्योंकि इनके शवों पर फँसाये जाने या गोली मारे जाने के जख्म नहीं पाये गये हैं।" ओज़तुर्क कहते हैं कि, तेज शोर एक संभावना हो सकती है डॉल्फिन्स की मृत्यु की। उन्होंने कहा कि "ब्लैक सी में हमने कभी इतने सारे जहाज और इतने लम्बे समय तक इतना शोर नहीं देखा था पर विज्ञान को प्रमाण चाहिए। हमारे पास प्रमाण नहीं हैं कि कितनी आवृत्ति वाला सोनार ब्लैक सी में है। सोनार, अर्थात साउण्ड नैविगेशन एण्ड रेंजिंग (एस.ओ.एन.ए.आर.) एक टैक्नीक है जिसका इस्तेमाल नौसेनाएं दुश्मन की पनडुब्बियों का दूर से ही पता लगाने के लिए करती हैं। चूंकि समुद्री जीव संचार व अन्य कार्यों के लिए ध्वनियों पर निर्भर करते हैं इसलिए अण्डर वॉटर शोर उन पर गंभीर प्रभाव डालता है। यूक्रेन की नैशनल अकैडमी ऑफ साईन्सेज़ के वैज्ञानिक डॉ. पावेल गोल्डिन कहते हैं कि, स्थायी अण्डरवॉटर शोर से जानवरों की मौत भले ही ना हो पर इससे गंभीर अव्यवस्था फैल सकती है, जो उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। उदाहरण के लिए डॉल्फिन्स व अन्य प्रजातियां अनजाने क्षेत्रों की ओर जा सकती हैं। बुल्गारिया के कंज़र्वेशन संगठन, ग्रीन बाल्कन्स के प्रोजैक्ट मैनेजर दिमितर पोपोव ने भी बुल्गारिया के समुद्र तट पर यह प्रवृति देखी, खासकर ब्लैक सी हारबर पॉरपस (समुद्री जीव) में। वैज्ञानिकों ने चिंता जताई कि "युद्ध में समुद्री जीवों की सुरक्षा का कोई प्रोटोकॉल नहीं है। यहाँ दर्जनों जहाज हैं और हमें नहीं पता कि वे कब तक सोनार तकनीक इस्तेमाल करेंगे।"

राजस्थान की राज्यसभा सीटों के लिए बी.टी.पी.और आर.एल.पी. की भूमिका महत्वपूर्ण

अब तक बी.टी.पी. सरकार के साथ थी लेकिन अब गुजरात में कांग्रेस के खिलाफ वह आप से गठबंधन कर चुकी है

जयपुर, 22 मई (का.प्र.)। राजस्थान में राज्यसभा की चार सीटें आगामी 4 जुलाई को रिक्त होने वाली हैं। इनके लिए चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है और 10 जून को राजस्थान की चारों राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव होने जा रहा है। इन चारों सीटों पर अभी तक भाजपा काबिज थी, 2018 में विधानसभा चुनावों में बदली सत्ता के बाद अब इन चार में से दो सीटों पर कांग्रेस काबिज होने वाली है। एक सीट भाजपा की मानी जा रही है, लेकिन चौथी सीट का गणित उलझ सकता है, क्योंकि भाजपा दो उम्मीदवार उतार सकती है। ऐसे में खेल रोचक हो जाएगा।

- **इधर आर.एल.पी. अब तक भाजपा के साथ थी लेकिन वह भी गठबंधन को छोड़ चुकी है।**
- **दो सीटों पर कांग्रेस, एक पर भाजपा होगी काबिज, चौथी सीट पर दोनों के पास अतिरिक्त वोट, लेकिन जीत के लिए जुगाड़ करना होगा।**

राजस्थान की चार में से एक सीट जीतने के लिए प्रथम वरीयता के 41 वोट चाहिए। इस लिहाज से कांगेस की दो सीटें साफ नजर आ रही हैं। एक सीट भाजपा के खाते में जाएगी, वहीं तीसरी सीट पर कांग्रेस अपने सहयोगी दल और निर्दलीय विधायकों के जरिए जीत दर्ज करने की जुगत में है। जो सीटें खाली होने वाली हैं, उन पर भाजपा के ओम प्रकाश माथुर, के.जे. अल्फोंस, रामकुमार वर्मा, हर्षवर्धन सिंह डूंगरपुर निर्वाचित हुए थे।

प्रदेश में 2018 के सत्ता परिवर्तन होने से पहले राजस्थान की सभी दस की दस सीटें भाजपा के पास थीं। लेकिन सत्ता बदलने के बाद तीन सीटें कांग्रेस के खाते में आ गई। अब इन चुनावों के बाद कांग्रेस की राज्यसभा सीटों की संख्या में इजाफा होगा।

असल में राज्य सभा चुनाव अनुपातिक पद्धति के मुताबिक इस बार चार सीटें रिक्त हैं। इस लिहाज से हर एक प्रत्याशी को जीत के लिए प्रथम वरीयता के 41 वोट चाहिए। असल में राज्यसभा के चुनाव में विधायक हिस्सा लेते हैं।

राज्यसभा के चुनाव फॉर्मूले में विधायकों की कुल संख्या में राज्यसभा की रिक्त सीटों की संख्या और फिर एक जोड़ दिया जाता है। राजस्थान में 200 विधायक हैं इसमें चार रिक्त सीट प्लस एक का भाग दिया जाएगा। इस तरह से यह संख्या 40 आती है जिसमें एक जोड़ा जाता है। इस तरह से 41 वोट चाहिए।

वर्तमान में कांग्रेस के पास खुद के 108 सीटे होने के कारण दो सीटे जीतने के लिए प्रयाप्त 82 वोट हैं। तीसरी सीट के लिए पार्टी के पास 26 वोट बचते हैं। ऐसे में तीसरी सीट जीतने के लिए कांग्रेस के पास 15 वोटों की कमी रहने वाली है। इनमे 13 निर्दलीय हैं, तो राष्ट्रीय लोकदल का एक विधायक सरकार के साथ में है। वहीं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) सरकार के साथ रहेगी, लेकिन अब तक सरकार के साथ रहने वाली बी.टी.पी. गुजरात में आम आदमी पार्टी से हाथ मिला चुकी है। ऐसे में देखना होगा कि क्या राज्य सभा चुनाव में बीटीपी राजस्थान में कांग्रेस के साथ आती है या नहीं। वही भाजपा के पास 71 विधायक हैं। इस लिहाज से एक सीट पर जीत दर्ज हो सकेगी। ऐसे में 1 सीट जीतने के बाद भाजपा के पास 30 वोट बचेंगे लेकिन। बाकी 10 वोट भाजपा कहां से ले पाएगी, यह बहुत मुश्किल सवाल है। क्योंकि अब तक भाजपा के साथ रही आर.एल.पी. भी गठबंधन छोड़ चुकी है। ऐसे में उसके तीन विधायकों के वोट काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सांसद अधीर रंजन का ट्विटर अकाउंट हैक

नई दिल्ली, 22 मई (वार्ता)। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने साउथ एवेन्यू पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है कि उनका ट्विटर अकाउंट को हैक किया गया है और उनकी छवि खराब करने के लिए आपत्तिजनक पोस्ट की जा रही है।

चौधरी ने आज दिल्ली पुलिस को लिखित शिकायत में कहा है कि वह एक राजनीतिक कार्यक्रम में गए थे और उनका मोबाइल उनके साथ नहीं था फिर भी उनके मोबाइल के माध्यम से उनके ट्विटर पर गलत तथ्य पोस्ट किये गए है।

- **अधीर रंजन चौधरी ने दिल्ली पुलिस को लिखित शिकायत में कहा है कि, वे एक राजनीतिक कार्यक्रम में गए थे और उनका मोबाइल उनके साथ नहीं था फिर भी उनके मोबाइल पर ट्विटर मैसेज आ रहे थे।**

उन्होंने इस मामले की साइबर अपराध शाखा से जांच कराने की मांग की है और अपराधियों को गिरफ्तार करने का पुलिस से आग्रह किया है।

इस बीच दिल्ली पुलिस के सूत्रों ने बताया कि उन्होंने चौधरी से कहा है कि जिस मोबाइल फोन से आपत्तिजनक पोस्ट उनके नाम से ट्विटर पर पोस्ट की गई है वह उस फोन को दिल्ली पुलिस को सौंप दें ताकि मामले की जांच आसान हो सके।

देश में करोना के एक के बाद एक दो नये वैरिएंट मिले

भारत में करोना के बी.ए-4 वैरिएंट के बाद अब बी.ए-5 वैरिएंट मिलने की जानकारी सामने आने के बाद चिंता बढ़ने की आशंका

मुंबई, 22 मई (वार्ता)। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 13 मई को समाप्त सप्ताह में लगातार दसवें सप्ताह कम होता हुआ 2.7 अरब डॉलर घटकर 593.3 अरब डॉलर पर आ गया।

इससे पूर्व विदेशी मुद्रा भंडार 6 मई को समाप्त सप्ताह में 1.8 अरब डॉलर कम होकर 595.9 अरब डॉलर, 29 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.7 अरब डॉलर घटकर 597.7 अरब डॉलर, 22 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 3.3 अरब डॉलर लुढ़ककर 600.4 अरब डॉलर, 15 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 31.1 करोड़ डॉलर फिसलकर 603.7 अरब डॉलर, 8 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.5 अरब डॉलर गिरकर 604 अरब डॉलर, 1 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में रिकॉर्ड 11.2 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 606.5 अरब डॉलर पर आ गया।

इसी तरह 25 मार्च को समाप्त सप्ताह में दो अरब डॉलर कम होकर 617.6 अरब डॉलर, 18 मार्च को समाप्त सप्ताह में 2.6 अरब डॉलर घटकर 619.7 अरब डॉलर और 11 मार्च को समाप्त में 9.6 अरब डॉलर लुढ़ककर 622.3 अरब डॉलर रहा था।

- **तमिलनाडु की एक 19 साल की लड़की को कोरोना के बी.ए-4 वैरिएंट से संक्रमित पाया गया है। मरीज में हल्के लक्षण देखे गए और उसे कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज लग चुकी हैं।**
- **इसके अलावा करोना के बीए.5 वैरिएंट का भी एक मामला सामने आया है। यह केस तेलंगाना से आया है। बी.ए-5 से संक्रमित मरीज में भी हल्के लक्षण पाए गए हैं और उसे भी टीके की दोनों डोज लग चुकी है।**

रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 13 मई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 1.3 अरब डॉलर घटकर 529.5 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार 1.2 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 40.6 अरब डॉलर रह गया।

आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार (एस.डी.आर.) 16.5 करोड़ डॉलर की कम होकर 18.2 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) के पास आरक्षित निधि 3.9 करोड़ डॉलर की गिरावट के साथ 4.9 अरब डॉलर रह गई।

लगातार 10वें हफ्ते गिरा देश का विदेशी मुद्रा भण्डार

मुंबई, 22 मई (वार्ता)। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 13 मई को समाप्त सप्ताह में लगातार दसवें सप्ताह कम होता हुआ 2.7 अरब डॉलर घटकर 593.3 अरब डॉलर पर आ गया।

इससे पूर्व विदेशी मुद्रा भंडार 6 मई को समाप्त सप्ताह में 1.8 अरब डॉलर कम होकर 595.9 अरब डॉलर, 29 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.7 अरब डॉलर घटकर 597.7 अरब डॉलर, 22 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 3.3 अरब डॉलर लुढ़ककर 600.4 अरब डॉलर, 15 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 31.1 करोड़ डॉलर फिसलकर 603.7 अरब डॉलर, 8 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में 2.5 अरब डॉलर गिरकर 604 अरब डॉलर, 1 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में रिकॉर्ड 11.2 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 606.5 अरब डॉलर पर आ गया।

- **फॉरेन इंस्टीट्यूशनल इन्वैस्टर बड़ी संख्या में भारत से अपने निवेश की निकासी कर रहे हैं।**

प्रदेश में 3 दिन बाद नए संक्रमितों की संख्या में फिर कमी आई

राज्य में रविवार को 60 नए संक्रमित मिले, जबकि शनिवार को 80 रोगी सामने आए थे

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 22 मई । प्रदेश में तीन दिन की बढ़ोत्तरी के बाद नए करोना संक्रमितों की संख्या में रविवार को फिर थोड़ी कमी आई है। इस दौरान राज्य में 60 नए संक्रमित मिले हैं। हालाकि, इस बीच राज्य में रिकवरी कम होने से एक्टिव केस बढ़कर 480 हो गए हैं।

प्रदेश में रविवार को 12 जिलों में 60 नए करोना संक्रमित मिले हैं। इससे पहले शनिवार को 80 रोगी पाए गए थे। इधर आज राजधानी जयपुर में भी थोड़ी गिरावट के बाद 28 नए मरीज मिले हैं। इसके अलावा बारां में 11, अलवर में 4, अजमेर व बीकानेर में 3-3, दौसा, जोधपुर, कोटा व नागौर में 2-2 तथा झालावाड़, सिरोही और उदयपुर में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

इस बीच 21 जिलों बांसवाड़ा, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जालोर, झुंझुनूं, करौली, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सवाई माधोपुर, सीकर और टोंक में कोई भी नया संक्रमित नहीं मिला है।

प्रदेश में रविवार को भी नए करोना संक्रमितों के मुकाबले रिकवरी कम हुई है। इस बीच राज्य में 58 मरीज ठीक हुए हैं। इसके साथ ही अब तक इस बीमारी से 12 लाख 75 हजार 139 लोग स्वस्थ्य हो चुके हैं। उधर राज्य में करोना संक्रमित 480 मरीजों का इलाज चल रहा है। इनमें 254 रोगी जयपुर जिले में है। राज्य में पिछले चौबीस घंटों में करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालाकि अब तक इस बीमारी से राज्य में 9554 लोगों मृत्यु हो चुकी है।

राजधानी जयपुर में रविवार को 16 स्थानों पर नए करोना संक्रमित मिले हैं। इनमें सबसे ज्यादा 6 नए मरीज वैशाली नगर में पाए गए हैं। इसके अलावा जगतपुरा व सांगानेर में 3-3, बनीपार्क, मालवीय नगर व एम.आई. रोड पर 2-2 तथा आदर्श नगर, सी-स्कीम, चांदपोल, जवाहर नगर, झोटवाड़ा, खातीपुरा, मानसरोवर, प्रताप नगर और सोड़ाला में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

वहीं एक मरीज का पता सही नहीं मिला है। इस बीच जिले में 35 मरीज ठीक हुए हैं।

- **राजधानी जयपुर में भी थोड़ी गिरावट के बाद 28 नए संक्रमित मिले है।**
- **प्रदेश में रिकवरी कम होने से एक्टिव केस बढ़कर 480 हो गए हैं।**

दलित युवक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार सुबह श्रीडूंगरगढ़ मार्ग पर सुबह 10 बजे एक युवक का शव पड़ा मिला था। जेब खंगालने पर मिले आधार कार्ड से मृतक की पहचान लखासर निवासी 34 वर्षीय कुशाल मेघवाल के रूप में हुई है। उसके परिजनों को सूचित करके बुलाया गया। जिसके बाद कुशाल की पुष्टि हो गई। पुलिस का मानना है कि सुबह शव फेंकने से पहले उसकी हत्या कहीं ओर की गई थी। बाद में शव बीच सड़क पर फेंक दिया गया। बीकानेर से पहुंची एफ.एस.एल. की टीम ने शव के आसपास पड़े सामान को कब्जे में लिया। उसके शरीर पर लगी चोट का भी मुआयना किया। शव को श्रीडूंगरगढ़ अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। उधर, मृतक की मौत के बाद से क्षेत्र के लोगों में भारी आक्रोश है। मृतक के परिजन हत्यारों की गिरफ्तारी तक पोस्टमार्टम नहीं करवाने पर अड़े हुए थे बाद में समझाईश के बाद पोस्टमार्टम सहमत हुए।

श्रीडूंगरगढ़ थानाधिकारी वेदपाल ने कहा है कि मृतक के प्राइवेट पार्ट पर त्वचा झुलसने के कारण कट लगा हुआ है। प्राइवेट पार्ट कटा नहीं है डॉक्टर्स ने भी अपनी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में इस आशय की रिपोर्ट दी है।

मामले की जांच शुरू कर दी गई है। कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

मुफ्त एनिमल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस सेवा पर 60 प्रतिशत राशि केंद्र सरकार और 40 प्रतिशत राशि राज्य सरकार उपलब्ध कराएगी। उन्होंने कहा कि इस सेवा के लिय टोल फ्री नंबर होगा और एंबुलेंस जी.पी.एस. प्रणाली से जुड़ा होगा।

राजस्थान राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस का साथ देगी माकपा

नई दिल्ली, 22 मई। राजस्थान की 4 राज्यसभा सीटों पर 10 जून को चुनाव होने है। माकपा के पूर्व महासचिव प्रकाश करात ने संकेत दिया है कि राज्यसभा चुनाव मे उनकी पार्टी कांग्रेस प्रत्याशी का समर्थन करेगी। राजस्थान में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 2 विधायक है।

राजधानी जयपुर में मीडिया से बात करते हुए प्रकाश कारात ने कहा कि उनकी पार्टी की कोशिश रहेगी कि भाजपा का कोई प्रत्याशी न जीते, लेकिन कांग्रेस से भी हमारा कोई गठबंधन नहीं है। करात ने साफ कहा कि राज्यसभा चुनाव में बीजेपी का प्रत्याशी न जीते इसके लिए जो भी कुछ हो सकेगा उसका प्रयास उनकी पार्टी करेगी।

- **अब भाजपा काफी हद तक निर्दलीय विधायकों पर निर्भर रह गई है, दूसरी राज्यसभा सीट पर जीत के लिए।**

प्रकाश करात के बयान से साफ है कि भाजपा प्रत्याशी को हराने की बात आएगी तो राजस्थान में माकपा कांग्रेस को भी समर्थन देगी।

राजस्थान विधानसभा में संख्या बल कांग्रेस के पक्ष में है। कांग्रेस के पास 108 विधायक, भाजपा के पास 71, निर्दलीय 13, आर.एल.पी. 3, बी.टी.पी. 2, माकपा 2 और आर.एल.डी. के पास एक विधायक है। संभावना है कि मौजूदा संख्या बल के हिसाब से कांग्रेस 4 में 3 राज्यसभा की सीट आसानी से जीत जाएगी।

माना जा रहा है कि बीजेपी 4 में से 2 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारेगी। पार्टी कम से कम 2 सीटों पर अपना प्रत्याशी खड़ा कर कांग्रेस को चुनौती देगी।

80 लाख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कट्टों को हटाकर नीचे देखा गया तो वहां भारी मात्रा में डोडा पोस्त भरा हुआ था। वजन कराने पर 2508 किलो डोडा-पोस्त भरा हुआ मिला। डोडा-पोस्त व ट्रक को जब्त कर लिया गया है। वहीं मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

नागौर सी.ओ. विनोद कुमार सीपा ने बताया कि प्रारम्भिक जांच पड़ताल में पता चला है कि ट्रक मालिक जोधपुर का है। मामले में पुलिस टीमें लगाकर पूरे खुलासे और आरोपियों की गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है।

ये कार्रवाई पिछले 10 सालों में नशा तस्करी के खिलाफ की गई नागौर पुलिस की सबसे बड़ी कार्रवाई है।

बंगाल में भाजपा सांसद अर्जुन सिंह तृणमूल में शामिल हुये

कोलकाता, 22 मई। पश्चिम बंगाल में भाजपा को तगड़ा झटका लगा है। बैरकपुर से सांसद अर्जुन सिंह रविवार को घरवापसी करते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की अगुवाई वाली तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए। टी.एम.सी. के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने कोलकाता में उन्हें पार्टी जॉइन कराई।

अब तक बीते 11 महीनों में पांच सांसद तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। बंगाल के बैरकपुर से बीजेपी सांसद अर्जुन सिंह के हालिया ट्वीट्स ने ही उन अटकलों को जन्म दे दिया था कि वह पार्टी से असंतुष्ट चल रहे हैं। अर्जुन सिंह ने हाल ही में पार्टी में सीनियर पद रहने के बाद भी ठीक से काम नहीं करने देने के लिए पश्चिम बंगाल की बीजेपी नेतृत्व की आलोचना की थी। अर्जुन सिंह साल 2001 में टी.एम.सी. से विधायक बनकर विधानसभा पहुंचे। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में वो बीजेपी में शामिल हो गए। पार्टी ने बैरकपुर से टिकट दिया और वो सांसद बन गए। करीब तीन साल बाद वो एक बार फिर अपनी पुरानी पार्टी में चले गए हैं। अर्जुन सिंह के राजनीति जीवन की शुरुआत कांग्रेस पार्टी के साथ हुई थी।

- **बीते 11 महीनों में 5 सांसद भाजपा छोड़ चुके हैं।**
- **अर्जुन सिंह साल 2001 में टीएमसी से विधायक बनकर विधानसभा पहुंचे। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में वो बीजेपी में शामिल हो गए।**
- **एक तरह से अर्जुन सिंह ने भी "घरवापसी" की है।**

'केन्द्र सरकार 15 रु. बढ़ाती है तो 9 रु. कम करती है'

शिवसेना नेता संजय राउत ने कहा कि, पैट्रोल-डीजल के दाम में कटौती के नाम पर जनता की आंखों में धूल झोंक रही है केन्द्र सरकार

नई दिल्ली, 22 मई। केंद्र सरकार ने बीते दिन एक बार फिर पैट्रोल-डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में कटौती की है। इसके बाद राजस्थान और केरल राज्य ने पैट्रोल--डीजल पर वैट घटाया है। वहीं, महाराष्ट्र में तेल की कीमतों में वैट घटाने को लेकर शिवसेना सांसद संजय राउत ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने अभी तक महाराष्ट्र की जी.एस.टी. की रकम लौटाई नहीं है, अगर वह रकम लौटा दे तो हम भी इस संबंध में कुछ करेंगे।

उन्होंने कहा कि हमारे हजारों करोड़ रुपये केंद्र सरकार के ऊपर बकाया हैं। वहीं, उन्होंने यह भी कहा, "पैट्रोल और डीजल की कीमतों को कम करने का फैसला मुख्यमंत्री लेंगे, लेकिन केंद्र सरकार पहले 15 रुपये बढ़ाती है और फिर बाद में 9 रुपये कम करती है। तेल की कीमतों को कम करने की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की ही है।"

वहीं, राउत ने दाउद को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, "40 साल से कितनी सरकार केंद्र में आई और चली गई, सबके मुंह में एक ही नाम है दाऊद। केंद्र सरकार को मालूम है कि दाऊद कहां, किस स्थिति में है, तो पाकिस्तान जाइए और उसे पकड़ कर मुंबई लाइए। वो मुंबई बॉम्ब ब्लास्ट का सबसे बड़ा गुनहगार है।"

उन्होंने कहा, " जिस तरह से अमेरिका ने लादेन को मारा था। उसी तरह से मोदी सरकार को भी दाऊद को पकड़ कर लाना चाहिए। सिर्फ दाऊद- दाऊद करते रहने से कुछ नहीं होगा। संजय राउत ने केंद्र पर यह हमला पत्रकारों के नवाब मलिक और दाऊद इब्राहिम के संबंध में सवाल पर किया।

वहीं, केंद्र की ओर से तेल की कीमतों में राहत देने पर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने राज्यों को तेल पर वैट कम करने की सलाह दी। उन्होंने ट्वीट किया," काफी समय बाद अब केंद्र ने देश में हर तरफ बढ़ती महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी व तनाव आदि की मार से त्रस्त बदहाल जीवन जीने को मजबूर लोगों को पैट्रोल-डीजल के शुल्क में थोड़ी राहत दी है, अब यू.पी. व अन्य राज्यों की जिम्मेदारी बनती है कि वे केंद्र की बात मानकर इन पर तत्काल वैट कम करें।

एक अन्य ट्वीट में उन्होंने लिखा, "इसी प्रकार, अब समय आ गया है कि केंद्र व राज्य सरकारें, राजनीतिक स्वार्थ व आपसी नफा-नुकसान को त्यागते हुए, साथ मिलकर दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही इन राष्ट्रीय समस्याओं पर समुचित ध्यान दें, ताकि यहां आम जनजीवन सामान्य हो सके।" कांग्रेस ने कहा है कि सरकार पैट्रोल, डीजल व रसोई गैस के दाम लगातार बढ़ाकर लाभ कमा रही है और अब दाम घटाकर लोगों की आंख में धूल झोंकने का काम कर रही है। कांग्रेस प्रवक्ता गौरव बल्लव ने रविवार को यहां पार्टी मुख्यालय में विशेष संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सरकार पैट्रोल और डीजल के दाम घटाकर जनता को धोखा देने का काम किया है। सच यह है कि सरकार कीमतें कम करके भी जनता से दोगुना से ज्यादा पैसा वसूल कर रही है और कीमतें घटाने का छलावा किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पैट्रोल पर सरकार ने आठ रुपये और डीजल पर छह रुपए प्रति लीटर की कटौती कर अपने लाभ को दोगुना से कम नहीं होने दिया। उनका कहना था कि यह ठीक उसी तरह की नीति है जैसे कुछ दुकानों पर सेल पर बेची जाने वाली वस्तुओं की कीमत दोगुना करके 50 प्रतिशत कम पर बेचने की बात कर छूट के नाम पर लूट की जाती है।

प्रवक्ता ने कहा कि पेट्रोल डीजल रसोई गैस जिस दाम पर 2014 में थे आज उनकी कीमत लगभग दोगुना है। पिछले 60 दिन से पैट्रोल डीजल पर लगातार बढ़ोतरी की गई है और अब आठ और छह रुपये घटा कर जनता की आंख में धूल झोंकने का काम हुआ है जबकि सरकार इस छूट के बावजूद अब भी पैट्रोल डीजल पर दोगुना लाभ अर्जित कर रही है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908